अपरंच

राजस्थानी भासा अर साहित्य री तिमाही

जुलाई-दिसम्बर 2013

सलाहकार मंडल

मोहन आलोक, गंगानगर

नंद भारद्वाज, जयपुर

डॉ. आईदान सिंह भाटी, जैसलमेर

ओम पुरोहित 'कागद', हनुमानगढ़

डॉ. नीरज दइया, बीकानेर

प्रधान संपादक

पारस अरोड़ा

संपादक

गौतम अरोड़ा

संपादन सैयोग

शंकरसिंह राजपुरोहित, बीकानेर

डॉ. मदन गोपाल लढ़ा, महाजन

प्रह्लाद राय पारीक, हनुमानगढ़

गौरीशंकर, जोधपुर

ओम नागर, कोटा

मुखौळ : **महेन्द्र प्रताप शर्मा** नोहर

रेखाचित्र : **किरण राजपुरोहित 'नितिला'** जोधपुर

अंतरजाळ अंक संचालक : **डॉ. नीरज दइया** बीकानेर

टाइप सैटिंग

प्रिंटिंग हाउस जोधपुर

साज सज्जा : **रमेश व्यास** जोधपुर

सगळा पद अवैतनिक

सदस्यता

अेक अंक रौ मोल : 20 रिपिया

अेक बरस रौ मोल : 70 रिपिया

तीन बरस रौ मोल : 200 रिपिया

आजीवन : 1100 रिपिया

इण अंक रौ मोल : 40 रिपिया

प्रकासक

अपरंच प्रकासण

A-360, सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर 342 005 (राज.)

दूरभास : 0291-2720796, 7877982810, 9413961800

e-mail : apranchrajasthani@gmail.com

web : www.apranch.wordpress.com

विगत

❑संपादक री बात

साहित्यकार री जिम्मेदारी बधगी है
पत्र-पत्रिकावां ई सैयोग करै — *गौतम अरोड़ा* — 3

❑पंचामरत

चेत मांनखा, इंकलाब री आंधी, उछाळौ
माटी थनै बोलणौ पड़सी *(पारस अरोड़ा)* — *रेवतदान चारण* — 5

धुण रे पिंजारा, धरती अब पसवाड़ौ फेरै
धर कूचां, फूलियै री मां *(रवि पुरोहित)* — *गजानन वर्मा* — 10

उडीक रौ गीत, प्रीत बिना क्यांरी जिनगानी, गा लेवूं
पूरौ गीत, कुण के है बौ, बौ ई सागी *(चेतन स्वामी)* — *किशोर कल्पनाकांत* — 15

दिवलौ, कतना दन और ?, कतनी बार मरूं,
अणबांच्या आखर, गीत *(नन्द भारद्वाज)* — *रघुराजसिंह हाड़ा* — 20

बोलै सरणाटौ, थारै लांबा जोडूं हाथ
कठै सूं ऊपजै आ आग, हूणिया *(नन्द भारद्वाज)* — *हरीश भादाणी* — 25

❑लेख

कहाणीकार अशोक जोशी 'क्रांत' — *डॉ. नीरज दइया* — 29

❑काव्य-गोस्ठी

हस्तिनापुर, बासीपण रौ पौधौ, कीं नैनी कवितावां,
फाट्योड़ी पगथळियां, थांरौ पतियारौ — *अशोक जोशी 'क्रांत'* — 35

दादीसा री हवेली, पगडांडियां — *उगमसिंह जागरवाळ* — 36

स्वाद — *डॉ. आईदानसिंह भाटी* — 37

आऊंजी-भाऊंजी को गीत — *अतुल कनक* — 40

गरीबी रा झाड़ — *हरदान हर्ष* — 41

❑अेकल काव्य-पाठ

दरद, कविता, रोटी, बीतियोड़ा बगत में नारी,
आज री नारी — *डॉ. रमेश 'मयंक'* — 42

❑जात्रा-वृत्तांत

म्हारी गोवा जात्रा — *पुष्पलता कश्यप* — 44

❑लघुकथा

जीवण साथी — *उर्मिला माणक गौड़* — 50

❑कहाणी

उदासी रौ कोई रंग कोनी हुवै — *मदन गोपाल लढ़ा* — 52

❑कवितावां

कुंराणा सुपना — *कुमार अजय* — 58

मिनखपणौ, चावना — *दुष्यंत जोशी* — 59

बोली इमरत, बोली ज्हैर — *बिहारी शरण पारीक* — 60

छा बसंत जावतौ — *दीपचन्द सुथार* — 61

❑हिन्दी री लांबी कविता

समरगाथा (राजेश जोशी) — *उल्थाकार : पारस अरोड़ा* — 62

❑समाचार/रपट — *गौरीशंकर निमिवाल* — 99

❑आपरा कागदा सूं — 102

संपादक री बात

साहित्यकार री जिम्मेवारी बधगी है, पत्र-पत्रिकावां ई सैयोग करै

आज प्रदेस अर देस मांय चुनाव रौ माहौल है। लोकतंत्र रै मांय चुनाव रौ अेक ईज ओपतौ उद्देश्य व्है 'जीत'। अबै इण जीत सारू कांई करणौ पड़ै, इणरी कोई सीमा अर वैचारिक प्रतिबद्धता नियत नीं है। इण सारू धरम, व्यक्ति, फासीवाद, जोड़-तोड़, धड़ेबंदी अर झूठ-फरेब रौ ई स्यारौ लेवणौ पड़ै तौ जायज है। अेक बगत हौ जद अेक रेल दुरघटना री जिम्मेवारी लेवता थकां भारत रा पैलड़ा रेल मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री आपरै पद सूं त्यागपत्र देय दियौ हौ अर अबै वौ जुग है जठे राजनेता बयान देवै कै घोटाळै री जांच चल री है- इस्तीफै री जरूरत ही नीं है। फकत आरोप है अर जे घोटाळौ ई करणौ व्है तौ 30-32 करोड़ रौ क्यूं करूं, 200-500 करोड़ सूं कम तौ घोटाळै री श्रेणी मांय ई कोनी। अै सब राजनीति रै मांय मूल्यां रौ ह्रास है, बयानबाजी अर उणरी भासा रौ गिरतौ स्तर राजनीति मांय उपज्योड़ै अहंकार अर गैर जिम्मेवारी रा प्रमाण है।

राजनीति सूं आपां समाज कांनी आवां तौ देखा कै समाज रौ अेक घणौ छोटौ हिस्सौ कै वरग राजनीति रै इण गोरख-धंधै रै मांय है। संस्कृति अर समाज मांय मूल्य अजै भी जीवता है अर वांरी जड़ां गैरी है।

आपां लारलै दोय अंकां मांय साहित्य जगत मांय वैचारिक प्रतिबद्धता, लेखक आंदोलन री जरूरत अर अकादमियां रै राजनीतिकरण री बात करी। लारला दिनां प्रदेस री राजस्थानी भासा, साहित्य अर संस्कृति अकादमी, बीकानेर मांय पुरस्कारां नै लेयनै जकी उठापटक व्है है उणरौ मूळ कारण भी वैचारिक प्रतिबद्धता अर लेखक आंदोलन री कमजोरी अर अकादमी मांय बधती राजनीतिक नियुक्तियां है। अै सैं कीं साहित्यिक राजनेतावां रै मांय मूल्यां रै ह्रास रौ प्रमाण है।

अठै म्हैं आ बात सांपड़तै कर दूं कै जिण तरयां सामाजिक मूल्यां री जड़ां गैरी है, उणी भांत साहित्यिक मूल्यां री जड़ां गैरी है। राजस्थान री संस्कृति अर साहित्य लोक सूं जुड़्योड़ा है अर लोक हमेसा नीति अर मूल्यां रौ पोसक व्है।

आ राजस्थानी साहित्य जगत सारू अेक चिंताजनक अर सरमनाक बात तौ है ईज पण इणनै साहित्यिक मूल्यां रै ह्रास रै रूप में नीं लेयनै साहित्य जगत मांय बधती पुरस्कार लोलुप

संस्कृति अर कुंठित साहित्यिक राजनेतावां रै अहंकार, गैरजिम्मेवारी अर वांरै मांय राजनीतिक नियुक्ति रै कारण राजनीतिक मूल्यां रै ह्रास रै प्रभाव रूप लेवणौ चाईजै। राजस्थानी साहित्य रै मूल्यां री जड़ां गैरी है जिणनै सरबश्री शिवचंद्र भरतिया, गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद', कन्हैयालाल सेठिया, अन्नाराम सुदामा, भूपतिराम साकरिया, हरीश भादाणी, रघुराजसिंह हाड़ा, सांवर दइया, पारस अरोड़ा, ओंकारश्री, मोहन आलोक, नन्द भारद्वाज जैड़ा लोग सींची है।

पण अेक जिम्मेवार साहित्यिक पत्रिका होवता थकां इण पूरै मामलै नै साहित्य जगत रै सांम्ही अेक सवाल रूप राखण री जिम्मेवारी सूं म्हैं खुद नै अळगौ नीं राख सकूं।

साहित्य अकादमी री कार्यकारिणी सभा रौ गठन, उणसूं मिलती सहायतावां, पछै आगीवाण पुरस्कार, युवा लेखक पुरस्कार, अनुवाद पुरस्कार, भासा सम्मान, प्रवासी लेखक सम्मान सै माथै अलग-अलग विरोध रैयौ, पण अनुवाद पुरस्कार रै मामलै रौ कोर्ट तांई पूगणौ अर पछै तीन कार्यकारिणी सदस्यां रौ इस्तीफौ, अकादमी री पूरी कार्यशैली माथै आंगळी उठावै।

हालांकै अठै तीनूं कार्यकारिणी सदस्यां रै इस्तीफै मांय आपस मांय कोई समानता कोनी सिरफ वांरौ काल अेक है पण तीनां रा कारण, पृष्ठभूमि अर चिंतावां न्यारी-न्यारी है। अनुवाद पुरस्कार रा तीनूं निर्णायक अनुवाद रै खेत्र रा ख्यातनांव नाम कोनी। हां, आ बात पूरी प्रक्रिया माथै सवाल खड़ौ करै।

खैर, इण सारू कोरा अध्यक्षजी नै जिम्मेवार ठैरावणौ भी ठीक कोनी। हरेक नै राजी राखणौ- मेंढकां नै तोलण रै मुजब है। औ काम इत्तौ आसान कोनी। पछै अकादमियां मांय आ बंदरबांट अर जोड़-तोड़ भी कोई नुंवी बात कोनी। आ तौ बरसां सूं यूं ईज चालती आयी है अर आगै भी चालैला, इण बार अखबारबाजी अर साहित्यिक राजनेतावां री गैरजिम्मेवारी रै चालतां घणी चवड़ै रूप सांम्ही आई है।

अपरंच, सै जुड़्योड़ा पखां सूं निवेदन करै कै मूंछां नीची राख'र साहित्य-हित मांय इण पूरै मामलै में ठावा निरणै लेय'र राजस्थानी साहित्य जगत नै जगहंसाई सूं बचावौ। अठै साहित्यिक पत्रिकावां भी जिम्मेवार होयनै काम करै।

अबै बात आपरै कागदां री-

आपरा कागद म्हारी हूंस मांय घणौ बधापौ करयौ अर आर्थिक अबखायां व्हेता थकां ई म्हैं अपरंच नै सांतरै रूप राखण री हिम्मत करी है। आदरजोग बी. एल. माली 'अशांत' साब लिख्यौ है कै संपादन टाबरां रौ काम कोनी। आप बजा फरमायौ है, मायत सारू टाबर हमेसा टाबर व्है, आप सांम्ही म्हे हमेस टाबर ईज रैवूंला, पण आस करूं कै आप मायत बण टाबर नै गोडाळियां सूं पगां चालणी सिखावोला अर जरूत मुजब सैयोग भी करोला।

औ अेक छमाही अंक है, अंक री सामग्री आपरै सांम्ही है।

राजस्थानी साहित्य रा थंब श्री विजयदान देथा 'बिज्जी अर अपरंच परिवार रा महताऊ हिस्सा श्री ओंकारश्री अबै आपां रै बिचाळै नीं है, पण वांरौ सिरजण अमर है। अपरंच रौ दोनूं जुगपुरसां नै निवण।

-गौतम अरोड़ा

● *पंचामरत : अेक*

रेवतदान चारण

रेवतदान चारण रौ जलम सन् 1923 में संवत् 1981 री चैत सुदी अेकम रै दिन जोधपुर जिलै रै गांव मथाणिया में हुयौ। सरुआती भणाई मथाणिया में करयां पछै जोधपुर वि.वि. सूं बी.अे., अेल-अेल.बी. करी। सन् 1939 सूं 1947 तांई स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लियौ। आपरी कवितावां जन-जागरण रौ महताऊ काम कियौ। आपरी कवितावां मंच रौ मान बणी अर जनता री जबान चढी। आजादी पछै राजस्थानी भासा नैं सबळी ओळखाण दिरावण वाळा कवियां मांय सूं अेक। आप इत्तै बुलंद स्वर में कविता-पाठ करता कै हजारां री भीड़ में ई माइक री जरूत नीं पड़ती।

आजादी रै पछै ई करसां अर मजूर संगठनां रै हक-हकूक री लड़ाई लड़ी। समाजवादी विचारां सूं जुड़्योड़ा रेवतजी सन् 1960 सूं 1977 तांई मथाणिया रा सरपंच रैया। वकालत रै अलावा गांव में खुद री खेती रौ फारम। रचनाऊ दीठ सूं आपरी तीन पोथ्यां छपी। धरती रा गीत (1951), चेत मांनखा (1957) अर उछाळौ (1989)। उछाळौ नै साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली रौ पुरस्कार मिल्यौ। इणरै अलावा ई केई संस्थावां सूं मान-सनमान अर पुरस्कार मिल्या हा। आपरी कवितावां रौ अंगरेजी में ई अनुवाद व्है चुकौ है। जनकवि रेवतदानजी चारण 17 जून 1997 नै देवलोक सिधारगा।

-पारस अरोड़ा

चेत मांनखा

खेत खड़ण नै हळ ले हाली,
जद करसां री टोळी;
कितरा दिन तक सबर करैला,
माटी हंसनै बोली;
रे बंदा चेत मांनखा चेत, जमांनौ चेतण रौ आयौ!

इण माटी में सौ-सौ पीढी, मरगी भूखी प्यासी;
भाग भरोसै रह्यौ बावळा, प्रीत करी आकासी;

कदै तौ पड़ग्यौ काळ अभागौ, गिण-गिण काढ्यौ दोरौ;
कदै तौ ठाकर लाटौ लाट्यौ, कदै लाटग्यौ बोरौ;
कदै तौ बेरी दावौ पड़ग्यौ, कदै आयगी रोळी;
कितरा दिन तक सबर करैला, माटी हंसनै बोली;
रे बंदा चेत मांनखा चेत,
जमांनौ चेतण रौ आयौ!

मांग्या खेत मिळै नी करसा, मोल चुकाणौ पड़सी;
मोत्यां मूंगी इण धरती रौ, कौल निभाणौ पड़सी;
सांमी छाती जे कोई आयौ, जोर जताणौ पड़सी;
खेत खड़ंतां हळ जे रोक्यौ, हाथ कटाणौ पड़सी;
लोई बिना रंग नीं आवै, धरती पड़गी धौळी;
कितरा दिन तक सबर करैला, माटी हंसनै बोली;
रे बंदा चेत मांनखा चेत,
जमांनौ चेतण रौ आयौ!

❖❖

इंकलाब री आंधी

अंधार घोर आंधी प्रचंड
आ धुंआधोर धंव-धंव करती
आवै है उर में आग लियां
गढ कोटां बंगलां नै ढहती!

बैताळ बतूळौ नाचै है, जिणरै आगै संदेस लियां
राती नै काळी पीळी आ, कुण जांणै कितरा भेख कियां
वै संख बजै सरणाटां रा, कोई गीत मरण रा गावै है
डंकै री चोट करै भींतां, बायरियौ ढोल बजावै है
विकराळ भवानी रमै झूम, धरती सूं अंबर तक चढती
अंधार घोर आंधी प्रचंड, आ धुंआधोर धंव-धंव करती
आवै है उर में आग लियां
गढ कोटां बंगलां नै ढहती!

नींवां रै नीचै दबियोड़ी, जुग-जुग री माटी दै झपटौ
ले उडी किलां नै जड़ामूळ, पसवाड़ौ फेर लियौ पलटौ

तिणकै ज्यूं उडगी तरवारां, गोचै रौ रूप कियौ भालां
रूंखां रै पत्तां ज्यूं उडगी, वै लाज बचावण री ढालां
वा पड़ी उखरड़ी में बोतल, मद पीवण रा प्याला उडग्या
मैफिल रा उडग्या ठाट-बाट, वै महलां रा रखवाळा उडग्या
वै देख जुगां रा सिंघासण, रड़वड़ता पड़िया ठोकर में
वै देख हजारां मुकट आज, उडतोड़ा दीसै अंबर में
वै ऊंधा लटकै अधरबम्ब, नहिं झेलै अम्बर नै धरती
अंधार घोर आंधी प्रचंड, आ धुंआधोर धंव-धंव करती
आवै है उर में आग लियां
गढ कोटां बंगलां नै ढहती!

आंधी आ अजब अनूठी है, डूंगर उडग्या सिल उडी नहीं
सिमरथ वै ढहग्या रंग-महल, हळकी झूंपड़ियां उडी नहीं
उड गयौ नवलखौ हार देख, मिणियां री माळा पड़ी अठै
उड गई चूड़ियां सोनै री, लाखां रौ चुड़लौ उडै कठै
उड गया रेसमी गदरा वै, राली रै रंज नहीं लागी
आ फिरै कांमेतण लड़ाझूम, लखपतणी मरगी लड़थड़ती
अंधार घोर आंधी प्रचंड, आ धुंआधोर धंव-धंव करती
आवै है उर में आग लियां
गढ कोटां बंगलां नै ढहती!

अंधकार मत जाण बावळा, इंकलाब री छाया है
इण भाग बदळिया लाखां रा, केई राजा रंक बणाया है
रे आ वा काळी रात जका, पूनम रौ चांद हंसावै है
रे आ वा वाल्ही मौत जका, मुगती रौ पंथ बतावै है
रे आ वा भोळी हंसी जका, के मरती वेळा आवै है
इण धुंआधार रै आंचळ में, इक जोत जगै है जगमगती
अंधार घोर आंधी प्रचंड, आ धुंआधोर धंव-धंव करती
आवै है उर में आग लियां
गढ कोटां बंगलां नै ढहती!

❖❖

उछाळौ

सज्जो अेक संघठ्ठण पंथ पलट्टण, राज उलट्टण आज बढौ
मन में मिनखापण नैण सुरापण, खांदै खांपण मेल कढौ
तपै अम्बर भांण धरा किरसांण, पसीनै रै पांण'ज पाकत खेती
पण मूंछां रै तांण कियां करड़ांण, बिना घमसांण कोई लाटलै खेती!

ढांणी रै ढांणी अखंडी व्है उच्छब, गाळ कसूंबौ रै ढोल-ढमंक्कै
डंकै री चोट त्रंबाळ घमंक्कै, धरती रा किरसांण धमंक्कै
सज्जो अेक संघठ्ठण पंथ पलट्टण, राज उलट्टण आज बढौ
मन में मिनखापण नैण सुरापण, खांदै खांपण मेल कढौ!

जांणै केहरी गेह सूं आज कढ्यौ, जांणै मेह प्रचंड तूफांन चढ्यौ
जांणै बीज पळापळ मेह चढ्यौ, जांणै तीड धरातळ घेर चढ्यौ
जांणै पंछी झपट्टण बाज चढ्यौ, जांणै बीज कड़क्कत गाज चढ्यौ
सज्जो अेक संघठ्ठण पंथ पलट्टण, राज उलट्टण आज बढौ
मन में मिनखापण नैण सुरापण, खांदै खांपण मेल कढौ!

❖❖

माटी थनै बोलणौ पड़सी

मूंन राखियां मिनख मरैला
धरती नेम तोड़णौ पड़सी
करणौ पड़सी न्याय छेड़लौ
माटी थनै बोलणौ पड़सी।

कुण धरती रौ अंदाता है, कुण धरती रौ धारणहार?
कुण धरती रौ करता-धरता, कुण धरती रै ऊपर भार?
किणरै हाथां खेत-खेत में, लीली खेती पाकै है?
किणरै पांण देस री गाडी, अधबिच आती थाकै है?
कहणौ पड़सी खरौ न खोटौ, सांचौ भेद खोलणौ पड़सी
माटी थनै बोलणौ पड़सी।
मूंन राखियां मिनख मरैला
धरती नेम तोड़णौ पड़सी।

थूं जांणै है पीढी-पीढी, खेत मुलक रा म्हे खड़िया
थूं जांणै है काळ बरस में, भूख मौत सूं म्हे लड़िया
थूं जांणै है सिंघासण में, हीरा-पन्ना म्हे जड़िया
थूं जांणै है कोट-कांगरा, म्हैल माळिया म्हे घड़िया
म्हारी खरी कमाई कितरी, लेखौ थनै जोड़णौ पड़सी
माटी थनै बोलणौ पड़सी।
मूंन राखियां मिनख मरैला
धरती नेम तोड़णौ पड़सी।

आ बात बडेरा कैता हा, धरती वीरां री थाती है
माटी अै करसा झूठा है, यांरी तौ काची छाती है
ठंडी माटी रा मुड़दा है, दिवलै री बुझती बाती है
माटी रा म्हे रंगरेज हां, ज्यां कारण धरती राती है
जे करसा मोल चुकाता व्है तौ, धड़ नै सीस तोलणा पड़सी
माटी थनै बोलणौ पड़सी।
मूंन राखियां मिनख मरैला
धरती नेम तोड़णौ पड़सी।

जद मेह अंधारी रातां में, तूटोड़ी ढांणी चवती ही
तौ मारू रा रंगमैलां में, दारू री मैफिल जमती ही
जद वां ऊनाळू लूआं में, करसै री काया बळती ही
तौ छैलभंवर रै चौबारै, चौपड़ री जाजम ढळती ही
इण भरी कचेड़ी देण गवाही, ऊभा-घड़ी दौड़णौ पड़सी
माटी थनै बोलणौ पड़सी।
मूंन राखियां मिनख मरैला
धरती नेम तोड़णौ पड़सी।

❖❖

आप अपरंच नै सदस्यता शुल्क, विग्यापन अर आजीवन चंदौ नीचै लिख्योड़ै ठिकाणै माथै मनीआर्डर कर सकौ या नीचै बतायै मुजब सीधौ बैंक में जमा करा सको :

श्रीमती हेमा अरोड़ा

A-360, सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर 342 005 (राज.)

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया : खाता सं. 31631771578

रिपिया जमा करा'र 9413961800 फोन माथै सूचना करौ।

● *पंचामरत : दो*

गजानन वर्मा

राजस्थानी गीत अर लोक संगीत नै समरपित जगचावा गीतकार गजानन वर्मा रौ जलम 23 मई, 1926 नै रतनगढ (चूरू) में हुयौ। आपरौ समूचौ जीवन गीत अर लोकसंगीत रै ओळावै राजस्थानी भासा, साहित्य अर संस्कृति नै समरपित रैयौ। शिक्षा अर पत्रकारिता रै मारग धर कूचां धर मजलां बगता पेट रै खाडै नै भरण रै जुगाड़ में आप ग्रामोत्थान विद्यापीठ, संगरिया में जठै अध्यापक रूप टाबरां री संभाळ करी, बठै ई पोथ्यिां सूं सनातनी नातै रै सीगै पुस्तकालय अध्यक्ष रै रूप में ई सेवा दीवी। बाल भारती, बीकानेर अर रामपुरिया बाल निकेतन में ई वर्माजी शिक्षक रूप में छह बरसां लग अलख जगाई। आं ई दिनां आप बाल-रंगमंच री थरपणा ई करी।

बीकानेर सूं प्रकाशित 'नई चेतना' पत्रिका रौ संपादन कारज ई आपरी श्रीकीर्ति नै बधायौ। राजस्थान इप्टा रा आप संस्थापक सचिव ई रैया। पुतळीघर नाट्य संस्थान, नई दिल्ली रा संस्थापक संचालक रैवता थकां आप अमरसिंह राठौड़ नाटक ई सिरज्यौ, जिकै नै अखिल भारतीय प्रतियोगिता में सिरै पुरस्कार सूं आदरीज्यौ।

राजस्थानी री नेन्ही फिलम 'हळदी रौ रंग सुरंग' रौ लेखन कारज नवै मूल्यां री सिरजण री साख भरै, तौ राजस्थान साहित्य अकादमी अर संगीत नाटक अकादमी रा सदस्य रैवता थकां आपरी सेवावां री साख आज आखौ राजस्थानी समाज देवै। राजस्थानी भासा, साहित्य, संस्कृति, कला अर नाट्य री केई संस्थावां सूं आपरौ जुड़ाव रैयौ। अेच.अेम.वी. ग्रामोफोन कंपनी आपरै केई गीतां रा कैसेट्स ई आमजन तांई पूगता करया। वीणा कैसेट्स ई आपरै गीतां री अेक सी.डी. 'बाजरै री रोटी' नांव सूं जारी करी।

घूघरां रा बोल, चौमासा, बारहमासा, सुहागरात, मीरां बाई आद केई निरत नाटकां रौ लेखन, निरदेसन अर संगीत निरदेसन ई आपरै सुधी ग्यान धकै जस पायौ। कवि-सम्मेलनां में तौ आप मंच-लुटेरा कवि रैया है, सागै ई आजादी परब माथै दिल्ली रै कवि सम्मेलनां मांय भी राजस्थानी रौ परचम फहरायौ। 'झांसी री राणी' अर 'सुण दिखणादी बादळी' जैड़ा गीत आज ई लोगां रै होठां तिरस जगावै। आपनै देस-प्रदेस री केई संस्थावां सूं पुरस्कार सम्मान ई मिल्या। लोकगीतां सारू केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, राजस्थानी भासा, साहित्य अर संस्कृति अकादमी सूं मांन-पांनै सूं आदरीज्या। इणी भांत मीरां स्मृति संस्थान चित्तौड़गढ़, हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, राव बीकाजी संस्थान बीकानेर आद केई-केई संस्थावां सूं आदर-सम्मान ई करीज्यौ।

आपरी छपी थकी पोथियां में : हिंदी गीत संग्रह (स्पंदन), धरती री धुन, सोनौ निपजै रेत में, बारहमासा, चौमासा, हेलो मार सुण सिणगार, हळदी रौ रंग सुरंग आद खास है। 'बाजरै री रोटी' नांव सूं वीणा कैसेट्स सूं जारी वांरी गीत-सीडी घणी चावी हुयी। आपरी 'पगड़ी' कविता री सीडी री योजना ई बण्योड़ी ही पण काळ री गति कुण ढाबै ? अमर गीतकार वर्माजी रौ हंसलौ 17 मई, 2012 नै वांरी देही रौ सागौ छोड दियौ। लोकमन रै कुशल चितेरै नै शत-शत निवण।

-रवि पुरोहित

धुण रे पिंजारा

धुण! धुणक धुण धुण
धुणक धुण धुण रे पिंजारा, रुई पिंजारा धुण!
धुणक धुण, रुई पिंजारा धुण!
सोनै रौ थारौ बण्यौ पींजणौ, रूपे री है तांत
तुणक तुण तुण
धुणक धुण धुण रे पिंजारा, रुई पिंजारा धुण!

पोह रौ पाळौ पड़ण लागग्यौ, स्रम सूं मुंह मत मोड़
डांफर बाजै मांणस कांपै, भरौ रजाई सोड़
भोळिया सुण!
धुणक धुण धुण रे पिंजारा, रुई पिंजारा धुण!

आली-गीली ल्याव कामड़ी, रुई काकड़ खावै
कामचोर कद जीवै जमीं पर, अड़क मौत मर जावै
बता कुण कुण?
धुणक धुण धुण रे पिंजारा, रुई पिंजारा धुण!

मिनखां में तूं मिनख अेकलौ, हिम्मत मन ना हार
सात्यूं सुर तैरै अेक तार में, धरती नै सिणगार
कांम नै गुण!
धुणक धुण धुण रे पिंजारा, रुई पिंजारा धुण!

चन्नण रौ थारौ बण्यौ पींजणौ, रेसम री है तांत
तुणक तुण तुण
धुणक धुण धुण रे पिंजारा, रूई पिंजारा धुण!

धरती अब पसवाड़ौ फेरै

काळी-पीळी आंधी आई, खंख चढी असमान रे
धरती अब पसवाड़ौ फेरै, जाग मजूर-किसान रे

कुदरत लाल गुलाल उडावै, पंछी गीत सुणावै रे
मेड़ी बोलै आज मोरिया, बादळ ढोल घुरावै रे
तरवर झुक-झुक मुजरो लेवै, अन्नदाता भगवान रे
धरती अब पसवाड़ौ फेरै, जाग मजूर-किसान रे

हरियल थारा खेत खड़्या है, ढांढा चर-चर जावै रे
इमरत भरिया अड़क मतीरा, आज गादड़ा खावै रे
चेत बावळा चोर लुटेरा, लूटै है धन-धान रे
धरती अब पसवाड़ौ फेरै, जाग मजूर-किसान रे

मंड में बोलै आज लूंकड़ा, सौ-सौ छैन दिखावै रे
बोड-बिलायां फिरै कूकती, भोळा मिनख डरावै रे
धरती रै बैरयां नै स्याणा, बेगौ आज पिछाण रे
धरती अब पसवाड़ौ फेरै, जाग मजूर-किसान रे

छोटौ धान बडौ है दुसमण, आज कातरौ खावै रे
टीडी-फाकौ नुंवै धान नै, देख-देख ललचावै रे
बैरयां नैं धरती में गाडौ, खाई खोद खदान रे
धरती अब पसवाड़ौ फेरै, जाग मजूर-किसान रे

रोज रुखाळ पूंजळी बाळद, आज ठगां री आवै रे
आंधा पीसै आज जमीं पर, बहरा मौज उडावै रे
खोटण ले लै हाथ भायला, बांध झूंपड़ा-छान रे
धरती अब पसवाड़ौ फेरै, जाग मजूर-किसान रे

❖❖

धर कूचां

उठ भाई फूसा फूस बुहार, धर कूचां भाई धर मजलां
अळी-गळी करदे गुलजार, धर कूचां भाई धर मजलां

धरती ऊपर पड़्यौ कूटळौ, मिनखादेही लाजै
स्वारथ गेल बावळी दुनियां, बेगी-बेगी भाजै
फुरसत मिलै न यार, धर कूचां भाई धर मजलां
उठ भाई फूसा फूस बुहार, धर कूचां भाई धर मजलां
झाड़ू ल्या साचौ हथियार, धर कूचां भाई धर मजलां

ऊंच-नीच रौ लोग लगावै, हियै न राखै लाड
अै सगळा मिनखां रा बैरी, गैर परै-सी गाड-
न धरती नै दरकार, धर कूचां भाई धर मजलां
उठ भाई फूसा फूस बुहार, धर कूचां भाई धर मजलां
ल्याव फावड़ौ कुळ सिणगार, धर कूचां भाई धर मजलां

जात-पांत रौ लियां घेसळौ, फिरै माधिया भाई
चौड़ै-धाड़ै ठग बण बैठ्या, रापा-रोळ मचाई-
झूठा साहूकार, धर मजलां भाई धर कूचां
उठ भाई फूसा फूस बुहार, धर कूचां भाई धर मजलां
ल्या दंताळी आ मोट्यार, धर कूचां भाई धर मजलां

थे धरती रा पूत लाडला, साची कहतां हरखां
मिणत-मजूरी खरी कसौटी, आता-जाता परखां-
थे हौ कांमणगार, धर कूचां भाई धर मजलां
उठ भाई फूसा फूस बुहार, धर कूचां भाई धर मजलां
कुटम-कबीलौ आज सुधार, धर कूचां भाई धर मजलां

❖❖

फूलियै री मा

तनै टेवटौ घड़ाद्यूं
तनै पैजणी पहरादयूं
तनै बाजूबंध ल्यादयू, मैंरै फूलियै री मा
नागौरी-बळदां नै बेगी पांणी पाय'र ल्या

तनै कांगसी मंगादयूं
तनै आटी-डोरा ल्यादयूं
माथै हींगळू लगादयूं, मैंरै फूलियै री मा
करां हळसोतियौ तूं छाक लेय'र आ

तनै अंगरखी सिंवाद्यूं
तनै कांचळी मंगाद्यूं
तनै घाघरौ रंगाद्यूं
पीळो पोमचौ बंधाद्यूं
ऊपर मोरिया छपाद्यूं, मेंरै फूलियै री मा
कसिया-गंडासी मेंरै हाथ देती जा

तनै बिछिया घड़ाद्यूं
दांतां चूप चिमकाद्यूं
मोत्यां बोरलौ जड़ाद्यूं मेंरै फूलियै री मा
नागौरी-बळदां नै बेगी पांणी पाय'र ल्या

तनै टेवटौ घड़ाद्यूं
तनै पैजणी पहराद्यूं
तनै बाजूबंध ल्यादयू, मेंरै फूलियै री मा
नागौरी-बळदां नै बेगी पांणी पाय'र ल्या

❖❖

राजस्थानी साहित्यिक तिमाही पत्रिका

राजस्थानी गंगा

संपादक : डॉ. किरण नाहटा, डॉ. गिरिजाशंकर शर्मा

मोल : अेक प्रति 15 रिपिया, सालीणा : 60 रिपिया

प्रकासक : **राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान**

द्वारा हिंदी विश्वभारती अनुसंधान परिषद्, नागरी भंडार, बीकानेर 334001

राजस्थानी री मासिक पत्रिका

जागती जोत

संपादक : रवि पुरोहित

मोल : अेक प्रति 10 रिपिया, सालीणा : 120 रिपिया

प्रकासक : **राजस्थानी भासा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर**

करमीसर रोड

मुरलीधर व्यास कॉलोनी, बीकानेर-4

● *पंचामरत : तीन*

किशोर कल्पनाकांत

बाळपणै रौ नांव- नंदकिशोर, पण समझ अपड़तां ई कल्पना रौ धणियाप करता-करता किशोर कल्पनाकांत बणग्या। आखी उमर 'कल्पना' नै सिरजण रौ आधार देवण मतै ई गुजार दिन्ही। इसड़ा सुक्यारथी इण भोम माथै कम जामै। जलम री तिथ सावण सुदी दसमी, संवत् 1987 रै मुजब 4 अगस्त 1930 है।

राजस्थानी भासा-साहित्य रा पुरोधा किशोरजी नैनी बाळवय मांय ई साहित्य-सिरजण रै गेलै उतरग्या, पछै तौ लारै मुड़नै जोयौ ई नीं। 'निर्याम', 'सागर', 'ओळमों' आद छापां रै संपादण सूं संपादक रूप खासा ख्यांतीला अर बाजींदा होया। भांत-भांत रौ काव्य-सिरजण कर अजस्र भाव धारा रा लूंठा कवि होवण रौ विड़द पायौ। बियां तौ साहित्य री लगै-टगै सैंग विधावां मांय पारंगत हा आप। लगोलग छह दसक तांई साहित्य सिरजण करयौ। हेलौ, मानखौ हेला मारै, सुण सिणगार, कूख पड़यै री पीड़, कुण के है बौ, निवण-निवण शिव, मरवण तार बजा, देखै जिसी चितारै अर किशोर गीता आपरी ठावी काव्य-कृतियां है। 'गीतां रौ बांवळियौ' अेक कहाणी संकलण त्यार। दस बारै देसी-विदेसी लिखारां री पोथ्यां रा ओपता अनुवाद ई करया। कोई चाळीस सूं बत्ती संस्थावां सूं सनमान-पुरस्कार आद सूं आदरिज्योड़ा। साहित्य जगत रा प्रेरणा-पुरख किशोरजी इतरा मनगरू हा कै हर कोई बांरौ सनमांन अर इज्जत करतौ।

कीं बरसां री मांदगी पछै 6 फरवरी 2002 रै दिन आप सुरगां सिधायग्या। राजस्थानी साहित्य जगत सारू बै आपरा घणमोला ग्रंथ अर 'ओळमों' जियांकली चावी पत्रिका री धरोड़ छोड 'र गया।

-चेतन स्वामी

उडीक रौ गीत

बरस बादळी, बरस बावळी! मोद मनावां अे
तूं बरसै तौ म्हे सगळा रळ, मंगळ गावां अे

उडीकै चातकड़ौ दो छांट, इनरिया कद बरसासी रे
उडीकै धोरां तपती धूळ, बादळ कद धुपवासी दे'

उडीकै पंछीड़ां रा नैण, मेवला बरस्यां सरसी रे
उडीकै, खेत खड़्या करसां री झोळी कद तूं भरसी रे
बरस घटा, घिर उमट-घुमट, म्हे अन निपजावां अे
तूं बरसै तौ म्हे सगळा रळ, मंगळ गावां अे।

टहूकै मोरूया हेला मार, कळायण तूं कद आसी अे
बणां में हिरणियां री आंख, बावळ घणी उदासी अे
खड़्या रोही में सूखा ठूंठ, बिचारा लेय उबासी अे
उडीकै ओढण हरियळ पाग, बादळी कद बंधवासी अे
उडीकै रीता डाबर डै'र, बरस म्हे भर-भर जावां अे
तूं बरसै तौ म्हे सगळा रळ, मंगळ गावां अे।

सुंवारै खेतां-मांहली भोम, सजीवण बीज उगावण अे
हरखती किन्यावां रौ कोड, उंगेरयौ घर-घर सावण अे
जुझारू ऊभा काटण सीस, काळ रौ ऊभौ रावण अे
कळायण, बरस्यां औ संसार, बणै आछौ मनभावण अे
बाजारौ-मोठ-मतीरा, ग्वार-काचरा-फळी उगावां अे
तूं बरसै तौ म्हे सगळा रळ, मंगळ गावां अे।

❖❖

प्रीत बिना क्यांरी जिनगानी

प्रीत बिना क्यांरी जिनगानी
अैळी जावै उमर जुवानी।

होठ फरूकै बोल न पावै
मन री मन में ई रह जावै
गीत बिना क्यांरी जिनगानी
जीवै गुपचुप छानी-मानी
प्रीत बिना क्यांरी जिनगानी

मन री चींत बतावै किणनै
तन रौ बींत बिंतावै किणनै
मीत बिना क्यांरी जिनगानी
मरम कियां जाणै नादानी
प्रीत बिना क्यांरी जिनगानी

जूण-जुध है इबछळ यारौ
जग रौ तौ ऊंधौ ई धारौ
जीत बिना क्यांरी जिनगानी
हार्‌यां कुण करै मिजमानी
प्रीत बिना क्यांरी जिनगानी

❖❖

गा लेवूं पूरौ गीत

अधबिच में छोड'र बात, इयां मत जावौ
गा लेवूं पूरौ गीत, प्राण! थम जावौ।

ओजूं तौ ढायी आखर ई कथ न सक्यौ हूं पूरा
मन री मन में कद तक राखूं? है अरमान अधूरा
निभ तौ जावणद्यौ रीत, प्राण! थम जावौ
अधबिच में छोड'र बात, इयां मत जावौ।

कितरी मनवारां कर गावूं अेकर सुणल्यौ मन री
नैनी-सी है बात प्यारी, पण है घणा जतन री
इतरा दिन अणसुणी करी पण आज सुण्यां ई सरसी
पीड़ायीजी परतीत, प्राण! थम जावौ
अधबिच में छोड'र बात, इयां मत जावौ।

सात्यूं-सुर तौ खड़्या अमूझै राग झुरै अणगायां
भासा में बंध सकी न ओजूं प्यार तणी आ माया
किस्यै आसरै कथूं खड़्या है ढायी आखर गूंगा
अणबोल्यौ है संगीत, प्राण! थम जावौ
अधबिच में छोड'र बात, इयां मत जावौ।

सूळी उपरां जूण चढ्योड़ी, प्रीत चढी परवाणै
रसणा, रचना गीत उंगेरै पीड़ा नै पितवाणै
आज नहीं अणगायौ रैसी, रूं-रूं बोल उचारै
हेला मारै मनमीत, प्राण! थम जावौ
अधबिच में छोड'र बात, इयां मत जावौ।

कुण के है बौ ?

किणनै बूंझूं? कुण समझावै?
जिकौ रात-दिन च्हैन दिखावै
कुण के है बौ?

कांई है'र कठै सूं आवै?
कुण प्रेरै, फुरकावै गावै?
मनड़ौ क्यां सारू उकसावै?
केठा क्यूं न समझ में आवै?
कुण के है बौ?

पात झरै मन रूंख तणा क्यूं?
पाछा उलरै जण-कणा क्यूं?
पैलौ, प्राण बायरौ के है?
हालै-चालै बौ कुण के है?
क्यां सारू, के करै-करावै?
कुण के है बौ?

करणी के'र कठै सूं आयी?
कुण? वाणी नै क्यूं उचरायी?
कुण है जिकौ नैण री दीठी?
कुण उंगेर दी बातां मीठी?
उणनै कुण अरथा'र बतावै?
कुण के है बौ?

❖❖

बौ ई सागी

बौ तौ बौ रौ बौ ई सागी!
जाणणियौ बाजै बडभागी

प्राणां तणौ प्राण है बौ ई
सगळी ओळखाण है बौ ई

वाणी-तणी जिकौ है वाणी
बौ ई बौ तौ है साच्याणी
बौ मन रौ मन जोगी-जागी
बौ तौ बौ रौ बौ ई सागी।

कानां तणौ कान है बौ ई
सांभळ! महागान है बौ ई
नैणां तणौ नैण जाणलै
इण परवाणै तूं पिछाणलै
बौ त्यागी, भोगी, अनुरागी
बौ तौ बौ रौ बौ ई सागी।

जाणणियै रा है पौबारा
नीं जाण्यां तूं जलम दुबारा
जाण्यां मरै नीं जामै कोई
अणजाण्यौ बण जावै बौ ई
नीं जाणणियौ है निरभागी
बौ तौ बौ रौ बौ ई सागी।

❖❖

पारिवारिक राजस्थानी मासिक

माणक

संपादक : पदम मेहता

मोल : अेक प्रति 20 रिपिया, सालीणा : 201 रिपिया, आजीवण : 2101 रिपिया

प्रकासक

माणक प्रकासण

मानजी रौ हत्थौ, पावटा, जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थानी रौ सालीणौ छापौ

बिणजारौ

संपादक : नागराज शर्मा

प्रकासक

बिणजारो प्रकासण

पिलानी

जिला : झुंझुनूं (राजस्थान) 333031

रघुराजसिंह हाड़ा

हाड़ौती अंचल रा चावा अर मोवणा गीतकार रघुराजसिंह हाड़ा, आधुनिक राजस्थानी कविता में आपरी न्यारी ओळख राखै। 31 मार्च 1933 नै झालावाड़ जिलै रै चमलासा गांव में जलम्या रघुराजसिंहजी आपरी जवानी रा दिनां में राजस्थानी मंच पर जबरौ नांव कमायौ। वै मुलक रा तमाम बडा नगरां अर हलकां में कवि-सम्मेलनां में आव-आदर सूं बुलाईजता रह्या अर वां आपरा मोवणां गीतां सूं राजस्थानी कविता री जोत नै पूरै गुमेज सूं जगायां राखी। वांरा गीतां में राजस्थानी लोकजीवण री अबखायां, पारिवारिक रिस्तां री हिंवळास अर ओपमा रै साथै लोक-संस्कृति अर कुदरत रै मनोरम सरूप री अेक निरवाळी छिब देखण नै मिळै। वांरी काव्य-भासा में हाड़ौती री आंचलिक मिठास पण निरवाळी खासियत मानीजै।

रघुराजसिंहजी 34 बरसां तांई राजस्थान रै शिक्षा विभाग में अेक शिक्षक अर प्रौढ शिक्षा अधिकारी रै रूप में लोकसेवा री लूंठी जिम्मेवारी निभाई अर इणी सेवाकाळ रै दरम्यान मुलक रा काव्य-मंचां माथै अेक चावै गीतकार रै रूप में आछौ नांव कमायौ। वांरी राजस्थानी काव्य-पोथियां में 'अणबांच्या आखर', 'घूघरा', 'फूल केसूला फूल', 'हरबोलौ' अर 'हरदौल' घणी चावी अर चरचा में रही। राजस्थानी रै साथै हिंदी में ई वांरी केई पोथ्यां छपी अर खास चरचा में रही। वांरी साहित्य सेवा अर राजस्थानी में खास योगदान सारू वांनै राजस्थानी समाज, मुलक री केई ठावी साहित्य संस्थावां, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर अर राजस्थानी भासा, साहित्य अर संस्कृति अकादमी, बीकानेर कांनी सूं मांण-सम्मान ई बरोबर मिळता रैया।

-नन्द भारद्वाज

दिवलौ

हिवड़ा उमग्या, गीत गूंजग्या, हरख चढ्यौ छै थ्वार कौ।
कितनी देर उजाळो देगौ, दिवलौ काची गार कौ?

जगमग करै झरोखा, घी का दिया करै संचांदणौ,
झूंपड़ियां मं मावस रोवै, भरै निसासां आंगणौ
महंगा मोलां हांसी आवै, गेलौ रुज्यौ उधार कौ।
दिवलौ काची गार कौ?

ईं कोणा मं करी दिवाळी, ऊ कोणौ अंधेरग्यौ,
तन ढांक्यौ तौ सीस उघड़ग्यौ, जग ओळंबौ दे'रग्यो,
जुड़ै न ईं मं अरे थेकळौ, आंचळ झीणा तार कौ
दिवलौ काची गार कौ?

कोरी रूई सुळग रही, पड़तां ईं रमग्यो तेल रे,
परथम पासो ऊंळो पड़ग्यो, रीत निभाई खेल रे,
मन की चींती सूं जुड़ग्यो, जाणै गठजोड़ौ हार कौ
दिवलौ काची गार कौ?

हाट, हथाई, पोळ, पणघटां, हींडां हाथ पसारती,
महनत को परताप दिवाळी, लिछमी ले रही आरती,
धन पर जोत निछावर होगी, रोवै चाक कुम्हार कौ।
दिवलौ काची गार कौ?

आसा कै चौराहे बैठी, ले सांसां कौ सायरौ,
हेत उजाळौ करै, बुझातौ चालै छळकौ बायरौ,
झरतै नैणां चौक पुरायौ, सूंण साध घरबार कौ।
कितनी देर उजाळो देगौ, दिवलौ काची गार कौ?

❖❖

कतना दन और?

कतना दन और? अस्यां कतना दन और?
तासां का ताजमहल, ये भींतां रेत की,
ब्याळूं की बेरां, कोरी बातां खेत की,
यौ नटबौ बेबस–
ये खाटा अर अधपाक्या बोर! कतना दन और?

हांडी पै जाळा क्यूं पूरै छै मांकड़्यां,
चूल्हा की पांती में धूं देती लाकड़्यां,
भूखा ही बैठ्यौ रै–
भोळा टाबर मूंडा धो'र! कतना दन और?

पाताळां पाणी की आडी झुक झांकबौ,
मिठबोलां मेघां कौ, डूंगरिया डांकबौ,
भाटौ ज्यूं-कौ-ज्यूं-
पण घसगी या ऊमर की डोर! कतना दन और?

छांनै सै जा झांकै, सूरज भंडार में,
कोई की अंगणाई, तड़पै अंधार में,
मिनखां ई रहणौ छै-
कतना दन बण गूंगा ढोर? कतना दन और?

आऔ चूरौ पाड़ां, ईं बादळ महल में,
तणग्यौ क्यूं राखौ छौ, रूई का फहल में,
यौ खटकौ मटज्या-
पण चाहीजै झटका में जोर! कतना दन और?
कतना दन और? अस्यां कतना दन और?

❖❖

कतनी बार मरूं

कतनी बार मरूं, म्हूं कतनी बार मरूं?
उगता सूरज ज्यूं उठ, पाछी कतनी बार गरूं?

जद जनमूं जद वाही पीड़ा,
वै का वै नरकां का कीड़ा,
ऊही ढोबौ बोझ टनां कौ, कुण पै भार धरूं?
म्हूं कतनी बार मरूं?

या चौमेरूं फीकी हांसी,
झूंठा अपणापण की फांसी,
सैं संझ्या चमनी कौ बझबौ, कतनी बार डरूं?
म्हूं कतनी बार मरूं?

दौड़ा-दौड़ मचाता सावा,
मिंदरां-मिंदरां तपता आवा,

काची मटकी बेच ठगोरी, कतनी बार करूं?
म्हूं कतनी बार मरूं?

जे मांगै मीठी मनवारां,
नैणां-नैणां मद की धारां,
बेसोरम बण-बण केसूलौ, कतनी बार झरूं?
म्हूं कतनी बार मरूं?

❖❖

अणबांच्या आखर

उडता पंखेरू मांडै आखर गगन पै,
गूंगी धरा पै कोई बांचै न बोलै रे।
झालौ देवौ रे झीणै घूंघट कळियां,
आंधौ मुलक, कोई हांसै न हालै रे।
गूंगी धरा पै....

पीड़ा हेलौ देवै, कोई बात न बूझै रे,
प्रीत की बावरी पळक नहीं पूछै रे।
दमना जे दीखै वै पराया सबका ही रे,
देळ बिसवासै धणी द्वार न खोलै रे।
गूंगी धरा पै....

पतझड़ कद आयौ अर कद चलग्यौ,
आमौ कद मोर आयौ अर कद फळग्यौ,
अब कै बसंत में कदेक बोली कोयल,
कुण विरहण हाय बैठी न हिंडोळै रे।
गूंगी धरा पै....

बायरा गावै छै रे कै नसास ढाळै छै,
सूरज बाळै छै रे कै जगत उजाळै छै,
नाचै छै ये झरणां कै भटकै छै दर-दर,
न्हावै तो छै यां में कोई मन झकोळै रे।
गूंगी धरा पै....

अपणां ही सुर में अपणां गीत गावणां,
अपणी ही रामकथा मुलक सुणावणां,
बोझ तौ ऊमर कौ ढोवै छै सारी दुनियां,
हेत कौ कळस बोझ्यां मर-मर डोलै रे।
गूंगी धरा पै....

❖❖

गीत

सारा आंसू पीग्यौ ऊमर कौ रेतीलौ तीर रे,
तौ भी नहीं धुपी यादां की या धुंधळी लकीर रे।

उघड़ी मिली म्हांनै पगथळियां गेला पै चौराया पै,
हाल घड़ी उठ चल्या अस्या सैनाण मिल्या हर छाया पै,
आसा का म्रिगजळ कै पाछै भटकै मन की पीर रे।

कदी नहीं आया म्हारै आंगण तौ तुळसी पूजबा,
सापनां कै द्वारै भी आतां वै पग लागै धूजबा,
नीं मिंदर में मिलै न मूंडा सूं बोलै तसबीर रे।

कद की कोई बेल चमेली हाल न आया फूल रे,
कद का म्हारी पून्यूं ऊपर रह्या बादळा झूल रे,
कद सूं सिमट्यौ सांभ्यौ मन कौ पड़्यौ पचरंग चीर रे।

तातै तवै बूंद ज्यूं टमकै ये गीतां का बोल रे,
दो जुग बडी कहाणी बणगी, कहूं न तौ भी खोल रे,
कसकै तौ भी काढ न पाऊं यौ दोधारयौ तीर रे।

❖❖

हरीश भादाणी

जनकवि हरीश भादाणी रौ जलम 11 जून 1933 नै बीकानेर रै अेक मझलै परिवार में हुयौ। वांरा बापूजी बेवा महाराज बेटै रै जलम सूं पैली ई संन्यासी रौ भेख धारण कर परिवार री जिम्मेदारियां सूं छेड़ौ कर लियौ अर मां उणी बिखै में बेटै नैं बेआसरै छोड संसार सूं ई विदा व्हैगी। मां-बाप री आ गैर-मौजूदगी कवि रै बाळमन में बरसां रड़कती रही। परिवार सूं मिळती अगोलग उपेक्सा, अहोड़ां अर बेकदरी सूं वांरै मन मांय जिण भांत रौ असंतोस अर भौतिक सुभीतां सूं वीतराग पैदा हुयौ, उणरौ कवि री कंवळी संवेदना माथै गाढौ असर पड़्यौ। भणाई अर बधती उमर रै साथै उण दरद नै आपरै गीतां अर कवितावां में इण भांत अंगेजी कै विरासत में मिळी संपदा वांरै वास्तै गौण व्हैगी।

आपरै लेखण रै दरम्यांन जद वै समाजवादियां अर रायवादियां री संगत में आया तौ अेक नुंवी दुनिया अर निरवाळा विचारां सूं वांरौ सामनौ हुयौ। समूह चेतना रै लूंठै विचार-दरसण कानी वांरौ रुझांण बध्यौ, जठै निजू सुख-दुख कै खुद रै विकास रौ वांरै वास्तै कीं खास अरथ नीं रह्यौ। वै आपरी चिंता छोड वां जरूतमंद अर पीड़ित लोगां री दसा सुधारण में इत्ता मगन व्हैग्या कै विरासत में मिळ्योड़ी घणखरी संपदा नै वां होळै-होळै उणी परमारथ रै काम में लगाय दीवी। जन-आंदोलणां में ई वांरी भागीदारी बधती रही अर साथै ई स्नातकोत्तर शिक्षा कानी सूं वांरौ जीव उचटतौ गयौ। वांरी लोकधरमी कवितावां अर जनगीत घणकरा उणी दौर री उपज मानीजै।

वां बरसां तांई मुम्बई, कलकत्ता अर जयपुर-बीकानेर में अखबारां, पत्र-पत्रिकावां अर गैर-सरकारी संस्थानां में कलम री मजूरी रा अलेखूं काम किया- प्रौढ शिक्षा अर साक्षरता मिशन रै पेटै अनौपचारिक शिक्षा माथै कोई दो दरजन किताबां लिखनै सूंपी। सन् 1960 सूं '74 अर 1990 सूं '93 तांई 'वातायन' सरीखी साहित्यिक पत्रिका रै जरियै जठै प्रदेश में नुंवा रचनाकारां सारू अेक साहित्यिक मंच त्यार करण रौ अनूठौ काम कियौ, उठै ई लोक महत्त्व रा मसलां नै लेय जन-आंदोलनां में भागीदारी निभायी अर जेळ जातनावां ई भोगी।

आपरी इण दीरघ रचना-जातरा में वां जठै हिंदी संसार नै कोई डेढ दरजन बेजोड़ काव्य-कृतियां दीवी, वठै आपरी मायड़-भासा राजस्थानी में ई 'बाथां में भूगोळ', 'जिण हाथां आ रेत रचीजै', 'काचर रौ बीज', 'हूणियै रा सोरठा' सरीखी कित्ती ई नामी कृतियां रै माध्यम सूं साहित्य में आपरी अेक न्यारी साख बणाई। आपरी सजळ रचनासीलता सूं सींचण वाळै लाडलै कवि हरीश भादाणी सेवट 2 अक्टूबर 2009 रै पीळै परभात आपरी औस्था रै छीयंत्तरवैं बरस में अचाणचक सदा सारू मून धार लीवी।

-नंद भारद्वाज

बोलै सरणाटौ

ऊभा चारूं कूंट
धुएं रा डूंगर
बोलै सरणाटौ!
डरतौ ऊगै, डरयौ बीसूंजै
इकटंगियै बंधियोड़ौ
अेकल सूरजड़ौ
साखी ही गूंगौ
जद कुण भणै
लोहै रा कागद
बोलै सरणाटौ!
हाथ पखारै आंख चुगै
माणक-मोतीड़ा
धोरां रै समदरियै
पुरवा-पछवा
उतर-उतर फेरै आंध्यां रा झाडू
होड करै धीरज री सांसां
कियां करै गोफणिया हाका
बोलै सरणाटौ!
पगां मंडीजी
डामर री दुनियावां पसरै
मोड़ै-मोड़ै
आंगण ओढी लाज संभाळै
फाट्योड़ौ थाकेलौ
रोटी रौ चंदोमामौ देखण
पथरावै सोनल सपना
राज-मजूरी राजा करसां रा
रौळा ही रौळा....
कुण देखै
कुण सुणै
चूल्है रै सांम्ही बजतौ चूड़ौ
बैठा मिनख मठोठ्यां खावै-
बोलै सरणाटौ!

थारै लांबा जोडूं हाथ

थारै लांबा जोडूं हाथ
ऊन्हाळा थिड़ी-थिड़ी कर ऊभ
पगलिया ले लै रे!

थारी मावड़ लू बळता खीरां सूं
सींची सगळी रेत जी
थारी आंधी बैनड़ रा रौळा सुण
रूस्या रसिया खेत जी
पाळसियै में जंवरा पूजूं
क्वांरै हाथ कळसिया ढोळ दूं
म्हारौ जतनां चींत्यौ थाळ
तीज रौ घी-सींज्योड़ौ खीच
आमली ले लै रे!
थारै लांबा जोडूं हाथ....

म्हारी भातौ ले जाती भावज रौ
रूड़ौ रूप ममोलियौ
कोढी तावड़ियौ भरै चूंठिया
घुरड़ै घिरै भतूळियौ
जे थूं बोलै बैरी थारै
ओळा और मखांणा घोळ दूं
म्हारै डोवै रांधी राब
राब में मौळी-मौळी छाछ
सबड़का ले लै रे!
थारै लांबा जोडूं हाथ....

म्हारौ अणमण पिणघट खड़ौ उडीकै
सोनलदे पिणहार नै
म्हारी खूंटी चढियोड़ी ईंढांणी
जोवै है सिणगार नै
जे थूं बोलै तौ चौभाटै
रोटी पेड़ा ढाळ दूं

म्हारै आंगणियै रिमझोळ
मटक्यां मांड्योड़ी अणमोल
उतारौ ले लै रे!
थारै लांबा जोडूं हाथ....
ऊन्हाळा थिड़ी-थिड़ी कर ऊभ
पगलिया ले लै रे!

❖❖

कठै सूं ऊपजै आ आग

(अेक)

हड़-हड़ हांसतौ चूलौ तौ
आपरौ चुड़लौ बजाय महकै
महकतौ-महकतौ बांधै मन
अर झाका घालती
टिमक्यरां नै हेला-हेल
बिठावै आपरी छीयां....

हेत रै हाथां
पुरस-पुरसती
कैवती ई जावै
भरौ! भरौ नीं म्हारै सूं
थारलौ कुंभ!

रह्या अणबोल्या ई
पण पूछ तौ लेवूं ई-
कठै सूं ऊपजै आ आग?

(दो)

कुण.... कद करसी
वां तपासियां सूं सवाल कै
भोमा रै कुणसै चौभाटै
होया बरफ री सिल?

पांगरसी सांसां में ई
सांभ नै राखी चालण री हूंस
धिन-धिन भरतां रा पूतां!
आपै ई पैरियो कै दूजां पैरायौ
जैपुरियौ पग?

चालतां-चालतां आय ढूक्या
जगनाथ रै आंगण
अठैई ऊगती के
तापण री रळी?

कुण कुरसी
वां सूं औ सवाल कै
कठै सूं ऊपजै आ आग?

(तीन)

कुण पूछैला
वां खोजारां सूं सवाल कै
घास-फूस कै
लीर-लत्ता कै
पीळियै सूं डसीज्यां पानां
लाधिया ई नीं कठैई?

कुणसी आंख सूं दीखी
मुळकती नींद
नींद में हिलरता सपना
अर वां माथै
ऊंधाय दियौ तेल,
घस दी तूळी,
ताप लिया
बणाय जगरौ?
कुण, कद करसी
वां सूं औ सवाल कै
कठै सूं ऊपजै आ आग?
(अेक काव्य-शृंखला रा तीन अंस)

हूणिया

मंदिर-मस्जिद खोजतां, दीनी उमर गंवाय
हियै बिराजै सांच, खोल किवाड़ा हूणिया!

साच न बांमण-बाणियौ, ना ही छूत-अछूत
आखौ अेकल सांच, मिनखाचारौ हूणिया!

अेक सरीखौ रगत है, अेकल हाडां देह
जीवां करां कळाप, अेक सरीसा हूणिया!

जात-पांत पूछै नहीं, देवळ अर रसूल
धरम ठगोरा बैठ, राड़ मचावै हूणिया!

आभौ आंरी अंगरखी, तावड़ियौ है पाग
हवा अंगोछौ हाथ, रेत पगरखी हूणिया!

थे नीं देखी मावड़ी, थे नीं देख्यौ बाप
हेला-हेल मचाय, थूक बिलोवै हूणिया!

हेत हबोळा खांवतौ, लैरां लेता बोल
कागां भर-भर चोंच, झील निचोड़ी हूणिया!

ताळ-तळायां नीवड़ी, जबरो पड़्यो अकाळ
चैरा-नैण निचोय, होठ पांणलै हूणिया!

अरचण घर दीसै नहीं, आंनै राम-रहीम
छेकड़ देहां खोल, साध पूरलै हूणिया!

भाठां तीरां तोप सूं, मच्या घणा घमसांण
जीग्या परळै बीच, सिरजणहारा हूणिया!

जिकां पळीता बाळिया, वांनै गिटग्यौ काळ
जीग्या काळ-अकाळ, सिरजणहारा हूणिया!

धूंसा धंसग्या धूड़ में, तूत्यां समदर मांय
थारी-म्हारी सांस, बजै कबीरौ हूणिया!

❖❖

● *लेख*

डॉ. नीरज दइया

कहाणीकार अशोक जोशी 'क्रांत'

राजस्थानी कहाणी नै भारतीय कहाणी रै बरोबर ऊभी करणियां हरावळ कहाणीकारां में अशोक जोशी 'क्रांत' रौ नांव अवस याद राख्यौ जावणौ चाइजै। कहाणी-संग्रै 'आड़ंग' (2003) अर 'पावसी' (2009) रा कहाणीकार अशोक जोशी 'क्रांत' (2 अक्टूबर 1955-30 जून 2013) री कहाणी-जात्रा अकाळ मौत सूं अधबिचाळै भलांई छूटगी हुवौ, पण जित्ती कहाणियां बै लिखग्या कूंत करियां कमती नीं लखावै। किणी पाठक री कहाणी सूं कांई मांग हुवै ? विचार करां कै कहाणी सूं वौ कांई उम्मीद राखै ? कहाणी में नुंवी बात, नुंवी बुणगट अर मन-रुचती भासा दाय करीजै। पाठक नै उणरै मन नै परस करणवाळी कहाणी चाइजै। वौ चावै कै कोई कहाणीकार उण रा सपना कहाणी में साकार करै। कहाणी री दुनिया में जथारथ भेळै वौ आपरी कल्पना रौ संसार ई देखणौ चावै। वौ हूंस परवाण आपरी बात नै कहाणी में साकार हुवती देख्यां कहाणीकार माथै भरोसौ करण लागै। इण ढाळै अशोक जोशी 'क्रांत' नै म्हैं पाठक रूप भरोसैमंद कहाणीकार कैय सकूं।

अठै अेक दाखलै रूप बात करणी चावूंला। आं ओळ्यां नै बांचौ- *''म्हैं देख्यौ अेक डागदर बापू री छाती माथै आपरी हथेळी राख'र जोर-जोर सूं धचका देय-देय वांरौ सांस पाछौ लावण री कोसिस कर रैयौ हौ। आखिर में डागदर वांरी छाती में वौ इंजेक्सन लगायौ जिकौ म्हैं अबार-अबार लाय नै दियौ हौ। पण उण रौ भी कोई असर नीं हुयौ। सायत बापू रौ सांस मूंडै सूं निकळग्यौ हौ। वांरौ मूडौ यूं रौ यूं फाटोड़ौ रैयग्यौ। भाख फाट चुकी ही।''* (अढाई घर री चाल : पेज-63) आं ओळ्यां में कहाणीकार जाणै म्हारी आपबीती लिखी है। आ री आ सागण घटना म्हारै सागै हुयी। कहाणीकार जद किणी पाठक रै अंतस नैं सबद देवण लागै तद उणरी साधना सफल मानीजै। हरेक कहाणी किणी अेक पाठक री कोनी हुय सकै, पण जद उणनै आपरी देखी-सुणी-भोगी घटनावां किणी रचनाकार री कलम सूं आवती दीसै तद उण माथै उणरौ पतियारौ बधतौ जावै। किणी पण रचना में बांचणियै नै प्रभावित करणौ लाजमी हुवै।

अेक पाठक रूप म्हारी पसंद-नापसंद हुय सकै। कोई कहाणी बांचणी चालू कर'र दाय नीं आवै तो अधबिचाळै छोड दूं... कहाणी रौ कस जोवण खातर बीच रा केई अंश छोड'र

उणनै यूं ही पूरी कर देवूं। मन-माफिक भावबोध री कहाणी नै नीं जाण'र बांचण री टाळ कर दूं, पण जद म्हैं आलोचक रूप किणी कहाणीकार सूं जुड़ जावूं तो बांचण री दीठ कीं न्यारी हुवै। हरेक रचनाकार रौ आपरौ रचाव हुवै अर उणमें दुनिया हुवै। रचनाकार री उम्मीद रैवै अर आलोचक रौ फरज ई हुवै कै वौ किणी रचाव री पीड़ नै समझण रा पूरा-पूरा जतन करै।

औ असूल हुवणौ चाइजै कै किणी रचना अर रचनाकार री कूंत सूं पैली उण खातर आदर री भावना हुवै अर आ सावचेती म्हारै आलोचक री जिम्मेदारी बधावै। खथावळ री जागा नेठाव जरूरी हुवै कै किणी रचना-पाठ में उणरौ कोई सबद-भाव अर अरथ कठैई हाथ आवतौ-आवतौ तिसळ नीं जावै। इणी घणै धीजै रौ अठै औ नतीजौ आज म्हारै साम्हीं है कै कहाणीकार अशोक जोशी 'क्रांत' रै रैवतां, म्हैं फगत उणां रै कहाणी-संग्रै 'पावसी' में छपी अै दोय ओळ्यां ई लिख सक्यौ- *''अढाई घर री चाल कहाणी रा केई-केई प्रसंग इण ढाळै आखरां में ढाळ्या है कै वै काळजै ऊंडै तांई पूगै। अेक बात भळै लारलै केई बरसां सूं म्हैं देखूं कै आजकाल खासा कहाणीकार छोटी-छोटी कहाणियां ई लिख रैया है, पण क्रांत जिण ढंग सूं मठार-मठार लिखै, उणरी न्यारी परख हुवैला।''* (छेहलौ कवर पेज) घणी तकलीफ कै क्रांत रै रैवतां न्यारी परख कोनी करीज सकी। हाल उणां सूं घणी उम्मीदां ही। राजस्थानी कहाणी रै सरूप नै जाणै वै डाइनामाइट लगा'र साव तोड़-फोड़ कर'र नुंवौ बणावण में लाग्योड़ा हा। 'क्रांत' सगळा रौ ध्यान तौ खींच रैया हा, पण आ कुण सोची कै काळ वां सागै अन्याव करैला। इण जात्रा बिचाळै भाई अशोक जोशी 'क्रांत' रौ जावणौ कहाणी रै खातै नीं पूरीजै जिसौ नुकसाण कथीजैला।

कहाणीकार मालचंद तिवाड़ी लिखै- *''कहाणी किणी अबोट, रोजमर्रा री अबखाई सूं अलायदै साच नै रूपायित करण रौ कला-कर्म है, या पैली सूं हासिल कथाकार मिनख रै स्वगत फैसलां नै कहाणी विधा नै अेक परफोर्मा ज्यूं बरततां थकां पाठकां नै पुरसण रौ सुविधाजनक तरीकौ? कथाकार नै आपनै हरमेस इण सवाल सारू खुल्लौ राखणौ चाइजै।''* (पावसी : बहुवर्णी अनुभव लोक : पेज-7) स्यात इणी ढाळै रै सवालां सूं आंम्ही-सांम्ही हुवतां क्रांत आपरै जीवण-काल में केई कहाणियां रची। उल्लेखजोग है कै हरेक कहाणी में नवी बुणगट अर अबोट कथानक आपरी हूंस दीसै। क्रांत आपरै कथा-संसार में कथा-प्रयोगां री इसी दुनिया सिरजी कै उणरी सरावणा करणी पाठक-आलोचक री मजबूरी बण जावै। क्रांत री कहाणी-कला रै मारफत किणी कहाणीकार सूं जिकी जिकी उम्मीदां पाळूं वै अठै राखण रौ जतन करूंला।

'आड़ंग' अर 'पावसी' रा कहाणीकार अशोक जोशी 'क्रांत' री कहाणियां बीजै कहाणीकारां सूं आकार-प्रकार अर बणगट में न्यारी हुवै। आपां नै वै जिण निरवाळी दुनिया में लेय'र जावै.... बठै पूग्यां पछै वा भूलीजै कोनी। आं कहाणियां रौ मन माथै असरदार रंग जमै.... अर बणगट री जिकी ओळूं बच्योड़ी रैय जावै, वा दूजै कहाणीकारां सूं साव जुदा हुवै। परंपरागत बणगट सांम्ही साव नुंवी बणगट रा केई-केई दीठाव 'क्रांत' री कहाणियां में देख सकां। जरूरत मुजब राजस्थानी भेळै हिंदी रो प्रयोग कहाणी-प्रवाह में ना तौ कठैई रड़कै अर

ना कठैई कोई अवरोध उपजावै। खळखळ बाजती धार सरीखी भासा में रची आं कहाणियां मांय सरलता-सहजता अर मिनखाजूण री नाटकीय भंगिमावां मिलै। अै कहाणियां जमीन सूं जुड़'र आगै बधण री हूंस पाळै-पोखै। जागासर मुहावरा अर कहावतां रौ असरदार प्रयोग आं कहाणियां री न्यारी खासियत मानीजै। सारथक अर सफल प्रयोग उणनै कैय सकां जिकौ अंतस मांय रचीजै, अर अेक सूं दूजै-तीजै अंतस री जातरा करतौ रैवै।

मन नै परस करती गजब री खिमतावाण कहाणी है- 'दाग'। इण कहाणी रौ नायक लेखक-मास्टर चावी कहाणी 'कफन' (प्रेमचंद) बांचण रै आनंद में डूब रैयौ है। कहाणी में कहाणी बांचण रै इण दीठाव सूं आ कहाणी चालू करीजै। जठै कहाणी 'कफन' खतम हुवै वठै कहाणी 'दाग' सरू हुवै। अठै सवाल जलमै कै कहाणीकार समानांतर पाठ री भंगिमा क्यूं राखै? फेर बांचण नै कहाणी कफन रौ अंश क्यूं? अठै कांई कोई अरथ जोड़णौ चावै? जे कैवां कै कहाणी 'दाग' में मिनख नै मिनख छळ रैयौ है। आ तौ जूनी बात है। छळ कद कोनी करीज्या? तौ अबोट कथानक रौ अरथाव कांई हुवै? अठै प्रेमचंद री जमीन सूं इण कहाणी नै जोड़'र जोशी परंपरा सूं जुड़ाव दरसावै। कहाणीकार कैवणौ चावै कै इत्तै बदळाव बाद ई कठैई हालत में सुधार मिलैला, तौ कठैई हाल सुधार बाकी है। इण ढाळै रौ समानांतर पाठ बियां तौ अेक नुंवौ प्रयोग कैयौ जाय सकै, पण असल में आपां प्रेमचंद री कहाणी कफन री ओळूं नै सागै लेय'र जद आ कहाणी बांचा तौ कहाणीकार ठेठ अंतस तांई पूग जावै। काळजै मरम पूगावण में दाग खातर कफन ई मददगार साबित हुवै। राजस्थानी में प्रेमचंद री परंपरा नै पोखणवाळा कहाणीकार इण कहाणी सूं सीख सकै कै परंपरा आधुनिकता में कियां ढाळै। असल में आ कहाणी अेक आदमी मतलब संवेदनशील मास्टर रै ठगीजण री कहाणी है। संवेदना रै साथै खिलवाड़ करतै सामाजिक जथारथ री कहाणी है। पढियै-लिखियै रै गुण अर अनपढ रै औगुण बिच्चै चालती लड़ाई अर ठगी री कहाणी है। कहाणी 'दाग' रौ अेक पाठ आपरै भेळै अनेक स्तर माथै घणा पाठ-अरथ चवड़ै करै। दाग फगत जोशी री ई नीं राजस्थानी री प्रतिनिधि कहाणी मानी जाय सकै।

कहाणी खातर नुंवी जमीन सोधण रौ काम नवा कहाणीकारां में अशोक जोशी 'क्रांत' करियौ। कहाणी में सेक्स री बात 'गळी जिसी गळी', 'भूख जिसी भूख' अर 'अठै सुख कठै' आद कहाणियां रै मारफत सांवर दइया उठावै तौ जोशी इणी कथ्य-परंपरा में प्रयोगवादी कहाणियां-'पतियारौ' अर 'मुट्ठी भर आभौ' रचै। चावा-ठावा कथाकार यादवेन्द्र शर्मा रौ कैवणो हौ- *''क्रांत आपरी इण कहाणियां में साथळ माथै थाप मार'र केई लुक्योड़ी बातां रौ भेद खोलै। वौ सच्चाई रौ निचोड़ बतावण रौ जतन करै।''* (भूमिका : कहाणियां रै पेटै : पेज-8) नाटकीय ढाळै में रची लंबी कहाणी 'पतियारौ' बांचतां कहाणीकार सवाईसिंह शेखावत री 'कूंपळ' कहाणी चेतै आवै। अठै पण गाय अर गोधै रै मारफत पेमा अर धापू घरबीती सुणावै। आ यौन-मनोविज्ञान सूं जुड़ी कहाणी लुगाई रै मन मांयलै पतियारै री पुड़तां होळै-होळै सांम्ही राखै। इण कहाणी री खासियतां री चरचा करां तो पैली तो विसय इसौ अबखौ, कै कोई हाथ नीं घालै जिसौ। दूजी- नाटक री आंट रौ रंग संवादां में पठनीयता। तीजी- पड़दैवाळी बात नै

संकेतां मांय ठेठ तांई निभावता थकां परोटणौ। बंतळ में घरधणी री कमजोरी नै गुजरात संदर्भ सूं घणी सावचेती सूं कहाणीकार राखै।

अेक दूजी कहाणी 'मुट्ठी भर आभौ' यौन मनोविज्ञान सूं जुड़ी सही सोच नै उजागर करती विचारवान कहाणी है। लीक सूं हट'र आ कहाणी नाटकीय अंदाज अर आपरै संवादां में चिड़ा-चिड़ी री बंतळ नै लेय'र चालै। लारलै जलम री ओळूं नै अंवेरण री जोरदार बणगट इणनै अेक यादगार कहाणी बणावै। चिड़ी अर चिड़ौ नै नाटकीय रंग में रंगतौ कहाणीकार लारलै जलम री बात काढै अर प्रेम रौ साचौ अरथ यूं राखै- *''बात वा नीं है.... म्हैं तौ.... म्हैं तौ औ मानूं कै ताळी कदैई अेक हाथ सूं को बाजै नीं.... इणी भांत प्रेम तौ अेक पवित्तर भावना है... इणमें कोरी वासना घणी घातक व्है..... इण सारू अंतस मन रौ साचौ अर निकेवळौ प्रेम ही जीवण रौ मूळ आधार है।''* (आड़ंग : मुट्ठी भर आभौ : पेज-86) प्रेम अर वासना माथै इण ढाळै री कहाणी मिलणी साव ओखी है। खासियत अर तारीफ री बात आ है कै इणमें कोई नारौ अर फतवौ आपरी समझ रौ कहाणीकार कोनी प्रगटै, बस होळै-होळै बात मांय सूं बात काढै।

क्रांत आज री भ्रष्ट व्यवस्था, रिश्वत अर हरामखोरी नै संवाद-शैली री कहाणी 'जोड़-बाकी' में परोटै। कहाणीकार अठै भी खुल'र आपरी बात राखै- जिणमें मिनख री मनगत अर परस्त्रीगमन री बातां है। इण कहाणी में मिनख अर भ्रष्टाचार नै अेकठ नागौ करीजै। इणी ढाळै संवाद-शैली रौ नुंवौ रूप कहाणियां- 'पतियारौ' अर 'मुट्ठी भर आभौ' में देखण नै मिलै। कहाणी 'कापुरस' में रेल-जात्रा करणिया धणी-लुगाई रै बिखै री कहाणी है। कहाणी री बेसी खिमता इणमें नाटकीय हुवण सूं कैयी जा सकै। आ कहाणी अेक पासी अतिनाटकीय सरूप में रेल-जात्रा अर देस री बिगड़ती व्यवस्था सांम्ही राखै, तौ दूजै पासी किसमत अर संजोग री बात ई कैवै।

जद पैल पोत आड़ंग कहाणी संग्रै सांम्ही आयौ, तद सगळा इण साव नवै नांव नै लेय'र सोचा-विचारी करी। लखायौ कै इणमें अंतस-दरद रै अळूझाड़ री कहाणियां मिलैला। मिनखाजूण रै हियै केई-केई परतां मांय उमड़तै-घुमड़तै आड़ंग नै जोशी रचण री खेचळ करी ही। 'आड़ंग' कहाणी में लुगाईखोर आदमी री अणमाप अनैतिक-अमर्यादित वासना रौ चितराम मिलै। कहाणी 'झेर' में प्रगतिवादी सोच रै कारण मजदूर अर मालिक की जुगां-जूनी लड़ाई है, तौ कहाणी 'राड़ अर बाड़' में आर्थिक तंगी सूं तूटतै घर-परिवार रौ सरावणजोग चितराम मिलै।

पाठक नै संबोधित नाटकीय संरचना में लिखी कहाणी 'भाग' नुंवौ प्रयोग है, जिणमें भाई-भाई री लड़ाई अर भेदभाव री जूनी कहाणी नुंवै गाभा में सोवणी लागै। कहाणी में कहाणीकार अर सूत्रधार आदि री सिरजणा नाटककार-कहाणीकार जोशी री सिरजणा अर सोच रौ कमाल है। असल में इण कहाणी में टुकड़ा-टुकड़ा रचीजतौ साच, अेक मोटै साच नै सिरजण रौ काम करै। कहाणी री आ खासियत कैयी जावणी चाइजै कै वौ मूळ मुद्दै माथै घणै नेठाव सूं होळै-होळै पतियारौ सांधता-सांधता पूगै, इण बिचाळै रंग निर्देशक कै चित्रकार दांई कहाणी खातर जाणै भेळा करियोड़ा सगळा रंगां सूं बांचणियां री ओळख करावै। जिकी जूझ कथा रै मारफत भाग में साम्हीं आवै वा असरदार कैयी जावैला।

कांई आज रै सामाजिक, आर्थिक अर राजनीतिक बदळाव सूं मिनख रौ अंतस बदळतौ जाय रैयौ है? घर-परिवार सूं जुड़ी मा-बेटा अर बाप रै अंतस नै रचती तीन कहाणियां 'पावसी'

संग्रै में मिलै। 'भाग' री बात आपां करी अर इण साथै ई 'अढाई घर री चाल' में बदळता आर्थिक हालात, बाप-बेटां रा बदळता संबंध अर पारिवारिक जूझ अर समझ नै अेकठ परोटती नुंवी दीठ आं कहाणियां में मिलैला। 'अढाई घर री चाल' अर 'पावसी' कहाणियां में बूढा मा-बाप घर-परिवार री साख सारू खपै। मा-बाप री आ जूझ देखण सूं जठै बडेरां रै हियै रौ उजास प्रगटै बठै ई समाज नै संस्कारां अर मिनखाजूण री सांवठी सीख मिलै। गौर इण बात माथै पण करियौ जावणौ चाइजै कै आं कहाणियां में कहाणीकार कोई सीख आपरै बांचणियां नै सीखावै कोनी, वौ तौ बस कहाणी में नुंवा-नुंवा नाटक रचै। नुंवी बणगट अेकल संवाद में रचीजी मा री ममता री कहाणी 'पावसी', मायत रौ मन खोलण रौ जतन इणमें मिलै। डोकरी रै मूंडै बोलती आ कहाणी बुणगट रै मेळ माथै सांवर दइया री कहाणी 'थे कद मरोला' सूं जुड़्योड़ी है। आतम-संताप री आ अेक बेजोड़ कहाणी है। 'भाग' अर 'पावसी' कहाणियां री मावां रो न्यारौ-न्यारौ उणियारौ अठै देख्यौ जाय सकै।

शिल्पगत प्रयोग अर नाटकीय ढंग सूं कहाणी 'पैदी-मात' ऑडिट अर इन्सपेक्शन रै मिस हुवतै घोटाळा नै उजागर करै। आ कहाणी भ्रष्ट-आदमी री भ्रष्ट-आदमी सूं लड़ाई री कहाणी है। राजनीति री अनीत अर जोड़-बाकी नै 'सत्ताखोर' कहाणी चवड़ै करै। कहाणीकार कोस्ठक में कहाणी रै सरू में अर छेकड़ मांय खास टीप राखै, जिण सूं कहाणी में नुंवौ रंग आवै अर कहाणी बांचणियां नै लखावै कै आ कहाणी फगत कोई कहाणी कोनी हकीगत है। सत्ता में परसरियोड़ो दोगलापणौ उजागर करतौ बगतौ कहाणीकार अेक नुंवी दुनिया में लेय'र जावै जठै धोळा गाभा आळा देसभगतां रौ साच, वां रा सूगला जोड़-तोड़, पखापखी आद बांचण नै मिलै पण सजीव भासा रै कारण अठै लिखणौ चाइजै कै देखण नै मिलै।

कहाणी 'बात करौ हौ भाई!' में तीन लघुकहाणियां नै अेक सूत्र ओळी सूं गूंथणौ प्रयोग मानीजैला... तो कहाणी 'नीत' में अेक सिरैनांवै सूं पांच रचनावां है। पांचां री न्यारी-न्यारी बात करां, पछै विचार करांला कै कांई कारण कहाणीकार पांच कहाणियां नै अेकठ राखी। कांई अशोक जोशी 'क्रांत' कहाणी में नुंवो चोळकौ करण खातर अेक कहाणी में अेक री जागा तीन-पांच कहाणियां भेळी करै? अठै कहाणी नै आपरै परंपरागत रूप सूं मुगती रौ सोच तौ है, पण कहाणी में अेक सूत्र नै पकड़ता थकां उणी सूत्र सूं दूजी-तीजी कहाणी भेळै राखणी- असल में मिनख रै प्रवृत्तिगत सोच अर बरताव नै देखण-दिखावण रौ जतन है। 'नीत' कहाणी में इण सबद नै नुंवी दीठ में राखण रौ जतन देख सकां। आं कहाणियां रै मारफत लघुकथावां नै अेकठ करण रौ जतन हुयौ है।

कहाणीकार अशोक जोशी 'क्रांत' रै कहाणी संग्रै पावसी बाबत चावा-ठावा आलोचक कवि-कहाणीकार नंद भारद्वाज रौ कैवणो है- *''लोकराज री अबखी जात्रा में आज जिका अणभव आपां रै सांम्ही आया है, देखनै इचरज हुवै कै औ बगत अर समाज सेवट किण कांठै पूग नै बीसूंणी लेवैला? मौजूदा समाज-व्यवस्था अर राजनीति में जिकी प्रवृत्तियां अर अबखायां परतख दीखै, जिण अन्याव अर अनीत रै साथै आपरौ नांव जुड़तौ देख लोग दर ई नीं संकीजै, उण समाजू परिपेख सूं कोई कांई उम्मीद बांध सकै? अेक हळकी-सी उजास री किरण जे कठैई दीखै तौ वा साच अर न्याव सारू जूझतै उण मानवी रै अंतस में अवस दीखै, जिकौ उण*

अबखायां रै बिच्चै ओजूं उणी भांत जूझै अर आ उम्मीद जगायां राखै कै रात भलां ई कित्ती ई लांबी हुवौ, अंधारौ कित्तौ ई गाढौ हुवौ- कोई रात, कोई अंधारौ सूरज री ऊगाळी नीं ढाब सकै। अशोक जोशी 'क्रांत' री अै कथावां बदळतै बगत अर समाज रै इणी साच नै आपां सांम्ही राखै।''

बतौर इक्कीसवीं सदी रै कहाणीकार रूप जोशी री कलम सूं जिकी कहाणियां निकळी उण मांय लोककथा अर कहाणी री जूझ कोनी। जूनी भासा अर बणगट रौ संकट कोनी। कथानक नै दुसराव री जागा कहाणीकार आपरै असवाड़ै-पसवाड़ै रै जथारथ सूं जद जूझ मांडै तद हरेक दांण कहाणी पकड़ण खातर आपरौ नुंवौ जाळ फैलावै। राजस्थानी कहाणी-जात्रा में नुंवा प्रयोग, नाटकीय भासा अर साव निरवाळी बणगट रै पाण 'आड़ंग' अर 'पावसी' रा कहाणीकार अशोक जोशी 'क्रांत' लूंठा कहाणीकार रूप जाणीजैला।

❖❖

सी-107 ए, वल्लभ गार्डन, पवनपुरी, बीकानेर 334003

मुखौळ रा चित्रकार : महेन्द्र प्रताप शर्मा *यूं तो अबार राजकीय उच्च मा. विद्यालय मांय प्राध्यापक है पण अेक लूंठा चित्रकार, साहित्यप्रेमी अर राजस्थानी भासा रै समर्थक रै रूप में भी आप ओळखाणीजै। आपरो जलम 9 फरवरी, 1970 नै नोहर तहसील रै खरसंडी गांव मांय व्हियौ। आप केई राज्य अर राष्ट्र स्तरीय अेकल अर सामूहिक चित्र प्रदर्शनियां मांय भाग ले चुक्या है। आप कला विसयां माथै लेखन भी करै।*

हिन्दी-राजस्थानी मासिक

पणिहारी

संपादक : चन्द्रेश बी. कुमावत
सह संपादक : महेन्द्र एन. वीरवाडिया
मानद संपादक : नीतू एन. परिहार
मोल : अेक प्रति 25 रिपिया, तीन बरस रा : 830 रिपिया, पांच बरस रा : 1320 रिपिया, आजीवण : 5100 रिपिया
प्रकासक
पणिहारी मीडिया पब्लिकेशन
ऑफिस नं. 51, गोयल प्लाजा, कार्टर रोड नं. 4, मेन कस्तुरबा रोड बोरीवली (पूर्व) मुंबई-66

राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति परिषद् री द्विमासिक पत्रिका

कुरजां

प्रधान संपादक : मनोहरलाल गोयल
संपादक : ब्रह्मदत्त शर्मा
मोल :
दो बरस : 200 रिपिया
पांच बरस : 500 रिपिया
संरक्षक : 5000 रिपिया
प्रकासक
राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति परिषद
गोयल भवन, बिष्टुपुर, जमशेदपुर 831001

✍ **अशोक जोशी 'क्रांत'**

हस्तिनापुर

गंगापुत्र भीष्म
थांनै
हस्तिनापुर नै
जबाब देवणौ पड़सी
क्यूं.... ?
आखर क्यूं ?
उण बगत
थांरी आंख्यां
पाथरीजगी ही
जदकै
थांरै सांम्ही
सांप्रतेक होवणवाळी ही
नागी द्रौपदी।

पितामह भीष्म!
थांनै हस्तिनापुर नै
जबाब देवणौ पड़सी
कांई अेक द्रोपदी सूं
बध नै ही
थांरी हस्तिनापुर ?
क्यूं ?
आखर क्यूं ?
थे औ पांतरग्या कै
जिणनै थे वचन दिया हा
जिण सारू थे
थांरी जूण
तपतै धोरा दांई भोगी
वा भी
अेक मां ही
अर
जिणरी कूख सूं जलमिया
अेक मां ही
गंगा मां
अर
जिणनै थे नागी व्हैती देखता रैया
वा भी अेक मां ही
हस्तिनापुर री
भावी पीढी री मां।

गंगापुत्र भीष्म!
थांनै हस्तिनापुर नै
जबाब देवणौ पड़सी
अेक कुळवधू रै
हांचळ रै आंचल सूं
बधनै
कद होयगी ही हस्तिनापुर ?

यूं तौ थे

इणनै भी
अेकर बार
नागी करण सारू
उघाड़ियौ हौ
इणरौ चीर
वाढ्या हा
इणरा हांचळ
अेक इंद्रप्रस्थ
अर
दूजोड़ौ बचियोड़ै हस्तिनापुर रै रूप
कांई इण सूं भी ठाडौ को होयौ नीं
थांरौ काळजौ
जिकौ थे अेक
हाड-मांस री
हस्तिनापुर नै
सांप्रतेक देखणी
चावता हा नागी ?

गंगापुत्र भीष्म !
थांनै
हस्तिनापुर नै
जबाब देवणौ पड़सी
कठैई
थांरै सापित मन में
नागी लुगाई रौ
उघाड़ौ डील देखण री
लालसा तौ नीं जागी ही ?
कठैई थांरी दब्योड़ी
कुंठित वासना
भभक तौ नीं गी ही
ज्वालामुखी दांई
थांनै
हस्तिनापुर नै
जबाब देवणौ पड़सी।

गंगापुत्र भीष्म !
हस्तिनापुर
द्रोपदी
अर इतिहास नै।
❖❖

✍ **उगमसिंह जागरवाळ**

दादीसा री हवेली

घर में अेक कांनी
दादीसा रौ कमरौ
दादीसा कैवै उणनै
आपरी हवेली !
हवेली मांय दादीसा री दुनिया
गीता-रामायण बांचै
करै पूजा-पाठ, फेरै माळा
सुणावै ग्यान री बातां
पोता-पोतियां नै
देवै घणी-घणी आसीसां
म्हारा दादीसा
म्हांनै चोखा लागै
वै अर वांरी हवेली।

पगडांडियां

चालता-चालता ई मंड जावै
कोरी धरती माथै नुंवी पगडांडियां
चाल पड़ै रस्ता री कोर कानी
सेवट वांनै मिलणौ है सड़कां सूं
मिलिया रैवैला नांव-निसाण
नीं तौ मिट जावैला वांरा नक्स
चालता-चालता ई मंड जावै
कोरी धरती माथै
पगडांडियां।
❖❖

✍डॉ. आईदानसिंह भाटी

स्वाद

वै ऊभा जोवै 'सोनार-किलै' री
झळमळती पीळी पांखड़्यां।
वांरी जबान माथै स्वाद रळकै, पेप्सी अर कोका रौ।
गाइड सोधै है स्वाद वांरै खुंजां में।
इतिहास'र स्थापत्य रौ घोळतौ स्वाद
वौ टंटोळै वांरा खुंजा।
चिड़ियां रौ अेक ढूळ निकळग्यौ है वांरै ऊपर सूं।
'सोनार-किलै' माथै घिर आई काळी घटावां
टुरिस्टां खोल लीनी है छतरियां
बिरखा रै स्वाद सूं अणजाण।

सोनार किलै सूं अळगौ थार रै पसराव
आपरै खेत री पाळ माथै ऊभै अेक करसै
खोल लीनी है पिरासियै सूं भिंज्योड़ी आपरी बंडी।
माटी री मैक भरतां आपरी फुरणियां
उण उगेरी राग मांड।
उडीकती बेकळू रौ बदळग्यौ है स्वाद।

रंगां सूं भविस बतावण वाळां रै बिचाळै
वधगी है बहस-
'स्वाद रौ रंग काळौ है' कै गोरौ!'
घणकरां रौ मत आसमानी रंग साथै हौ।
'समानता' रौ स्वाद बांटणियौ
गाळियां काढै हौ धनपतियां नै।

स्वाद मीडिया रौ चटकारां में
'टी.आर.पी.' सारू वै घड़ै
बिना हाथ-पग रा किस्सा।
स्वाद बूढापै रौ बंतळ में
बंतळ रै बिचाळै आ जावै बेटा

बेटां री आंख्यां सूं अलोप व्हेगौ है बचपणौ
तिड़कग्यौ है हेज रौ स्वाद।
जवानी स्वाद सोधै गळियां-सड़कां माथै
घर-आंगण उण सारू व्हेगौ है बेस्वाद।

'स्वाद' री सारी सड़कां अमेरिका कानी क्यूं जावै?
कांई सारी धरती व्हेगी है बांझ?
अेक तणियोड़ौ चैरौ विगोवै हौ अमेरिका नै।

'समै सगळा स्वाद बिगाड़ नाखिया है'-
चरचा चालै ही चौराहां रै ठीक अध-बीच।

'गिरस्थी रौ स्वाद बिगाड़ दियौ इण मैंगाई'
मैंगाई स्वाद बिगाड़ दियौ सरकारां रौ
संसद में चालै ही बहस मैंगाई माथै
नेतावां रै चैरां रौ बिगड़ग्यौ हौ स्वाद।

'बिग-बैंग थ्योरा' समझावता साईंस रा टीचर
समझावै हा-
'ब्रह्माण्ड भगवान रै नीं
भौतिकी रै सिद्धांतां सूं चालै।'
सुण'र स्वाद बिगड़ग्यौ हौ
'आस्था' अर 'बिस्वास' रौ।

जबान रै स्वाद में भर-खपग्या सगळा गिरजड़ा
पारसियां रौ धरम संकट में है।
पाठकां रै स्वाद में नमकीन भेळ रैयौ हौ
अेक अखबार।

म्हैं बचावूंला धरती माथै मिनखपणौ
घोसणा कीनी ही कवि आपरी कविता में
आपरै आखर रै स्वाद में रमियोड़ौ हौ कवि।

गाईड लेय आयौ हौ टुरिस्टां नै
सोनार किलै री बुरजां माथै

वौ फेरूं बड़ग्यौ हौ उणां री जेबां में
इतिहास रै रसीलै घोळ सागै।

अंधारै में चमकण लागा हा, गोरहरै किलै रा बुरज
टुरिस्टां री नीली आंख्यां में
उतरण लागौ हौ 'इचरज रौ स्वाद'।
'किण स्वाद रै पांण
सूतोड़ै इण थार रै सरणाटै में
रचियौ वां मिनखां
औ सोनलिया 'थार कंवळ'।
'जरूर पीवता व्हैला वै
पेप्सी कै कोका जैड़ौ कोई पेय।

सोनार किलौ त्रिकूट-पहाड़ी सूं करतौ बंतळ
लेवै हौ-
उणां रै इचरज रै स्वाद रौ स्वाद।
❖❖

'अपरंच' अंतरजाळ माथै

अबै आप 'अपरंच' नै अंतरजाळ (इंटरनेट) रै मारफत भी देख सकौ। राजस्थानी रा चावा-ठावा लेखक अर आलोचक डॉ. नीरज दइया (बीकानेर) 'अपरंच' रै अंतरजाळ अंकां रौ संपादन अर संचालन करै। अठै आप 'अपरंच' रा सगळा अंक पी.डी.एफ. लेय सकौ। अठै क्लिक करौ सा :

www.apranch.wordpress.com

अतुल कनक

आऊंजी-भाऊंजी को गीत

आऊंजी तौ बात बेई
साथ कोई चीते छा,
करम सूं सगत्यां ही आ बैठ्या भाऊंजी....

आऊंजी बोल्या कै
सूरज भळसावै छै
भाग ही न्हं फाटै
म्हां अशी जुगत करां तौ/
भाऊंजी नै हुळस'र
क्ही- सुणो आऊंजी!
बुण द्या म्हां सूरज के
अनै- कनै सरणाटौ/
प्हैली तौ हेत कौ
पतियारौ बंधावावां
फेर ऊं का म्हैलड़ा ईं
जा'र कतर्‌याऊं जी....

बायरो जे मूठी में
बांध ल्यां तो सगळा जस
अेक दिन आपणै ही
खातै मंड ज्यावैगा/
भाऊंजी की बात सुण'र
आऊंजी नै सीख दी
'थोड़ा भी चूक्या तौ
मूंडा भंड ज्यावैगा/
ईं सूं तौ चोखौ छै
थे उठी बांबी मं
हाथ द्यौ, म्हूं अठी
मंतर गुंजाऊं जी....

❖❖

3 ए-30, महावीर नगर विस्तार, कोटा 324009

हरदान हर्ष

गरीबी रा झाड़

गरीबी रा पेड़ नीं
झाड़ होवै
कंटीला
या फेर जळकुंभी
गुथंमगुथा
रिसता पोखर नदी नाळां में।

पनीली आंख्यां
सुपनां री जगां
वठै थोर उग आवै
सब्जा बागां बिचाळै
आतंक मचाती।
दो दिन कंवळी सरस झाड़
जड़ कट्यां उडै-फिरै
सींव लांघता
अंध दिसावां में।

भगुळां रै हाथ पड़्यां
बवंडर
बणै हमेस
हंसती आंख्यां री किरकिरी।

थक्या-मांदा
लू बिचाळै
उडता फिरै
गरीबी का झाड़
चूल्है री आंच सारू।

❖❖

ए-306, महेश नगर
जयपुर 302015

डॉ. रमेश 'मयंक'

डॉ. रमेश 'मयंक' रौ जलम 23 दिसंबर 1954 नै हुयौ। आपरी भणाई अेम.अे. हिंदी, अंगरेजी, अेम.अेड., पी.अेच.डी. तांई हुई है। डॉ. मयंक हिंदी अर राजस्थानी दोनूं भासावां में सास्ती लिखता रैवै। आप केई भारतीय भासावां री रचनावां रा राजस्थानी में अनुवाद लगोलग करता रैया है। केई पत्र-पत्रिकावां में आपरी रचनावां छपती रैवै। हिंदी में अनेक पुस्तकां रै अलावा राजस्थानी में 'सोनै रौ सूरज', 'मिनख री मुळक' अर 'सिरजण परखता आखर' नांव री पोथ्यां छप चुकी है। दोय पोथ्यां छपण सारू त्यार।

दरद

म्हैं नीं समझूं अरथ
'राम-नाम जपणा;
पराया माल अपणा'

म्हैं नीं पसारूं पगां नै
गूदड़ी सूं बारणै,
ठंड सूं बचतौ
गेलै आवूं-गेलै जावूं
सत-नियम
मिनख-मरजाद निभावूं

म्हैं अभावां री
जियाजूण री खैंचल करतौ
फाटोड़ा गाभां नै
बार-बार सींवतौ
संतोस री सीळी वायरी
कोनी मैसूस कर पावूं
जरूरतां री चीजां
कठा सूं, किस्तरै मोलावूं?

पण, फेर भी
उतारणौ पड़सी
अभावां री फाट्योड़ी गूदड़ी
वो दिन-
स्हैन करणै री हदां नै तोड़णै रौ
आखिरी दिन होसी
खतरां सूं खेलणौ पड़ैगा
नुंवा मारग खोलणा है तौ
दरद झेलणौ पड़ैगा।

कविता

कविता-
जीवण रा कुरुखेत में
रोटी री गीता

कविता-
जीवण-जातरा में
आवण-जावण रौ चक्कर
पेट-भूख सूं टक्कर।

रोटी

रोटी- रास रचावै
रोटी- नाच नचावै
रोटी रा खेल-खिलौणा
घणा-घणा सलौणा
सगळां री आड़ में रोटी है
जिकी गाडी रा पइड़ां सूं ई मोटी है।

बीतियोड़ा बगत में नारी

बीतियोड़ा बगत री नारी
पड़दा-घूंघटा में लिपटी
अ-अनार रौ नीं जाणती
रसोड़ा मांय चूल्हौ-चौकौ
फाचरी-छाणां-भूंगळी साथै
जिंदगाणी बितावती
आंख्यां-धुंवाड़ा सूं
आंधळाय जावती
जिंदगाणी- छाणां री भांत
कजळावती,
सासू-नणंद रा ताना तौ
सासरिया रा गीत-गाणा
घट्टी, परिंडौ, पिणघट
पाणी रौ बेवड़ौ
हमेस काम दर काम
बंधुआ मजूर सरीखौ अंजाम

कुण समझी-
उणरी कुंठा-दरद
सिसाड़ा रा इसारां नै
अपमान-धुतकारां नै

वा चिड़ी-चुप्प
गरदन नीची-अंधारौ गुप्प।

आज री नारी

आज
नारी हुयगी खास
भणाई रौ उजास
गोड़ावाणौ राज है
पाछै छूटग्यौ- घूंघटा रौ रिवाज है

साधन-सुविधावां सूं
काम-कमाई रा अवसरां सूं
तूटग्यौ जूनौ मिथक
पगां री रेत रौ

अबै इण सारू
रसोई में- गैस-कूकर
मिक्सी, फ्रीज, वासिंग मसीन है
टी.वी., रेडियो री दुनिया रंगीन है
पण-
पीजा-बरगर री संस्क्रति
केट-वाक तांई री प्रगति
धज्जियां उडावै
फैसन रौ भूत माथै चढ जावै
तौ-
हवा में उडण वाळौ
धम्म सूं नीचै आवै
दहेज देह रौ दानव
कन्या भ्रूणहत्या नै
घरेलू हिंसा- अत्याचार नै बधावै
चुनौतियां रा पहाड़ सूं
अगन परीक्षा सरीखा झाड़ सूं
मुगती सारू
मुट्ठियां बांधौ
मजबूत बणावौ इरादौ।
❖❖

बी-8, मीरां नगर
चित्तौड़गढ़ 312001

● *जात्रा-वृत्तांत*

पुष्पलता कश्यप

म्हारी गोवा जात्रा

अबकै मई रै महीनै में म्हारै गोवा, पूणै, लोनावाला, खंडाला, महाबलेश्वर अर शिरडी घूमण-फिरण री जचगी। जिकी रेलगाडियां में आरक्सण मिल्यौ वां में करवाय लियौ। आरक्सण लगैटगै डेढ महीनै पैलां करवाणौ पड़्यौ, क्यूंकै आं दिनां में गरमी री छुट्टियां हुय जावै अर सगळी गाडियां में अणमावतौ भीड़-भड़क्कौ रैवै। ठौड़ मिलणी अबखौ काम हुवै।

13 मई 2008 रा म्हारी जात्रा रणकपुर एक्सप्रेस सूं सरू हुई। जोधपुर सूं म्हे चढ्या। दूजै दिन 14 मई रा बांद्रा उतरगा। गोवा खातर म्हांनै कोंकण रेलवे री ट्रेन पकड़णी ही। आ ट्रेन सी.अेस.टी. (छत्रपति शिवाजी टर्मिनस) टेसण सूं जावै। इणरौ जूनौ नांव 'वीटी' है, टैक्सीवाळा ज्यास्ती करनै इणी नांव सूं ओळखै। टैक्सी करनै म्हैं वठै पूग्या। वेटिंग रूम में ठौड़ लीवी। वठै निपटनै सिनान-संपाड़ा कर्‌यां पछै नास्तौ कर्‌यौ। ट्रेन रात रा ही। म्हांरै कनै आखौ दिन पड़्यौ हौ। सामान क्लॉकरूम में मेलनै म्हे मुंबई घूमण-फिरण बेई निकळगा। मुंबई म्हे पैलां दोय बार गयोड़ा हा। सी.अेस.टी. (वीटी) सूं बस पकड़नै म्हे गेट-वे ऑफ इंडिया पूगा। आ जगै सी.अेस.टी. सूं घणी आगी नीं है। इंडिया गेट में म्हे बोट में बैठनै समंदर में अेक चक्कर लगायौ। वठै सूं बस पकड़नै जुहू चौपाटी पूगा। चौपाटी में घूम्या-फिर्‌या अर भेलपुरी नै मसालैदार चाय रौ आणंद लियौ। वठै सूं घूमता-फिरता म्हे हरे रामा हरे कृष्णा मिंदर देखण गया। मिंदर जुहू चौपाटी पाखती आयोड़ौ है। घड़ाईदार इमारती भाटै सूं बणियोड़ौ औ मिंदर सांतरौ अर देखणजोग है। जुहू सागर तट रै मारग में, वीं रै सांम्ही पाड़ै मच्छीघर है जिणमें अलेखूं किस्म री मच्छियां आपां देख सकां। इण सूं कीं ई आगौ नामी-गिरामी वानखेड़ै स्टेडियम आयोड़ौ है। स्टेडियम बारै भीड़ हुयोड़ी ही। वां दिना सुपर सिक्स रा मैच चालै हा।

घूम फिरनै पाछा बावड़्या जणै सिंझ्या पड़गी ही। टेसण बारै सिंझ्या रा सड़क री पटड़ियां माथै सजियोड़ै हाट-बाजार सूं जरूत रौ कीं सामान मोलायां पछै म्हे अेक आछै होटल में डटनै पेट-पूजा कीवी। टेसण पूगनै सामान लियौ अर कोंकण कान्या एक्सप्रेस प्लेट फारम माथै लाग्यां म्हे वीं मांय म्हारी ठौड़ ठावी कीवी। ट्रेन गोवा रै मडगांव तांई री ही। इणरौ जूनौ नांव मारगाऔ है। इण मारग में गाडी केई सुरंगां सूं हुयनै निकळै। रात रौ बगत हुवण सूं जावती

वेळा म्हे आ सुरंगां नै नीं भाळी। पण वापसी में, मडगांव सूं पूणै गया जणै गाडी नै अेक-अेक करनै आ सुरंगां सूं गुजरतां देखी। कोंकण रेलवै दुनिया री सै सूं लांबी ट्रेन है।

15 मई '08 मडगांव पूगनै म्हे टेसण पाखती होटल ग्रीन व्यू में अे.सी. रूम लियौ। कमरै में रंगीन टी.वी. हौ। होटल में लिफ्ट सेती अे.सी. बार अर रेस्टोरेंट रौ सुभीतौ ई हौ। होटल रै रिसेप्सन माथै घूमण-फिरण बाबत जाणकारी करयां म्हांनै ठाह पड़्यौ कै वठै सूं दो फरलाग आंतरै सूं लग्जरी बसां जावै। होटलवाळौ म्हांनै टिकट बुक करवाय लेवण री सलाह दीवी। वठै पूगनै म्हैं बात कीवी। बतायौ गयौ कै गोवा रौ दोय रोज रौ पैकेज है। अेक दिन नोर्थ गोवा अर दूजै रोज साऊथ गोवा। सुबै नव बज्यां सूं पैलां वठै पूगनै बस में मनचावी सीटां रोकणी हुसी। नौ-साढी नौ बज्यां छूट्योड़ी बस रात रा आठ-साढी आठ तांई पाछी लावै। हरेक ट्रिप सारू अेक सीट रा अेक सौ बीस रिपिया लागै। टिकटां करवायनै म्हे पाछा बावड़िया। होटलवाळौ म्हांनै कैयौ कै विसराम करनै आज आप कैनकोना खातर बस पकड़नै पैलोलेम बीच घूम आवौ, भोत सोवणौ सागर-तट है। उतरती वेळा बसवाळै सूं छेहली बस रौ टैम बूझ लिया। अगरजै बस चूक जावौ जणै मडगांव आवणवाळी किणी टूरिस्ट टेक्सी नै हाथ देयनै ढाब लीजौ। कैनकोना खातर बसां बाजार सूं हुयनै जायां होटल कामता पाखती म्युनिसिपल गार्डन रै सांम्ही बस अड्डै माथै मिळ जासी।

कमरै में बिसाई खायां पछै चाय लीवी अर हेठै उतरनै बस अड्डै कानी चाल व्हीर हुया। बस पकड़नै म्हे कैनकोना उतरगा। मडगांव खातर आखिरी बस रौ टैम म्हांनै साढै सात तांई बताईज्यौ। गोवा रा बीच दुनिया रा सै सूं खूबसूरत बीचां मांय है। पैलोलेम बीच घूम्या-फिरया। बारै आवतां अेक ठेलै माथै चाय सागै गरमागरम आलू रै बड़ां रौ टमाटर सॉस सागै सुवाद लियौ। आ ठेला-दुकान अेक लुगाई री ही। बावड़ता म्हांनै अबेर हुयगी ही। बस नाकै माथै पूगनै ठाह पड़ी कै स्यात छेहली बस निकळगी ही। मडगांव जावणवाळी किणी टूरिस्ट टेक्सी खातर म्हांनै खासी ताळ ऊभनै बाट जोवणी पड़ी। छेकड़ अेक टेक्सी आवती दीखी। हाथ देयनै ढाबी। वीं में चढनै म्हे मडगांव मांय बजार में उतरया। म्हारौ होटल वठै सूं साव नजीक हौ। रात पड़गी ही। घणकरौ बजार बंद हुयगौ हौ। टेक्सीवाळौ म्हांनै कैयौ कै अठै सै दुकानां बंद हुयां पछै ई दारू री खुली रैवै। अठै री कंटरी वाईन केजू फेनी घणी चावी। गोवा में दारू अर कैसिनो (जुवौ) रौ रिवाज मोकळौ। केजू फेनी काजू सूं बणै अर गोवा में काजू निपजै। केजू फेनी रौ मेडिकल उपयोग ई है। गरम करयां इणरौ अेल्कोहलिक अंश भाप बणनै उड जावै अर बाकी रैवै जिकौ जूनी धांसी अर दमा रै मरीजां खातर अक्सीर दवा है।

दूजै दिन 16 मई रा बगत माथै त्यार हुयनै म्हे नोर्थ गोवा टूर खातर लग्जरी बस में ड्राइवर रै दूजै पासै दोयवाळी आगली सीटां कब्जै कीवी। होळै-होळै आखी बस सैलानियां सूं भरीजगी। बस में गाइड सागै रैवै जिकौ माइक माथै सैलानियां रौ सुआगत करतां जरूरी निर्देश देवै। हरेक जगां खातर बगत री पाबंदी माथै जोर देवतां वौ कैयो, 'जित्तौ बगत आपनै उण ठौड़ सारू दिरीजै उणमें ई थांनै पाछौ बावड़णौ है। अठै गोवा में आम (सार्वजनिक) जगावां माथै

धूम्रपान करणौ, थूकणौ अर पेसाब करण री सख्त मनाही है। इण खातर अेक सौ रिपिया रौ जुरमानौ भरणौ पड़ै। लिहाजा इण बाबत सावचेती बरतीजै।'

जियां ई कोई देखणजोग ठौड़ आवती गाइड म्हांनै उण बाबत सैंग जाणकारी देवतौ। नोर्थ गोवा रै टूर में म्हे वैगेटोर बीच, अंजुना बीच, कैलनगुटै बीच रै अलावा फोर्ट अेगुअेडा भाळ्यौ। किलै में लाईट हाउस ई है। पुर्तगालियां रै राज रै टैम इण में कैदियां नै राखीजता। वैगेटोर बीच भोत व्हालौ अर चावौ है। अंजुना बीच पथरीलौ है। अठै बारै कानी अेक रेस्तरां में म्हे लंच कर्‌यौ। कैलनगुटै बीच 'समुद्री तटां री राणी' बाजै। गोआ में मांडवी, तीराकोलु साल, चापोश अर तालपोना जैड़ी छोटी-बड़ी नदियां है। अठै री आबादी 12 लाख है। आथूणै अरबसागर रौ मदमातौ नीलौ जळ, तौ उत्तर में कोंकण री हरी-भरी पहाड़ियां अर वन है। मांडवी नदी माथै बोट री सैर रौ लुफ्त लियौ जाय सकै। इण खातर अेक टिकट रा डेढ सौ रिपिया लागै। बोट रै डेक माथै कुरसियां लाग्योड़ी हुवै। आगै स्टेज माथै ऑरकेस्ट्रा अर लारै पाड़ै बार अर रेस्टोरेंट। रेस्तरां रै डागळै ई कुरसियां लाग्योड़ी हुवै। बोट सैलानियां सूं काठौ भरीज जावै। ऑरकेस्ट्रा माथै धुनां बाजती रैवै। धुनां माथै तीन गोवा रा फोक डांस (लोकनृत्य) अर अेक पुर्तगाली नाच हुवै। बिचाळै सैलानियां मांय सूं जोड़ा, जवान, छोरा-छोरियां अर टाबरां नै ई नाच वास्तै नूंतै। लोग नाच-कूदनै खुद आणंद-मौज लेवता दूजां रौ मनोरंजन ई करै। बोट नदी में चक्कर लगावती रैवै। ओ प्रोग्राम लगैटगै घंटै भर तांई चालै।

कैमरो सागै हौ, आखी जातरा में सैंग ठौड़, जगां-जगां यादगार सारू म्हे मोकळी फोटवां खींची। म्हे हरेक जात्रा में कैमरो सागै राखां जिणसूं यादगार पलां नै संजोया जाय सकै।

आगलै रोज 17 मई 08 नै साऊथ गोवा रौ टूर हौ। साऊथ गोवा में म्हे उण ठौड़ गया जठै अट्ठारवीं सदी रै गोवा रै गांव री पुनर्रचना कियोड़ी है। इणमें प्रवेस खातर डेढ सौ रिपिया अेक जणै रौ टिकट लागै। इणमें गोवा री गोल्डन सभ्यता री पारंपारिक धरोहर संजोयोड़ी है। इणरा दोय हिस्सा है, आर्ट गैलरी सारू पचास रिपिया अर पुरखा रै मिनी गोवा खातर सौ रिपिया। पण टिकट अेकै भेळा लेवणा हुवै। जूनै बगत रै गोवा में औ दरसायौ गयौ है कै किण भांत मिनख कुदरत सागै रैवतौ। पुर्तगाली जमींदारां रौ रैहन-सैहन, खान-पान रा तौर-तरीका, वांरी जमींदारी रा कामकाज, न्याय व्यवस्था आद रै सागै अठै रै मूल वासिंदा रै कारोबार, हाट-बजार, काम-धंधा अर जीवण रा मूंडै बोलता चितराम, मूरत्यां अर दरसावां रै माध्यम सूं उकेरीज्या है। पुर्तगालियां रौ राष्ट्रीय प्रतीक मुरगौ हुवण सूं आं इमारतां माथै मुरगौ थापित कियोड़ौ। दरूजै बारै कुंडी है, कुंडी नै जोर सूं बजायनै आवणवाळै गृहस्वामी नै आपरै आवण री खबर देवतौ। घर रौ सेवक छोटी ताखीनुमा बारी नै जिणमें ताड़ियां लाग्योड़ी, खोलनै आवणवाळै नै भाळ्यां पछै गृहस्वामी नै समचार देवतौ। आं भवनां में जूनी अेंटीक जिंसा जिकी वीं काल में बरतीजती, संजोयनै राख्योड़ी है। आं में रोसणी खातर लैंप, पाणी तातौ करण रा ठांव, बडी देग, छाजला, चक्की, हवा करण सारू हाथ रा पंखा, पलंग, बिस्तर, पैरण ओढण रा गाभा आद सै चीज-बस्त सामल है। इणमें पुर्तगाली जमींदारां री लुगायां रौ न्हावणघर है

जिणमें न्हावण रौ टब आद, ड्रेसिंग टेबल, घर री तहाड़त, टाबर रौ पालणौ.... रसोई जिणमें रसोई रौ सामान, डाइनिंग हॉल में डाइनिंग टेबल.... सुवण रौ कमरौ, कचैरी, तिजोरी आद सैंग है। अै इमारतां अेक तरै रा म्युजियम है। वठै अेक इचरजवाळी बात आ बताइजी कै अठै उण बगत रा चोर चोरी-छिप्यां नीं आवता। वै खबर देयनै आवता। घर रौ धणी कीं चीज-बस्त, गैणां-गांठा अर रिपिया-पईसा चोरां खातर घर रै अहातै में दरूजै बारै अेक ठौड़ मेल देवतौ। पछै घर रौ आडौ जड़ दियौ जावतौ। चोर माल लेयनै जावता परा। पण अगरजै वै संतुष्ट नीं हुवता तौ किणी ई रास्तै घर में दाखिल हुय जावता। इण मौकै घर रौ मालिक अर दूजा सदस्य मकान री छात माथै जायनै मोरचौ बांध लेवता। मकानां नै ठंडा राखण बेई लकड़ी री दोहरी छात बणती। घर में बड़तां ई छात मांय गन री नाळ खातर बण्योड़ा मोखा सूं चोरां माथै फायरिंग हुवती। आं म्युजियमां मांय टिकट देखनै बाड़ीजै। बारै चौकीदार तैनात है। हरेक बस रै ग्रुप सागै वठै री न्यारी-न्यारी महिला गाइड अंग्रेजी अथवा हिंदी मांय, जिण भासा री ग्रुप मंजूरी देवै उणमें सैंग विवरण देवती अठै रा सै कमरा अर ठौड़ दिखावै। बिल्डिंग रै बारलै पाड़ै अहातै में मोकळी जमीं है। इणमें अठै रा मूल वासिंदा रै जीवण-वैवार रा न्यारा-न्यारा दरसाव बणियोड़ा। लुहार, मोची, हाट-बजार, उधार अर लगान वसूलतौ जमींदार रौ कारिंदौ आद। काजू सूं काजू फेनी बणावण री प्रक्रिया। जमींदार री सवारी पालकी उठायां दोय आगै अर दोय लारै चालता कहार जिसा अनेकूं जीवंत दरसाव अठै परतख देखण नै मिळै। अै दरसाव उण कालखंड नै ओळावै। मांय शहद, अचार-मुरब्बा अर कीं दूजी छोटी-मोटी चीज-बस्त कुदरती जड़ी-बूंट्या आद री दुकानां ई लाग्योड़ी। अठै अेक कमरै में अेक बडौ जूतौ (बिग फुट) है। कैवत है कै अठै अेक महात्मा आयौ। वौ अठै तप करयौ। लोगां री सेवा करी। वांरै दुख-दरद रौ भागी बणियौ। वांरै संताप नै हरण रा कारज किया। इण संत री अठै अेक कहाणी है। औ फुट-प्रिंट उण महात्मा रौ है। बताईजै कै आपरौ जीवणौ हाथ इण फुट-प्रिंट माथै राखनै साचै मन सूं जे कोई मुराद मांगै तौ अवस पूरी हुवै। लोग अगरबत्तियां चास'र ई लगावै। अगरबत्ती बेचणियां अठै ऊभा रैवै। इण फुट-प्रिंट रै लांबै सै'क कमरियै सूं निकळनै आगै अेक लकड़ी रौ बांध अर पुळ-सो'क बणियोड़ौ। अठै केई भांत रा पुसप, भांत-भांतीला फळां रा अर दूजा पेड़-पौधा अर पंछीड़ा रा माळा ई है। आछौ-भलौ बगीचौ लाग्योड़ौ है। पाइप अर फव्वारा सूं सिंचाई हुवै।

अठै सूं व्हीर हुयनै म्हैं शांता दुर्गा मिंदर रा दरसण करया। औ शांति री देवी रौ मिंदर है। मिंदर भोत विसाल परिसर में अर शानदार बणियोड़ौ है। इणरै पछै मंगैसी मिंदर में भगवान शिव अर भगवान मंगैस रा दरसण करया। कैवीजै कै औ मिंदर लता मंगेशकर रै कुटुंब रौ बणायोड़ौ है अर अठै लता रा पिताश्री दीनानाथ मंगेशकर भजन गाया करता हा। मिंदर भोत भव्य अर देखणजोग है। मिंदर मांय पगोथिया चढनै जावणौ पड़ै। आखै मारग में ठेट मिंदर तांई प्रसाद, खाणै-पीवण रै सामान अर भांत-भांत री दूजी दुकानां ई लाग्योड़ी है। फळ-फ्रूट वाळा ई मारग में मोकळा बैठ्या रैवै।

वठै सूं धकै जूनै गोवा स्हैर मांय जिणनै पूरब रौ रोम कैवीजै, 16वीं सदी रौ संत फ्रांसिस जेवीयर चर्च देख्यौ। औ चर्च भोत विसाल, भव्य अर अपणै में अनूठौ-अजूबौ है। लांबै-चवड़ै परिसर में घड़ियोड़ा पत्थर सूं बणियोड़ै इण चर्च मांय प्रभु ईशू री सोनै री मूरत्यां है। डावी कांनी संत जेवीयर रै सरीर री ममी बणायोड़ी अेक ताबूत मांय महफूज राख्योड़ी है। इणरै सांम्ही ई अेक और विसाल अर भव्य चर्च है। आ ठौड़ अर इण रा मोवणा दरसाव देखतां ई बणै अर जीव सोरौ हुवै। इण चर्च नै वर्ल्ड मैन्युमेंट रौ दरजौ मिळ्योड़ौ है, आ घणी गरब री बात है।

इणरै पछै म्हे गोवा री राजधानी पंजिम यानी पणजी गया। मडगांव अर वास्कोडिगामा में रेल-मारग है पण पणजी में नीं है।

गोवा टूर मांय म्हे मीरामांर अर कोलवा बीच गया। मीरामांर सूं 17वीं सदी रै अेगोडा फोर्ट री झांकी अर सागै ई समंदर रै आरपार हुवती लाईट हाउस री बीम यानी शहतीर नै ई जोय सकौ। औ अरब सागर री कंवळी रेती रौ सागर-तट है। कोलबा बीच गोवा रौ गरब है।

गोवा भारत रौ सुरंगौ नै निराळौ टूरिस्ट प्लेस है। अठै हरेक मौसम में देसी-विदेसी सैलानियां री रेलमपेल लाग्योड़ी रैवै। गोवा नै टूरिस्टां रौ सुरग कैवीजै। नवंबर सूं जनवरी माह में अै ज्यास्ती आवै। वां दिनां होटलां में जगै नीं मिलै। यूं ई अठै होटल मूंघा है। मई रै महीनै में ई मौसम अठै इत्तौ गरम नीं हौ। तावड़ौ अवस आकरौ रैवै। समुद्री-तटां माथै उमस ई हुवै। पण बैवती मदमाती हवा री वजै सूं छायां में घणी गरमी मैसूस नीं हुवै। सिंझ्या पछै होळै-होळै मौसम ठंडौ हुय जावै। सागर-तटां माथै मेळा-मगरिया रा सा'क दरसाव रैवै। सिंझ्या पड़्यां रौनक बेसी देखण में आवै। समुद्री तटां माथै दुकानां मोकळी। खावण-पीवण अर दूजौ सै तरै रौ सामान अठै मिळै। माळा-मिणिया, सीपियां, घोंघा आद रौ सामान, गोवियन हेट्स, नारेळ रौ पाणी, जूस अर चाय-कॉफी आद री दुकानां ई लाग्योड़ी। बीच माथै मोटा-मोटा गेस रा गुब्बारा ई उडाइजै, जिका सूं अेक या दोय जणा आभै मांय उडै। इण सारू शुल्क देवणौ हुवैला।

गोवा में होटल व्यवसाय मोकळौ है। जमीं भोत उपजाऊ। थोड़ी जमीं हुवै तौ ई गुजारौ मजै में हुवै। अठै काजू निपजै। बजार में छिलकैवाळा काजू रा भाव दोय सौ साठ रिपिया प्रति कि.ग्रा. अर बिना छिलकै वाळै रा तीन सौ साठ रिपिया हा जदकै जोधपुर में पांच सौ सूं ऊपर रा भाव है। काजू री गुणवत्ता ई बेसी अर साइज ई मोटौ हुवै। अठै लुगायां बजार में काजू रा ओडा लेयनै ई बैठै। अै गिणती रै हिसाब सूं देवै, क्वालिटी सारू कठैई पचास रिपिया रा सौ तौ कठैई सित्तर रा सौ। पण अै काजू घटिया किस्म रा हुवै। दुकानां सूं पैकबंद काजू मोलावणा ई सावळ रैवै। गोवा में आम री केई अेक्सपोर्ट क्वालिटी हुवै, पण मूंघा घणा।

गोवा में महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु अर केरल री तुलना में भारत रै आथूणै घाट रा स्थल भोत कमती है पण औ हिस्सौ उत्तरादै अर दिखणादै हिस्सा नै मिलावण रौ महताऊ कारज करै। गोवा अंचल में पड़ण वाळै आथूणै घाट नै यूनेस्को री विस्व धरोहर स्थल सूची में

सामल करण बेई गोवा सरकार रै प्रस्ताव मुजब चमगादड़ री दुरलभतम प्रजाति 'द जाइंट इंडियन मास्टिफ' री अठै मौजूदगी इणरौ मुख्य आधार है। मधेई वन्यजीव अभयारण्य रै दायरै वाळौ औ छेत्र इण प्रजाति री, जिणनै ब्राउगटेंस फ्री टेल्ड बेट रै नांव सूं ई ओळखीजै, विस्व में अकूकौ आश्रय स्थल जिको है।

विदेसी सैलानी बीच माथला होटलां अर अठै तंबू आद में रैवणौ पसंद करै। बीच माथै विदेसी जनानियां बिकनी में पड़ी रैवै। बाघा बीच जिकौ च्यारूं कांनी सूं पहाड़ियां सूं घिरयोड़ौ है, वठै अै नजारा बेसी देखण में आवै। दिन रा अै मांय रैवै अर सिंझ्या पड़्यां बारै निकळ'र समुद्र रै किनारै आराम-कुरसियां में पड़ी रैवै। सत्तर रै दशक में गोवा हिप्पियां रौ ठिकाणौ हुया करतौ। आज देसी-विदेसी सैलानी अठै छुट्टियां मनावण आवै। गोवा रा मुख स्हैर है पणजी, वास्कोडिगामा अर मडगांव। गोवा साइट-सिईंग रौ पैकेज भलांई कठै सूं ई लेवौ, वै ई सागी ठौड़ दिखावै। पणजी राजधानी हुवण सूं ज्यास्ती मूंघौ है। इण सूं वास्को या पछै मडगांव में होटल लेवणौ ठीक रैवै।

गोवा री दुकानां अर शो-रूम्स में मॉर्डन लड़कियां आधुनिक पैरवास में काम करै। गोवा में हरियाळी सागै साफ-सफाई ई मोकळी है। गोवा किंग फिशर अर मैकडोवेल्स रा मालिक विजय माल्या रौ आवास स्थल है।

आथण रा दिन बिसिज्यां तांई म्हे म्हारै ठायै बावड़्या। आगलै रोज 18 मई नै म्हांनै गोवा एक्सप्रेस सूं पुणै निकळणौ हौ। कमरै पूगनै म्हे पैलां चाय पीवी। टी.वी. रा प्रोग्राम देख्या। पछै जीम-जूठनै सूयग्या।

❖❖

पुष्पांजलि भवन, जूनै डाकखानै रै लारै,
लक्ष्मीनगर, जोधपुर 342010 (राजस्थान)

बधाई

●राजस्थानी सिरजणा रा थम्ब पद्मश्री चन्द्रप्रकाश देवल नै इण बरस रौ बिड़ला फाउंडेशन रौ प्रतिष्ठित बिहारी सम्मान दिरीज्यौ है, आप औ सम्मान पावणिया राजस्थानी रा दूसरा लेखक है, इण सूं पैली डॉ. अर्जुनदेव चारण नै भी औ सम्मान दियौ जा चुक्यौ है, बधाई।

●श्री बी. एल. माली 'अशान्त' (जयपुर) नै मातुश्री कमला गोइन्का राजस्थानी साहित्य पुरस्कार, डॉ. मनोहरलाल गोयल (जमशेदपुर) नै रावत सारस्वत पत्रकारिता सम्मान अर युवा लेखिका सुश्री रीना मेनारिया (उदयपुर) नै किशोर कल्पनाकांत युवा साहित्यकार पुरस्कार दिरीज्यौ, मोकळी बधाई।

●बीकानेर री ऊरमावान महिला लेखिका श्रीमती मोनिका गौड़ नै वांरी पोथी 'हथेळी में चांद' सारू गौरीशंकर कमलेश पुरस्कार दिरीज्यौ, हार्दिक बधाई।

● *लघुकथा*

उर्मिला माणक गौड़

जीवण साथी

मिसेज वरमा री उमर आई कोई सित्तर बरसां रै अेड़ै-गेड़ै है। वा बिना चूक्यां दिनूगै बगीचा में घूमण नै जावती ही। उठै दूजा ई केई लोग आवता हा। अेक दिन उणनै अचाणचक भुंवाळी आई अर आंख्यां आडी रात आयगी ही। उण पछै तौ उणनै कीं ठा इज कोनी'क कांई हुयौ।

होस आयौ तौ वा सफाखाना में ही। हुयौ यूं कै उणनै पड़ती देख'र कविराजजी झट झाल ली। थोड़ी देर बगीचै री बेंच माथै सुवाण'र उणरै बायरौ घालियौ अर पाणी रा छांटा दिया, पण कीं ई असर नीं हुयां वै उणनै सफाखानै लेय'र आया।

डागदर सगळी तपास करनै बतायौ कै इणनै किणी बात रौ गम है जिकौ मांय रौ मांय खायां जाय रैयौ है। इणी कारण सूं इणरी आ हालत है। अबै इणनै अेकली मत छोडजौ!

कविराज जी पूछियौ, 'आप कठै रैवौ हौ? चालौ म्हैं थांनै घर तांई पुगाय देवूं। डागदर कैयौ है कै अबै इणां नै अेकली मत छोडजौ।'

तद वा कैयौ, 'म्हैं जावूंला परी। अबार पुगाय देवौला तौ कांई होसी, रैवणौ तौ अेकली नै इज पड़सी।'

कविराज जी उणसूं बातां करी तद ठा पड़ी कै उणरै आगै-लारै कोई कोनी। तद कविराजजी कैयो, 'थांरै तौ कोई है कोनी अर म्हारै होवतां थकां ई नीं रै बरोबर है। म्हैं अेकलौ इज रैवूं हूं अर काची-पाकी रोटी हाथां बणाय'र खावूं।' पछै कविराजजी कैयौ कै क्यूं नीं आपां दोनूं साथै-साथै रैवां?

'दुनिया कांई कैवैली?'

'दुनिया नै मारौ गोळी। आपां दुख पाय रैया हां, जद तौ अै कोई कीं नीं कैवै। दुनियां री सोचांला तौ आखी उमर यूं इज पड़िया-पड़िया सड़ता रैवांला अर मांय रा मांय घुटता रैवांला। पछै आपां कोई यूं इज नीं रैवांला। कोरट में जाय'र ब्याव कर लेस्यां।'

'इण उमर में ब्याव?'

'हां इण उमर मांय। यूं तौ आपां अेक-दूजै रौ दुख-दरद बांट नीं सकां। ब्याव रौ ठप्पौ लागियां पछै आराम सूं रैस्यां। आपां दोन्यां रौ ई इकलापौ मिट जासी। जवानी रा दिन तौ मिनख कीकर ई काढ लेवै, पण जीवण-साथी री असली जरूत तौ बुढापै रै मांय इज पड़ै। और कीं नीं तौ कम सूं कम अेक-दूजै रै सुख-दुख में आडा आस्यां अर बोलतां-बतळावतां बगत कीं सोरौ कटसी। आपां रिळ-मिळ काम करस्यां अर म्हनै ई रोटी सोरी हाथ आसी। म्हैं रोज नवी-नवी कहाणियां, गीत, कविता लिख'र थांनै सुणावतौ रैवूंला। आ बचियोड़ी जिंदगी तौ सोरी निकळसी।'

अर वा हामळ भर ली।

❖❖

द्वारा माणक तुलसीराम गौड़,
मुख्य प्रबंधक, बैंक ऑफ महाराष्ट्र
बालाजी भवन, सब्जी मार्केट, पनवेल (नवी मुंबई) 410206

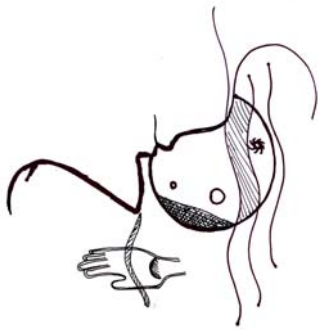

राजस्थानी भासा रै नवांतर साहित्य री अनूठी छमाही पत्रिका

मरुधारा

संपादक : पं. मधुकर गौड़

प्रकासक
मरुधारा
ए-302, ब्ल्यू ओशन-1, महावीर नगर, कांदीवली (प.), मुंबई 400067

उल्थै रौ राजस्थानी तिमाही छापौ

अनुसिरजण

संपादक : दुलाराम साहरण
सह संपादक :
उम्मेद गोठवाल, कुमार अजय
मोल : 25 रिपिया
प्रकासक
प्रयास संस्थान
प्रयास भवन, ताजूशाह तकियै रै सांम्ही, धर्मस्तूप, चूरू 331001

● *कहाणी*

मदन गोपाल लढ़ा

उदासी रौ कोई रंग कोनी हुवै

मोबाइल सूं बात करनै म्हारै अंतस में कीं सौरप बापरी।

ओळूं रै आंगणै केई लीक-लकोळिया दीसण लागग्या अर छिणेक में बगत रौ सुइयो सात बरस लारै जाय पूग्यौ।

सात बरस पैलां जद म्हैं भूमि नै लेय'र जैसलमेर गयौ। ब्याह पछै हनीमून खातर कठैई नीं जा सक्यौ पण केन्द्रीय विद्यालय संगठन कला शिक्षकां रै इंडक्शन कोर्स रै ओळावै म्हनै अर भूमि नै हनीमून रौ मौकौ दे दियौ। राजस्थान री सोनल रेत रौ समदर सदीव सूं म्हनै आप कांनी खींचतौ रैयौ है। बियां म्हारा पुरखा ई राजस्थान सूं उठ्योड़ा है। लगैटगै सौ बरसां पैलां म्हारा दादोजी रुजगार सारू कानपुर गया अर बठैई बसग्या। पापा रौ जलम यूपी रौ है पण म्हारौ परिवार अजै ई राजस्थानी सीर-संस्कार कोनी बिसर्‌या। म्हारै बडेरां रौ गांव झुंझुनूं जिलै में है पण कॉलानी रा लोग म्हांनै मारवाड़ी रै रूप में ई जाणै। इण भांत मरुभोम री जातरा रै मिस म्हनै आपरी जड़ां सूं जुड़णै रौ मौकौ मिल्यौ तौ भूमि नै रेत रा डूंगर अर गढ देखण रौ चाव हौ। म्हारै चित्रकार सारू ई जैसलमेर रौ उमाव कमती कोनी हौ। उण ठौड़ तौ हवा ई रेत री चादर माथै भांत-भंतीला चितराम कोरबौ करै। जैसलमेर रै जगचावै जैन मिंदरां, हवेलियां अर किलै री भींता माथै मंड्योड़ा चितराम देख्यां जीव सोरौ हुय जावै।

ओळूं रै केनवास माथै अेक उणियारौ

मरुभोम जुगां सूं कला री दीठ सूं घणी उपजाऊ रैयी है। चांदणी रात में लोक-संगीत री मैफिल सूं म्हारी आ धारणा औरूं पुखता हुयगी। पीढियां सूं संगीत-साधना करण वाळी लंगा-मांगणियार जातियां रा कलाकार आपरै सखरै हुनर सूं रंग जमाय दियौ। ठंडी रात में वांरौ सध्योड़ौ सुर रावणहत्थै सागै रळ'र इमरत बरसावै हौ, जिणनै सुण'र देसी पर्यटक तौ सुध-बुध बिसरणा ई हा, परदेसी ई चितबगना हुयग्या। म्हैं तौ अेक-दो बार पैलां ई अैड़ी संगत रौ आणंद ले चुक्यौ पण भूमि सारू औ साव नुंवौ अनुभव हौ। उणरौ उणियारौ इण बात री साख भरै हौ। ढळती रात में 'काळ्यौ कूद पड़्यौ मेळै में.....' रै उतावळै सुर माथै पेटी, ढोलक अर झींझा जैड़ै वाद्यां सागै लोकनिरत री धमाकेदार प्रस्तुति हुई तौ परंपरागत पैरावै में तीन बिणजारी

बालावां आपरी कला सूं जाणै बगत नै थाम दियौ। भूमि बांरै निरत नै आपरै मोबाइल में रिकार्ड करण सारू ऊभी हुयगी। चाणचकै म्हनै लाग्यौ कै जीवणै पासै नाचणवाळी छोरी, जिणरौ नाक-नक्स इत्तौ सांचै ढळ्योड़ौ हौ कै फुठरापै में बा तीनां में सिरै ही, फगत नाचै ही। उणरै उणियारै माथै गीत मुजब कोई भाव कोनी निगै आया। म्हारौ कलाकार जागग्यौ अर म्हैं उण छोरी माथै निजरां टिकाय दी। सांचाणी बा छोरी फगत सुर-ताल मुजब हाथ-पग हिलावै ही, पण उणरौ उणियारौ साव सपाट हौ- भावबायरौ। म्हैं उणनै इकलंग तकावै हौ। अेक-दो बार उणसूं निजरां ई मिली तद म्हनै लाग्यौ कै उणरी आंख्यां में अेक भांत री सून्याड़ पसर्‌योड़ी है। गीत पूरौ हुयां चौगड़दै ताळियां री गड़गड़ाट गूंजी तौ म्हारौ ध्यान तूट्यौ। लोगां ऊभा हुय'र कलाकारां नै बधाई दीवी तौ ई उणरै उणियारै मुळक तकात को दीसी नीं।

जळसै रै समापन पछै म्हैं अर भूमि होटल बावड़्या तौ ई म्हारौ मन उण अणजाण छोरी री उदासी री फिकर में घुळै हौ। सूवणै सूं पैलां म्हैं आ बात भूमि नै बताई तौ वा जोर सूं हांसी, 'अै आर्टिस्ट अैड़ा ई हुवै कांई ? अेक चैरौ देख्यौ अर उणमें रमग्या।'

'थूं ध्यान राखजै। कदी कोई फूठरौ उणियारौ म्हनै सागै ई ले जा सकै।' म्हैं उणनै छेड़ण सारू कैयौ।

'म्हनै पतियारौ है खुद माथै अर उणसूं बेसी ई थांरै माथै।' वा छिड़णै री ठौड़ गंभीर हुयगी अर म्हारै नजीक आयगी।

आगलै दिन भखावटै म्हां किलौ देखण नै गया। किलै रा भाखर आपरै सखरै सिल्प रा बिड़द बखाणै हा। औ भव्य दरसाव म्हारै चित्त चढग्यौ तौ म्हैं किलै रै अैन साम्हीं ड्राइंग स्टैंड लगाय'र कूंची-कलम काढ लीवी। म्हैं किलै रौ स्केच ई मांड्यौ हौ कै वा छोरी दीसगी। उणरै सागै अेक बडेरौ मिनख हौ, जकौ थम-थम'र रावणहत्थै सूं सुर काढै हौ। म्हैं भळै उणरै उणियारै कांनी जोयौ- सांवळौ रंग, काजळ काढ्योड़ी मोटी आंख्यां, काळा बाळ अर गोळ चैरौ। म्हैं चित्रकारी छोड'र बड्डै सूं कीं सुणावण री अरज करी। उण सुर-ताळ रै सागै अेक लोकभजन सुणायौ तौ म्हैं सौ रौ नोट झिलाय उणरी कला रौ मान कर्‌यौ। चाणचकै म्हारी मगजी में अेक आइडियौ आयौ अर म्हैं बड्डै सूं उण छोरी रौ चित्र बणाणै री इजाजत मांगी। वौ अेकर तौ आगै-लारै हुयौ पण पछै मैनताणै पेटै सौ रिपिया आगूंच दियां राजी हुयग्यौ। म्हैं उण छोरी नै साम्हीं चौकी माथै बैठाय दी अर कलम सांभ लीवी। कांई ठा क्यूं म्हैं म्हारौ मत्तौ फोर लियौ अर स्केच री ठौड़ अेक कार्टून कोर दियौ जिणमें उण छोरी री दोनूं चोटियां ऊंची ऊभी दीसै ही। इण कार्टून नै देख'र वा ई हांस पड़ी। उणरै उदास उणियारै माथै म्हैं पैली बार मुळक देखी।

'कांई नांव है थारौ ? थारौ नाच घणौ फूठरौ है।' म्हैं कैयौ।

'घर रौ नांव इमरती है पण लोग मुस्कान रै नांव सूं ओळखै।' वा बोली।

'म्हैं थारौ उणियारौ जोय लियौ है। आगलै साल आसूं तद थारौ फोटू बणाय'र लाय सूं।' म्हैं उणनै जोवतां कैयौ।

'आगलै बरस तौ म्हैं अठै कोनी मिलूं। म्हनै मुंबई जावणौ है- सिनिमा में। अठै नाच'र तौ पेट कियां भरीजै पण उठै रिपियां रा बा'ळा बगै।' उणरै बोल में सपनां सळसळावै हा।

इणरै पछै अेक महीनै में दसूं बार उणसूं मिलणौ हुयौ। भूमि री तौ वा भायली ई बणगी। हरेक मुलाकात में म्हैं उणरी उदासी रा रंग ओळखतौ रैयौ। औ अकारण कोनी हौ क्यूंकै 'खुस चीजां' करता म्हनै उदास दुनिया बेसी दाय आवै। स्यात इणी'ज कारण उदास दुनिया री लूंठी चितेरी अमृता शेरगिल म्हनै सै सूं ज्यादा चोखी लागै। म्हारै मांय कीं अैड़ौ है कै म्हैं उदास दीसण वाळी चीजां सूं भच जुड़ जावूं। कॉलेज में भणतां ई म्हैं पेंसिल सूं सपाट धूसर जमीं, कच्चा टापरां अर बोदी झूंपड़्यां वाळा गांव अर कांसै जैड़ा रंग वाळा टाबरां रा चितराम कोरबौ करतौ।

बंतळ सूं ठाह पड़्यौ कै वा छोरी आपरी जिनगाणी सूं बेराजी ही। उणरी चावना ही कै किणी मोटै स्हैर में जाय'र आपरी निरत-कला सूं खूब धन कमावै।

'आ मुंबई जाय'र कांई करसी?' अेक सिंझ्या भूमि म्हनै पूछ्यौ।

'बार में नाचसी।' म्हैं कैयौ।

म्हारै आभै रौ है औ चांद

इमरती तौ मुंबई पूगी का नीं पण चार बरस पछै म्हैं अवस मुंबई आयग्यौ। देस रै नामी 'राज स्टूडियो' में आर्टिस्ट रै रूप में काम रौ मौकौ मिल्यौ तौ म्हैं भूमि रै नीं चावता थकां ई केन्द्रीय विद्यालय में आर्ट टीचर री नौकरी छोड'र मायानगरी आ पूग्यौ। म्हारै मोकळै दबाव रै बावजूद भूमि बैंक में क्लर्की कोनी छोडी अर आपरै पापा कनै लखनऊ रैवण लागगी।

मायानगरी री माया तौ निराळी ई है। सिनेमा, संगीत अर कला री दुनिया रौ तौ औ तीरथ ई है। मुंबई आवणौ म्हारै सारू अेक सपनै रौ साच में बदळणौ हौ। राज स्टूडियौ में काम करतां छठै महीनै म्हारै चितरामां री अेकल प्रदर्शनी लागी तौ कला री दुनिया में म्हारी हाजरी मंडी। इण प्रदर्शनी में 'रेत राग' नांव सूं म्हारी अेक पेंटिंग खासी चरचा में रैयी जिकी म्हैं मुंबई सूं बावड़'र बणाई ही। इण पेंटिंग में रेत रै अथाग समदर बिचाळै अेक लूंठै गढ री पृष्ठभूमि में आभै में चांद-सितारां कांनी ताकती छोरी री तस्वीर ही। म्हैं चेतै करयौ इण छोरी रौ चितराम बणावतां थकां म्हारै मन में कठैई वा बिणजारण अवस ही- वो ई नाक-नक्स, सांवळौ रंग अर लांबा काळा बाळ। सै सूं खास बात उणरै उणियारै बापरयोड़ी उदासी ही, जिकी पेंटिंग में तो परतख दीसै ई ही म्हारै काळजै ई बसगी। कुदरत ई कलाकार नै अैड़ी खामचाई सूंपै कै जिका चितराम उणनै दाय आय जावै, वै सदीव सारू उणरै हियै मंड जावै।

आं चितरामां नै म्हारी उम्मेद सूं बेसी सरावणा मिली। अेक चावा समीक्षक तौ 'कलम-कूंची री रेत-राग' सिरैनांव सूं अेक छापै में समीक्षा ई लिखी।

सरावणा किणनै कोनी सुहावै? कला-जगत में म्हारी खेचळ नै मान मिल्यां म्हैं घणौ हरखायमान हुयौ पण म्हारी आंख्यां तौ वां चितरामां री प्रेरणा नै सोधै ही। केई बार चावता थकां ई म्हैं भळै जैसलमेर नीं जाय सक्यौ अर नीं मायानगरी में उणसूं भेंट हुयी।

भरोसै रौ नांव है धरती

बगत रै पगोथियां चढतां अेक-दो बरस भळै बीतग्या। स्टूडियौ रै काम सूं म्हारौ

भुवनेश्वर जावणौ हुयौ। बठै म्हारा मेजबान हा अेस. सावण कुमार। कुमार भुवनेश्वर रै अेक ओड़िया अखबार में पत्रकारिता करै अर बांरी जोड़ायत प्रीतिधारा जवाहर नवोदय विद्यालय में आर्ट टीचर ही। बरसूं पैलां देहरादून में अेक ट्रेनिंग में प्रीतिधाराजी म्हारै भेळा हा। वांरौ टाबर डेढ बरस रौ हौ सो मदद सारू कुमार साब ई आगै आया। बठै कुमार साब सूं म्हारौ मिलणौ हुयौ जिकौ बगत परवाण तगड़ै बेलीपै में बदळग्यौ। असल में वै ई म्हारै दांई घूंट रा सौकीन हा। लगैटगै अेक पखवाड़ै तांई म्हां आथण सागै ई बैठता अर मोड़ै तांई हथाई घोटता। म्हारै ब्याह में ई धणी-लुगाई दोनूं पूग्या अर दो दिन रुक्या। वां केई बार म्हनै जोड़ै सूं बुलायौ पण आवणै रौ जोग आज बण्यौ अर वौ ई अेकलौ।

कुमार साब दो दिन पैलां राजस्थान सूं बावड़्या हा। वै अेक ध्यान सिविर में आबू गयोड़ा हा। मुलाकात में सिविर री मोकळी बडाई करै हा।

म्हैं दोपारां तांई काम सलटाय लियौ। म्हारी वापसी री फ्लाइट आगलै दिन आथण री ही सो अबै हथाई जोगौ हौ। बातां सरू हुयी तौ जूनी ओळूं नै अंवेरतां खासौ बगत निकळग्यौ। प्रीतिधाराजी आपरै बाळपणै री केई नुंवी बातां बताई। आथण सूखी जावतां देख'र म्हारी आंख्यां उतरयै सवाल नै बांचतां कुमार साब बतायौ कै आध्यात्मिक संस्थान सूं जुड़्यां पछै वां सौगन ई ले ली। वां दिनूंगै म्हनै ई आश्रम में जावणै सारू नूततां कैयौ, 'कम विद मी टुमारो मोर्निंग। रियली बहुत सुकून मिलता है। दीदी का लेक्चर सुनकर सारा टेंशन दूर हो जाता है।'

'अरे मेरे जैसे नास्तिक का वहां क्या काम? फिर टेंशन दूर करने का अपना तरीका दूसरा है, वही पुराने वाला।' म्हैं मुळकतां कैयौ अर दिनूंगै री मीठी नींद बचावणै सारू वांनै टाळणौ चायौ।

'आई नो वैरी वेल, सालों तक मैंने भी तो वही तरीका अपनाया है। बट नो मोर, अब तो वो क्या बोलते हैं- आत्मा को जगाने की धुन लग गई है। अेनी वे, आप तो आर्टिस्ट हैं। क्या पता कोई अच्छा आइडिया मिल जाए। इसी बहाने से ही सही, मगर चलिएगा जरूर।' वांरै इण तरक अर अपणायत साम्हीं म्हैं ढीलौ पड़ग्यौ।

आगलै दिन भोरानभोर म्हैं अर कुमार साब आश्रम में पूग्या तौ वठै लांबै-चवड़ै हॉल में सैकड़ूं लोग मून बैठ्या ध्यान करै हा। बारणौ ढकणै सूं हॉल में अंधारौ हुयग्यौ अर झीणौ बेकग्राउंड म्यूजिक ई गूंजण लागग्यौ। साम्हीं भींत माथै अेक मोटी फोटू टंग्योड़ी ही जिणमें लाल रंग रौ बिंदू पळकै हौ। फोटू रै हेठै अेक पाटै माथै दो लुगायां बैठी ही- धोळी झक्क धोती पैर्यां। बठै बैठतां ई कुमार साब ध्यान में मगन हुयग्या अर म्हैं ताका-झाकी में। ध्यान पूरौ हुवतां ई हॉल में उजास पसरग्यौ। कुमार साब होळै-सी बतायौ कै अबै प्रवचन हुवैला। बांरै मुजब औ प्रवचन परमात्मा रौ लिख्योड़ौ है। इणनै लगोलग सुण्यां आपां खुद री आतमा नै ओळख सकां। आतमा नै ओळख्यां सगळा भरम दूर हुय जावै अर परमातमा सूं सीधौ गनौ बण जावै। सज्जै पासै बैठी लुगाई जद ओड़िया भासा में प्रवचन सरू करयौ तौ म्हारै कीं पल्लै कोनी पड़्यौ। म्हारौ ध्यान खंबै पासै बैठी लुगाई कांनी गयौ। सांवळौ रंग, मोटी आंख्यां, सांचै में ढळ्योड़ौ नाक नक्स। म्हनै लाग्यौ कै वा लुगाई कठैई देख्योड़ी है। कठै कानपुर, मुंबई का बीजी किणी ठौड़? चाणचकै म्हारै काळजै खड़कौ हुयौ। अरे, आ तौ इमरती है। जैसलमेर में नाचण वाळी बिणजारण, जिण माथै म्हैं चितरामां री अेक पूरी सिरीज ई बणाय दी ही। इणरै

पछै कांई प्रवचन हुयौ, म्हनै कीं ठाह कोनी पण म्हारौ ध्यान तौ उणरै उणियारै माथै ई थिर हुयग्यौ। म्हनै देख'र अचंभौ हुयौ कै अजै ई उणरै उणियारै वा सागण उदासी पसरयोड़ी ही। पण वा अठै कीकर ? कांई औ म्हारौ भरम है ? उणनै तौ जैसलमेर में हुवणौ चाइजै का मुंबई रै बार में। इण दिखणादै राज्य में वा कीकर आय सकै ? फेर वा तौ गाणौ-बजाणौ जाणै। अैड़ा प्रवचन सूं उणनै कांई मतलब ? अै आतमा-परमातमा रा राज उण कीकर जाण लिया। सवालां सूं म्हारौ अंतस छुलग्यौ पण म्हैं मरयां ई आ मानण नै त्यार कोनी कै वा इमरती कोनी, कोई दूजी है।

प्रवचन पूरौ हुयां 'ओम' री गूंज सागै सगळा ऊभा हुयग्या। कुमार साब लोगां सूं मिला-भेटी में बिलमग्या अर म्हैं मंच रै नैड़ै पूगग्यौ। सारै जावतां ई म्हारौ पतियारौ भाखर दांई ठोस हुयग्यौ।

'इमरती! आप इमरती ई हौ नीं ? ओळखौ म्हनै ?' म्हारै सवाल सूं अेकर तौ वा चिमकी पण म्हनै देख'र धीरज धार लियौ।

'हां, इमरती ई हूं। जद आप इत्ता बरसां पछै ई कोनी भूल्या तौ म्हैं कीकर कोनी ओळखूं। कांई आज भळै म्हारी फोटू कोरस्यौ ?' उण पूछ्यौ।

'म्हारौ काम ई चितराम कोरणौ है। पण थूं अर अठै ? अै धोळा बागा कीकर धार लिया ? थूं तौ मुंबई जाय'र नांव अर दाम कमावणौ चावती फेर..... ?' म्हारी उंतावळ हरफां में उतरगी।

'भोत लांबी कहाणी है आ। आप तौ फगत इत्तौ ई जाण लेवौ कै कदी तौ दुरभाग मिनख नै फोड़ा घालै, कदी खुद मिनख दुरभाग नै तेड़ौ देवै। कांई कमी ही म्हारै जैसाणै में! अम्मा-बाबौ, घर अर बगतसर रोटी स्सौ कीं हौ। अेवड़ियौ हौ तौ कांई हुयौ, मोट्यार ई हौ, जिणरै सागै बाळपणै में म्हारौ ब्याव हुयौ। पण म्हैं धरती रौ भरोसौ तोड़ दियौ तौ भटकणौ लाजमी हौ।' वा बोलती-बोलती थमगी अर छात कानी देखण लागी।

'पण कीकर ?' म्हैं सवाल करयौ।

'मुकलावै री रात म्हैं घर सूं भाज'र मुंबई पूगगी। भाज्यां पछै ठाह पड़्यौ कै आ दुनिया कित्ती छळगारी है। फेर पूना, नागपुर, औरंगाबाद कठै-कठै कोनी भटकी। आर्केस्ट्रा में गायौ, होटलां में नाची। कांई-कांई कोनी देख्यौ-करयौ। म्हारै धोरां में गरीबी तौ है पण अैड़ी भूख....।'

'तौ पछी क्यूं कोनी गई ?' म्हैं बिचाळै ई पूछ्यौ।

'पाछौ जावणौ म्हारै मंजूर कोनी हौ, क्यूंकै घरवाळां नै तौ आगै ई घणा फोड़ा घाल दिया, अबै फेर बांरै घावां सूं खरूंट उतारणै में कांई सार है। कूवौ-खाड करणै री त्यारी में ही कै करुणा दीदी मिलग्या। वां धोळा गाभा ई नीं दिया, नुंवौ जीवण दे दियौ। अबै मुगती री साधना ई जीवण रौ मकसद है।' कैय'र वा चुप हुयगी।

'पण कैड़ी मुगती ? अै तौ सै....।' म्हारी बात पूरी हुयां सूं पैली ई वा बिचाळै बोल पड़ी।

'म्हैं मानूं आपरी बात। मुगती री ठाह नीं, पण आ जूण तौ सोरी कट जासी। खैर जावण दौ आं बातां नै, आज थे अेकला कियां ? मैडमजी सागै कोनी आया कांई ? कदैई वांनै ई ल्यावौ प्रवचन में।' उण कैयौ अर किणी रौ हेलौ सुण'र मांयनै गई परी।

उणरै गयां पछै ई म्हैं सागण ठौड़ कोनी हौ। उण रा बोल घिर-घिर म्हारै मांयनै गूंजै हा, 'म्हैं धरती रौ भरोसौ तोड़्यौ तौ पछै भटकणौ तौ लाजमी हौ।' कांई आ बात म्हारै माथै ई लागू कोनी हुवै ? भूमि सागै आयोड़ै आंतरै, अणबोलै अर म्हारै कांनी सूं तलाक री कार्रवाई रा सगळा चितराम आंख्यां साम्हीं खिंचग्या। औ दुरभाग नै साम्हीं पगां नूंतौ नीं तौ पछै कांई है ? इमरती दांई म्हैं ई तौ भटकै हौ ठौड़-ठौड़। क्यांरी तिरस ही आ- नांव का धन री ? नीं म्हैं धोळा नीं धार सकूं। म्हैं अेक कलाकार हूं अर कलाकार तौ जीवण नै भोत प्यार करै। म्हनै पाछौ जावणौ है। मन में औ भाव जलम्यौ तौ आंगळ्यां मत्तै ई मोबाइल में भूमि रौ नंबर सोधण लागगी।

❖❖

144, लढ़ा निवास, महाजन, बीकानेर (राजस्थान)

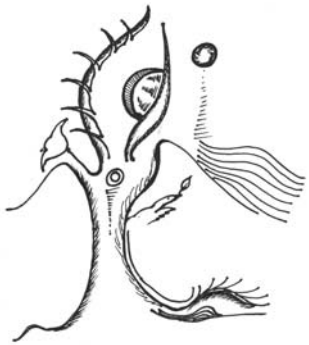

राजस्थानी री तिमाही कथा पत्रिका

कथेसर

संपादक

रामस्वरूप किसान, सत्यनारायण सोनी

सुल्क : सालीणौ 100 रिपिया, पांच बरसां रौ : 400 रिपिया

प्रकासक

कथेसर प्रकासण

परलीका, वाया गोगामेड़ी

जिला : हनुमानगढ़ (राज.)

राजस्थानी री तिमाही पत्रिका

राजस्थली

संपादक

श्याम महर्षि

सुल्क : पांच साल रौ 400 रिपिया, आजीवण : 1000 रिपिया

प्रकासक

राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति

श्रीडूंगरगढ़, जिला-बीकानेर

राजस्थान

कुमार अजय

कुंराणा सुपना

मती सोच हेटै जांवतै पांणी रै नाप पेटै
थारी सोच होयगी बोदी
इण माणस-मारणै बगत मांय
बुझै हाल तिरस मिनखां रै लोही सूं।

मती सोच छीजतै डूंगरां पेटै
है इण बगत मांय अणभांतीला दुखां रा डूंगर
जिणां रै दूजै पसवाड़ै
ऊगै हरमेस सुखी जूण रौ
रातौ सूरज।

रूंखां री गिणत माथै मती कर चितार
नीं सोच छिंया तावड़ौ
इण माड़ै बगत मांय
कठै बिसांई लेवण सारू
दो छिण।

मती चेतै कर सूखती नदियां नै
अर भूल उणरै आलै कांठै नै
क्यूंकै
बसै रोजीना अेक नुंवी नदी
आपणै नैणां
अर
आंसुवां रै ओळावै
करै आपणी आली पडळ।

पून भलांई नीं चालै
क्यूंकै वा चालै जदै
आवै उणरै साथै
कुंराणा सुपना।

❖❖

सहायक जनसपंर्क अधिकारी
जिला सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय, चूरू

●●

दुष्यंत जोशी

मिनखपणौ

थूं आपरी गरीबी सारू
मालक नै
ओळमौं नीं
लखदाद बोल
स्यात
थारी गरीबी परोटै
थारौ
मिनखपणौ।

❖❖

चावना

थूं चावै
थारौ कदी नीं हुवे
निरादर
थूं
खुद बण
खुद रौ कदरदान।

❖❖

उप संपादक 'टाबर टोळी'
हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी
हनुमानगढ़ जंक्शन 335512

बिहारी शरण पारीक

बोली इमरत, बोली ज्हैर

सींचौ चायै आठूं फैर,
फूलै नहीं पीपळी कैर।

कियां निभै बतावौ आप,
समदर बीच मगर सूं बैर।

बसी कसायां बीच मनाय,
बकरा की मां कद तक खैर।

तारा दीखै माझल रात,
विपदा में धोळा दोफैर।

मौत गादड़ा की जद आय,
भाग्यौ आवै सामौ स्हैर।

बगत पड़्यां ज्यूं आय न काम,
बां अपणां सूं चोखा गैर।

आवै जावै रीता हाथ,
कुण ल्यावै ले जावै लैर।

यार 'बिहारी' मीठौ बोल,
बोली इमरत, बोली ज्हैर।

❖❖

61, गोपी गोविन्द, माधव नगर
दुर्गापुरा रेलवे स्टेशन के सामने
जयपुर-18 (राजस्थान)

दीपचन्द सुथार

छा बसंत जावतौ

पल-पल अणमोल-
इण बात नै सगळा जाणै
फेरूंई
अणदेखी करता
सड़कां री भीड़ मांय
नित धक्का खावता रैवै
नीं जाणै-
कित्ता जनमां री
तिरसी जिग्यासावां री
तिरस-
बुझावण नै
अर-
धुंधला सुपनां मांय
रंग भरण रै वास्तै।
पण अै रंग
बरसाती इंदरधनुस री भांत
दीख'र रैग्या।
अबै पछतावै रै गेलै
पगथळ्यां रै छालां नै पंपोळता
सोच रैया है कै
जे इणरौ
मोल अर तोल जाण जावता
तौ जीवण बगिया मांय
छा बसंत जावतौ
सौरभ रै
सुरीलै सुरां सूं
भूलै-भटकां नै गेलौ
विकास रौ मिळ जावतौ।

❖❖

पृथ्वीराज रौ थड़ौ, माळियां रौ बास
मेड़ताशहर 341510, जिला-नागौर, राज.

समरगाथा

●*हिन्दी री लांबी कविता*

राजेश जोशी ❖ उल्थाकार : पारस अरोड़ा

राजेश जोशी रौ जलम 18 जुलाई 1946 नै हुयौ। हिन्दी री सगळी चावी-ठावी पत्रिकावां में आप लगोलग छपता रैया है। मार्क्सवादी विचारधारा सूं जुड़ियोड़ा जोशी री अबार तांई केई पोथ्यां छप चुकी है, जिकां में पांच कविता संग्रै, दो कहाणी संग्रै, तीन नाटक, दो आलोचना री पोथ्यां अर अेक आख्यान- किस्सा कोताह। 'इसलिये' पत्रिका रौ संपादन ई कियौ।

पतौ : 11 निराला नगर, भदभदा रोड, भोपाल (म.प्र.) 642003

अेक

फौलाद उणरै लोही री आवाज सूं झणझणावै
गूंजै है पाखाणी पगथळिया
रूंखां री नसां झणझणावै
आकास गंगा रै गुंबद सरीसै नीलै कान में गूंजै
परबत रै होठां सूं फूटती
नदियां री गतिसील कवितावां।

निरत करै है लैरां
हवावां गावै बली रौ उन्मादी गान।
आभै कानी मूंडौ उंचायां
दिसावां री रणभेरियां बाजै
बाजै है
बाजै है
डगर....डगर....डम....डम....डम
पिरथी रौ अधगोळ नगाड़ै ज्यूं बाजै है।

माटी रै आंगणै नौरता मांडै है
आदिवासी तावड़ी।

सात रंगां रा घोड़ां वाळौ रथ दौड़ावतौ
फैरावतौ आपरी राती धजा
उत्तरायण व्है रैयौ है सूरज।

निकळगौ है मुगती रौ जोधा
उणरै रगत री आवाज सूं झणझणावै है फौलाद

मां सूं अलग कर
जठै गाडी ही दाई मां उणरी आंवळ
जमीं री सतै नीचै
मीलां तांई धधकै है कोयलौ
माटी री म्यान में उत्तेजित है
अगनी री लपलपावती तलवार
धरती रा गरभ में दिन पूरा कर चुकौ है
अगनी रौ पूत!

ऊंदरां रा वां बिलां कनै
न्हाक्या हा जठै उण आपरा दूध रा दांत
अेक पूरी सेना ऊभी है
अटल इरादां रा सिरस्त्राण अर
साच रौ लोह कवच धारयां
हथियारबंद जनवाहिनी!

औ सुभ-मौरत है
सुनैरी जुआं रै संहार रौ सुभ मौरत!

मैदानां कानी बधै है जातरू चिड़कलियां
केवड़ा री साखावां री ओट में उदै व्है है
रोसणी री अेक नुंवी किरण!!
❑❑

दो

दिसावां री आस्तीनां में घाल्या
गोडां सूं ई नीचै तांई जावती

आपरी भागसाळी भुजावां
ताण्या जिमनास्टिक री मुद्रा में
अर द्रिढ़ता सूं उंचायां
आभै सूं अड़तौ माथौ
अेक भाखर हौ सोना रौ।

सिरजणा अर प्रकरती रौ पिता हिरण्यगरभ
सोनलिया इतिहास!

विसाल पंख खोल्यां अेक सोनेरी हंस हौ
चांच में मक्की रा दाणां ज्यूं चमचमावता
मोती लियां, लियां मोतियां रौ भंडार
पिरथी री परकमा करतौ
पारदरसी परसेवा री बूंदा ऊपर
मोती चढावतौ
चढावतौ धोळा गुलाब
भर देवतौ हरेक देही नै
गंध अर गीत सूं।

घर आंगणौ अर बरामदौ
गेला गळियां अर सड़कां
सिनानां करती सोनलिया तावड़ी सूं।

पाकोड़ी फसल जिसी
सरबती गेंवां रा दाणा जिसी
मकिया रा बाळां जिसी
सोनलिया तावड़ी।
सोनलिया तावड़ी गिन्नियां जिसी
भरीज जावती, खणखणावती ही
आतमा री जेब में!
●●

झूठ! कांई सैं कीं झूठ
बुढ़ी लुगायां री गपोड़ा भरती कहाणियां रौ संसार
अेक सेखचिल्लियाना सपनौ
कांई कोरौ अेक सतरंगी गीत

भूलण सारू
कीं पलां तांई आपरौ त्रासद जथारथ ?

नीं-नीं प्रतीकां में बदळतौ, ढळतौ बिम्बां में
पौर-पौर आघौ व्हेतौ, व्हेगौ अणबिस्वासू
काल्पनिकता री हद तांई
वौ आखरौ-आखर साचौ अतीत
अतीत रौ जथारथ।

चेतना रै साथै-साथै आया जिणरा चितराम
पीढी-दर-पीढी तांई लगौलग चलतौ रैयौ
जिणरौ गीत!
●●

'रगत सूं ई वत्ती जूनी नदियां'
जिकी देख्यौ पैलौ सूरज
आपरी करोड़ ल्हैर आंख्यां सूं
देख्यौ फूटतौ थकौ पैलौ बीज
देख्यौ अेक नुकीलौ भाठौ फेंकता
हिंसक जिनावरां रै खिलाफ
मिनख
जद पैलम-पैल मुगत किया हा
आपरा हाथ!
बरछै सूं कठोर अर बळवान हाथ
जिकां भाठां री आंधी जेळ सूं
मुगत करायनै लाया हा आग
अर पाणी री हथेळी माथै खोली ही
जिका आपरी पैली नाव।

हाथ
सोध अर ईजाद में लाग्योड़ा
हाथ कीचड़ सूं लप्पालोळ
दलदल नै उलीचता, सुखावता अर पाटता
अेकमेक कर माटी नै देता सरूप
बरतण अर मकान रौ!

लकड़ी रा लट्ठा नै चीरता आरा
हाथ कुल्हाड़ी जिसा
हाथ कुदाळां जिसा
हाथ बरमां जिसा
उतरता धरती री अजाणी गुफावां मांय
काढनै लावता खनिज तत्त्व
ढाळता नुंवी दुनिया
तांबा पीतळ अर फौलाद री।

हाथ गोताखोर
उतरता समदर रै गरभ में
लावता मोती तेल अर लूण।

करड़ी मैणत में लाग्योड़ा, मगन अर धुनी हाथ
हाथ मधुमाख्यां जिसा
हाथ रेसम रा कीड़ां जिसा
हाथ कपास रा फूलां जिसा
हरेक देही सारू
कातता धुनता अर बुणता वसन
अै बुणकर हाथ!

हाथ अनेक आंगळियां वाळा सूरजमुखी जिसा
सूरज रै साथै चालता थका
हरेक आंगळी रै पेरवै माथै लियां आंख
सपना में डूब्योड़ी।

मिनख रौ सै सूं सुंदर सपनौ
सपनौ स्वस्थ सजी-संवरी दुनिया रौ
सपनौ परी देस री कहाणियां जिसौ
सपनौ हाथी दांत रा रमेकड़ां जिसौ
सपनौ सरल लोक गीतां जिसौ
सपनौ सरोद री संगीत लैरियां जिसौ

सपनौ फूलां री नींद जिसौ
सपनौ घास मैदान रै हरियळ गीत जिसौ
सपनौ सेव री गोळाई रौ, नारंगी आग रौ, प्रेम रौ, लुगाई रौ
सपनौ द्रोब री झीणी लिपि रौ, कीताबां रौ, कसीदां रौ
कलाक्रितियां रौ।

सपनौ निरत रौ, उमंग रौ, उत्सवां रौ
सपनौ घर रौ, फानूस रौ, चीजां रौ
सपनौ किलकारियां रौ, खिलखिलाहटां रौ, रमेकड़ां रौ
सपनौ डूंगियां रौ, नावां रौ, जहाजां रौ।

लगातार गंध सूं गमकती दुनिया रौ सपनौ हौ
वां हाथां में।
संन्यासी चिड़कलियां बांटती ही बीज
धरती री कोख नै
तितलियां पांखां माथै पराग केसर लियां
हरेक पल नुंवा फूलां नै जलम देवती
उडती ही अठी सूं उठी।
सपनै अर मैणत में डूबा वां दो हाथां बिचाळै
जलम ले रैयी ही नुंवी दुनिया
अेक नुंवी कल्पना, अेक नुंवौ विचार
लेवता हा आकार..... उठै।

'अेक कबूतर री पंख छांव में सूतौ हौ आकास'
जद कदैई टेढी होवती कुदरत री आंख
के अंधारै में कोई बनपसु जागतौ
निकळता लोग गुफावां सूं
सगळा लोग सगळा लोगां सारू।
वै लोग हा
आभै जिसी आंख्यां अर आरसी जिसी आतमा वाळा लोग
अर सोना रौ अेक भाखर हौ
सोनल हंस
हिरण्यगरभ
जिकौ सगळां रौ हौ.....सगळां सारू हौ।
❑❑

तीन

पंजा उलटा हा जादूगरणी रा
अर अेक हाथ री आंगळियां माथै चीतै जिसा नुकीला नख हा

रात रा काळा जंगळ में वा जद परगट व्ही
धधकण लागा नखतर, सितारा सिलगण लागा
डागळै री भींतां माथै रोवण लागी मिन्नियां
टाबरां री नींद रोवण लागी
अेक कुरज चीसळी पाड़ती
रात नै आरंपार चीरती निकळगी।

अंधारी रात में आपरा लोही भरया पग धरती
बधती रैयी जादूगरणी
पितरां अर देवतावां नै न्यूतण
आभै तांई भेजण नै पीळा चांवळ
लगायोड़ी निसरणी सूं उतरी
अेक अपसुगनी आवाज।

उतरयौ चमड़ै रा दस्ताना पैरयां
ज्हैर सूं सनीज्योड़ौ अेक नीलौ हाथ
पांसळियां में चक्कू ज्यूं धंसतौ थकौ!

चटक-चटकनै बळण लागौ
हाडकियां रौ फासफोरस
सितारां सूं तूटनै पड़ियौ अेक फानूस
अर स्हैद सरीसी गाढी अर मीठी नींद
किरची-किरची व्हेय'र बिखरगी।

सोनलिया नेजै ज्यूं थरथराई चांदणी
अर हत्यारी छांवळियां हींडण लागी चारूं कानी।
आंख्यां बार-बार देख्यौ
अचरज सूं, बेबिस्वास सूं
हाथां में हथकड़ी अर पगां में बेड़ियां ही।
लोह सूं लोह टकरीजण री अपसुगनी आवाज सुणी

कान बार-बार सुणी
असह पीड़ा सूं, बेबिस्वास सूं।

कोरी कतरणी मत बजा टोकै नानी
सूनौ सरोतौ बजावण सूं क्यूं टोकै मां?

लड़ाई रौ अंदेसौ वा काळी कैवत
वा काळी आवाज
घात लगायनै बैठा चिड़ीमार रै जाळ ज्यूं पड़ी ही
मुरगियां माथै जिकी सेवती ही
अंडां में आगली सुबै।
चिड़ियां माथै
जिकी नुंवा जलम्या टाबरां री चांच में चुग्गौ दे रैयी ही!
कबूतरां माथै जिका गुणगुणाय रैया हा
पवनां नै किणी साज ज्यूं बजाय रैया हा
मोरियां माथै
जिका टेकरियां माथै चढ्योढ़ा बादळां नै बुलाय रैया हा
माछळियां माथै
जिकी ऊजळौ अर वेगवान करती ही जळ नै
नदियां माथै
जिकी सींचती माटी री देही अर पाळती दरखतां नै
लीला घोड़ां रौ रथ दौड़ावता वरुण माथै
पड़ियौ वौ जाळ
अर पसरतौ गयौ सगळी पिरथी माथै
जिकी मां रौ हांचळ ही
जिणसूं दूध रा झरणा बैवता हा।

फौलाद री काळी नसां वाळौ वौ जाळ
जिणमें पासविक प्रवरती रौ काळौ रगत बैवतौ हौ
पड़ियौ अर जकड़तौ गयौ परौ
हथोड़ा हळ अर कलम री कलाई नै
पसीनै रा मोरां नै
जातरा रा पगां नै

संवेदना नै, दीठ नै, अकल नै, स्याही नै
जकड़तौ गयौ परौ
रंगधनुसां नै, हिलता रूमालां नै
गिणतियां नै
सूरज चांद अर ग्रहनामी दिनां नै
दिन में सांस नै थकान मांय बदळता लोगां नै
जिका टिमकी तारां अर मिरदंग री तरंगा माथै
मगन हा निरत अर गीत में

तारां ज्यूं चमकीली पाणी सूं भरी तळावड़ी
जिणरी लैरां में बडेरां री ओळूं
हिबोळा लेवती ही
अर तट माथै हथेळियां खोल रैयौ हौ
अेक नवजात टाबर
वा काळी आवाज
भै री पड़छावळी ज्यूं पड़ी
उणरी निस्छळ आंख्यां मांय।
❑❑

चार

हरेक मूंडै सूं कान तांई। कान सूं मूंडै तांई। मूंडै सूं कान तांई
आवाज दर आवाज दर आवाज दर आवाज
आवाज रै हरेक चैरा लारै
उणरी अेक आतमकथा है!
धूड़ रा बग्गूळियां अर झाड़-झंखाड़ लारै छिप्योड़ी
तिलिस्म री पेचदार सीढियां अर अदीठ दरवाजा
निकळनै आई ही जिणसूं
इतिहास री सै सूं वत्ती चालाक
वा वारदात!

ज्हाज तट माथै आयनै रुक्यौ हौ
जिंदगानी रा नुंवा व्याकरण अर नुंवी दुनिया री
खोज रौ बखाण लियां जबान माथै
आंख्यां में लीलौ कांइयांपणौ अर हाथां में
जाळ अर रस्सियां लियां
औजारां अर हथियारां सूं लैस।

अचाणचक अचाणचक अचाणचक
अंधारै नै बींधता थका ऊठ्या हजार-हजार भाला
ज्हैर बुझिया तीर अर सणसणावती गोळ्यां
अर चारूंमेर बिखरगी
अधनागी कत्थई ल्हासां, कत्थई ल्हासां टाबरां री।

चकरघिन्नी ज्यूं घूमण लागौ आकास
दूणी तिगुणी रफ्तार सूं घूमण लागी घड़ी री सुइयां
पागलां ज्यूं चकरघिन्नी खावतौ
गूंजतौ रैयौ अेन नवजवान सैनिक रौ सवाल

व्हाय..... व्हाय..... व्हाय..... ?
अेक जंगळी लुगाई टाबर री ल्हास चेप्यां
जंगळी हवा ज्यूं दौड़ती रैयी
अठी-उठी !

उठै मारीज्यौ अेक बूढौ रींछ
चट्टान जिसी उणरी ल्हास काळी रात नै चीरती
चीरती थकी सगळी पवित्र मानतावां नै
अेक बारूदी धमाकै जिसी चिंघाड़ साथै पड़ी
पड़ती 'ज गई।

जंगळ री काठ आंख्यां देखती रैयी सै कीं
अचुंभै सूं चुपचाप
कारण ?
कारण जाणणै सारू ऊठी सवालिया आंख्यां माथै
चढाय दीवी काळी पट्टियां
लंबी अंधारी सुरंग में
धकेलीजिया लोग
बांधीज्योड़ा, कैद कियोड़ा, देस निकाळौ दियोड़ा लोग !

ऊपर ढळवां अर ठंडौ काळी सीमेंट रौ आकास हौ
साफ हौ मैदान चालाक इरादां सारू

घंटाघर री चौमुखी घड़ी में
बज रैयौ हौ वांरी इंछावां रौ बगत
तीखा मजबूत जबड़ा
चालाक लीली आंख्यां अर नुकीला पंजां वाळी जुंआं
रेंगनै निकळी
बाळां भरी मरयोड़ै रींछ री खाल सूं
अर चारूंकानी सूं घेरनै
चारूंमेर सूं चढी
सोना रा भाखर माथै!

सै कीं नै कुतरणै अर गिटकणै में सिमरथ
जूट री मोटी अर लंबी रस्सियां जिसी आंत वाळी
जुंआं पूरै भाखर नै गिटगी।
सोन-मिरग ज्यूं पळकण लागा वांरा सरीर
दैत्याकार व्हेती गई
व्हेती गई
दैत्याकार सुनैरी जुंआं!
●●

काळजा माथै पत्थर राखनै भाखरां देख्यौ
औ दुखदाई दरसाव
सै कीं देखती वां गुफावां री आंख्यां में
ज्यूं री त्यूं चितराम सरीसी लिख्योड़ी है
आज ई वा त्रासदी!
आंक्योड़ी है आज ई ज्यूं री त्यूं
सुनैरी जुआं री वा पैली तस्बीर
बगत री आंख में ठैरयोड़ौ
थरथरावतौ वौ काळौ आंसू
तिड़कती काळी माटी
तरेड़ां में दफन व्हेती सुनैरी तावड़ी!
आज ई ज्यूं री त्यूं टंग्योड़ी है वा डरावणी सून्य री तस्बीर!

ताड़ रा पत्ता वाळी छत सूं
फूटतौ धुऔं नीं हौ
अन्न-जळ री गंध नीं ही
नीं ही मिरच-मसालां री धांस

सिला-लोढी रौ संगीत नीं हौ
जबान कटिया रूंख, पंख कटी पवनां
पाळौ खायोड़ी फसल जिसी काळी तावड़ी
भूख अर मौत री काळी छांवळी ही
माथां पर नाचती थकी।

अर सुनैरी जुंआं ही जिकां रै जबाड़ां में
मिनख रै रगत रौ स्वाद लागग्यौ हौ!
❑❑

पांच

म्हैं अेक अंधारै जुग रौ दस्तावेज हूं
गुलाम जुग रौ काळौ इतिहास
अेक कूणौ फाटोड़ौ कागद काळी स्याही में लिख्योड़ौ
बेड़ियां, हथकड़ियां अर जेळां रौ निरमाता लवार
पैलौ खाती म्हैं
निरमाता सिंघासण रौ
जिकौ होळै-होळै कुंदौ व्हेगौ
बळदां नै नाथण रौ, गुलामां नै बांधण रौ
आजादी रै खिलाफ उण चौपायै रौ निरमाण
अेक खूंखार जिनावर री जलम-तिथी है।

कांई म्हैं अेक कमीण रचेता हूं?
अंधांधुंध सोध री ललक में आंधौ
अेक अबोध अपराधी जिकौ
सपना अर ग्यान रै सत्यापन री उत्सुकता में
भेळी करी ही हाडकियां अर जलम दियौ हौ
उण बाघ नै
जिकौ सगळां पैली म्हारी इज हत्या करी ही?

अेक क्रूर ठहाकौ गूंजै
रस्सियां उछाळ-उछाळनै हंसै जहाज माथै चढियौ
कोलम्बस
भाखर सूं उतरतौ वास्को डी गामा हंसै
अेक मक्कार हंसी!

म्हैं इज हूं जनक उण आदमखोर चौपाया रौ
चीखै अेक सफीट नागौ मिनख
हां म्हैं, म्हैं इज हूं निरमाता उण सिंघासण रौ
आयनै बैठी ही जिण माथै वै सुनैरी जुंआं
खुद नै भगवान रौ दूत कैवती
भगवान रौ हुकम कैवती आपरी आवाज नै।

भगवान! चारूंकानी जिणरै
आंधी आस्थावां रौ अंधारौ हौ
जिणरा मौरां माथै हल व्है सोसण रौ गणित
अर पक्का व्है पाया सत्ता रा।
●●

म्हैं गवाह हूं निजरां देखी बात रौ गवाह
हवा में लैरावतै कसाई रै छुरा रौ
तूटनै बिखरतै जळपात्र रौ
पूंछ वाळै सितारै री मौत रौ
मरुथळां अर दळदळ में बदळतै घास रै मैदान रौ
बांव तूटी दिसावां रौ, गोडा भागोड़ै भाखर रौ, नीलै चक्कू रौ
बांव माथै काळी पट्टी बांध्योड़ी सवार रौ, मुरगै री मौत रौ!

म्हैं गवाह हूं
सांप रै विस-दंस रौ, चंदणबन री बेबगत मौत रौ
पर्सीपोलिस अर नालंदा सूं उठती नीली अगन जीभां रौ
जंगळ रा घावां रौ, रथ रा दागां रौ, उखल्योड़ी नालां रौ
हवा में हिरण री बली रौ, कुणाल री आंख्यां रौ
सुकरात री मौत रौ।

गवाह हूं मैराबदार ऊंचै म्हैल में
जुद्ध अर योनी रै उणमाद में डूबी
सुनैरी जुंआं रौ!

अेक खूनी तलवार ज्यूं उतरी जिकी
अंकुरावती धरती रै लीलै धवन्यालोक में
बीजासय नै चीरती, भ्रूण री हत्या करती थकी
खाल उतारती बिरछ रै बिस्वास री

अंधारा होठां में गंदली दंत-ओळ ज्यूं चमकती
भूस्वामिता!
अेक कटीलै कोड़ै ज्यूं पड़ी
फाल लारै चालतै बळदां नै हांकतै
धोबां-धोबां बीज सूं माटी री कूख भरतै
करसां रै मौरां माथै
अन्न री आतमा माथै
गन्ना रै हरख माथै
चावळां री दूध मुंडाळी हंसी माथै!

खासै आंतरै तांई तिड़कती गई परी जमीं
खेत तरेड़-तरेड़ फाटतौ गयौ
मरग्योड़ी आंख्यां ज्यूं धौळा-धट्ट व्हेगा बादळा
पाखाण रै घरै रूठनै पाछी गई परी नदियां
पाणी री सूखी पगथळियां में पड़ी
ढोर-डांगरां री ल्हासां!
रूंख-उखड़नै पड़ियौ खाई में
आदमी निरासा री सून्य में
तारा भाखर माथै
हळ
अपंग व्हेयनै पड़ियौ खेत में!

पण नीं रुक्यौ, नीं रुक्यौ, नीं रुक्यौ सिलसिलौ
नीली पड़ती रैयी देही, लपलपावता रैया, बिजळियां रा कोईड़ा
गरदनां कटती रैयी, गिलोतिनां पड़ती रैयी
क्रूरता रै मगजबिहूण माथै में ऊग्या नुंवा सींग
पाछी टंटोळीजी पूंछ री हाडकियां मिनख री देही में!

अर हळ रौ जुऔ चढाय दियौ
उण किसान लुगाई री गरदन माथै
जिणनै आगलै दिन रै बळीतै सारू छाणा थेपणा हा
गूंदणी ही माटी अर छाबणी ही भींत
तिड़कणै सूं पैली
नीपणौ हौ आंगणौ अर बसाळी

मांडणी ही रंगोळी
कूटणौ हौ धान अर अनाज पीसणौ हौ!

मानता सारू इंदर री
बांझ धरती रै गरभ धारण सारू
करीजी निरवसन!
●●

कोढी मानतावां री हजार आंख्यां
दुरगंध फेंकती रैयी चारूं कानी
अर अेक निरवसन नारी
भाख फाट्यां खेत में हळ खींचती रैयी, खींचती रैयी
खींचती रैयी खेत में खपण तांई
तूटनै बिखरण तांई नाचती रैयी लुगाई
तलवार सूं खंडित मांग में रगत रेख लियां
रणवासां में भेळी करीजी लुगायां
जौहर करती रैयी!
नगाड़ां रा हाकां में चिरळावती रैयी
चितावां माथै चढती लुगायां!
बीमार्‌यां झेलती रैयी, धुंअै में घुटती रैयी लुगायां!

लुगायां लुगायां लुगायां
जीत री संपत्ती में, मांस री चीज में बदळीजी लुगायां
खुल्लै बजार में बेचीजी अर खरीदीजी लुगायां
आगलै सवाल सूं रोकीजी गार्गी
व्यभिचार रै कळंक में त्यागीजी
दरसण अर न्याव सूं मोल-बिहूण करीजी लुगायां
स्तन अर योनी में अरथीजती विग्यापित लुगायां!
●●

अेक काळौ पानौ हूं, अेक काळी कहाणी हूं म्हैं
अेक चीसळी
सईकां सरीसी लंबी, काळी रात रै आर-पार
बरछै ज्यूं गुजरती थकी
मादरजात नागी अर काळी चीसळी!

चीसळी उण आंधै राजा री
जिणरी पातळ में पुरस्योड़ौ भोजन
झपटनै लेय जावती सरपदेह चीलां!

चीसळी उण काळै गुलाम री
जिणरा गळा में घालीज्यौ लोह रौ भारी कड़ौ
अर अेक मसक पाणी साथै भेजीज्यौ
सोना री खानां अर रेगिस्तानां में

गोरां रै मनोरंजन सारू
जिणरी पीड़ादाई मौत जरूरी ही!

चीसळी उण मिनख री
जिकौ इण सारू जीवतौ जळाईज्यौ कै वौ अछूत हौ
उणरी छींयां पड़ी ही अेक बामण री साल माथै
अर वौ पाणी पियौ हौ अेक सारवजनिक कुंवै सूं।

चीसळी!
लगोलग अकाळ में दम तोड़तै मिनख री
बाढ में बैयग्यै डोकरै री चीसळी
चीसळी! पीळौ सितारौ लगायां
उण यहूदी टाबर री
जिकौ ठंड अर भूख सूं ठिठरीजतौ थकौ
दम तोड़ण सूं पैली
आपरी आडी-तिरछी लिखावट में लिख्यौ हौ
.....हिटलर.....
❑❑

छै:

रंग रोगन, रबड़ अर सेल्यूलाइड सूं प्लास्टिक सर्जरी री
दुनिया तांई
लगोलग चलतौ थकौ नाटक, निरत अर सासण
बदळता मुखोळां री चालाक सूझ-बूझ है
दिमाग रा सांधां में राख्योड़ौ चक्कू
जिणरा निरदेसां सूं आपरी कारवाई करै।

जूट अर कपास रौ कारोबार वाया बासवनां रै
रोटरी अर सिलेंडर मसीनां सूं गुजरतौ
अखबार री सिकल में पड़िया करै
रोजीना दिनूंगै आंगणै में!

बजार भाव सूं उपजी भासा
अर सैनिक समझौता में मिळियौ घुन खायोड़ौ गेऊं
रचै है पीळी फाइलां रौ जंतर-मंतर
उठै, बैठै स्याही री चिड़िया
सरपट भागै है कागद रा घोड़ा
अर भूल-भुलावां में भटकता-भटकता तोड़ै है दम

लाल फीतां सरीसी जीभ
चाट जावै सगळा सपना
चिड़ियां चुग जावै खेत
रेत इज रेत बिखरै
अेक मरुथळ रचती थकी!
साढी छै घंटां रौ तिलिस्म
गोळ गोळ गोळ घूमै घाणी ज्यूं
रस धोळा रवां में ढळतौ
धोळी इमारतां में पूग जावै
के धोळा देस में!
खालीपौ खिरै अेक धुंअै घिरी बस्ती में रोज सिंझ्यारा
गूंगौ रीढी झुकी हाडकां रै पिंजर जिसौ
धुप्योड़ा कपड़ां में बैठौ डर
देख्या करै
आपरा ऊजळा दाणां माथै काळौ डाकौ
मून धार्‌यां चुपचाप!
●●

औ सामरथ हीणता रौ बोध
घुन खायोड़ै गेऊं री उपज है के जूट भासा री

जिकौ चुण-चुणनै खाय जावै सगळी चिनगार्‌यां

अर पसरावै अंधारौ
मिनख रै अेड़ै-छेड़ै
ऊभौ कर देवै भै रौ कारागार!

वा भासा, भासा नीं अेक पळपळावतौ चक्कू है
जिकौ जूट काटतौ-काटतौ काटै
ग्यान अर संवेदना री नाड़ियां
बांटै मिनख नै टुकड़ां में
अर म्हांणै मांय उडती चिड़कल्यां चुराय ले जावै
अर बंद कर देवै हवा अर तावड़ै में खुलती
हरेक बारी!
●●

'वै' अेक वरग माथै भूख सूं
अर दूजै माथै भासा सूं वार करै
अर दिमाग रा सांधां नै चवड़ा करता थका
मिनख अर मिनख रै बिचाळै
अेक खाई में बदळ देवै!

प्रसासण री कुड़सी में राखी वांरी देही
अर सिक्कै में राख्यौ माथौ
औ बंट्योड़ौ व्यक्तित्व
वांरै जादू रौ सै सूं मोटौ करिस्मौ है।
जिकौ कठैई चोट व्हेतां इज
चारूं कानी सूं सरू करै अेक सिलसिलौ
सूरज ग्रैण अर चंदर ग्रैण सूं मिनख ग्रैण तांई
पसार देवै अंधारौ, घटाटोप अंधारौ
कै हाथ नै हाथ नीं सूझै!
●●

दिन-रात खदबदीजै है बस्तियां
न्योन लाइट ज्यूं लग-बुझ करै पल
पलांस में बदळै
सून्य टिलोड़ी री पूंछ में। पूंछ रस्सी में। रस्सी गीध में।

गीध झपटै चारूं कानी

चारूं कानी जादू है ! करिस्मौ है ! चमत्कार है !!
चमत्कार काच रा टुकड़ां रौ। रंग रोगन रौ। सैल्यूलाइड रौ।
टकसाळ रौ। छापाखाना रौ।
जिकौ हरेक बार बदळै
सिक्का में राख्योड़ै सिर रौ सिणगार
कदैई पैरावै सींग, कदैई पैरावै ताज
महाराज मूंछ गिरायनै बादसा बणै
जनता रौ खिदमतगार !
अर कदैई सफाचट चैरा अर बिना ताज
अेक लोकप्रिय जननायक
जिणरै मौरां लारै
अेक तीन चैरां वाळै जिनावर री खूंखारी मौजूद है !

सांयती, जनतंत्र, स्वतंत्रता, देसप्रेम
उत्पादन, उद्योग, करसण, कारोबार
रोटी अर रोजगार
चाबी वाळी तिजोरियां बोलै
सिक्कै री खणखणावती, झिलमिलावती आवाज में
अर आपरै नुकीलै नखां वाळै पंजां तांई अंकित
तीन सेरां रा चार पग
करै सावधान !
●●

देही कुड़सी में, माथौ सिक्कां में, कठै राख्योड़ौ है वांरौ जीव ?
मायानगरी री पग-पग पसरी माया में
कठै राख्योड़ौ है वांरौ जीव ?
कोयल रौ अंडौ कागलै रै घोंसलै में
कमेड़ी रा घोंसला में सांप
सांप में है सुनैरी जुंआं रौ जीव
ज्हैर भर्‌यौ है जिणरा आगला पोला दांत में
आंख में
आंत में
ज्हैरीली है उणरी पड़छांवळी
चांदणी रात में उणरै उडण रौ मतलब
अेक भरी पूरी आबादी रौ लकवाग्रस्त व्हेणौ है

कुंडली मार्‌यां
फण काढ्यां
डर्‌योड़ौ अर संकाळू
वौ रात-दिन जागै
जागै उणरी सुरक्सा पंक्तियां
चाक चौबंद अर हथियारां सूं लैस!
बंदूकां। तोपां। मसीनगन। अर टैंक
जहाजी बेड़ा। पनडुब्बियां। अर मारक हवाई जहाज
बम। नेपाम। हाइड्रोजन। अर अणुबम
न्यारी-न्यारी ताकतां वाळा, न्यारा-न्यारा मोरचां माथै
जळ-थळ अर हवाई सेनावां
सजै है विसाळ जुळूस
करीजै
समुंदरी अर भूमिगत विस्फोट!
तिलिस्म अर सुनैरी जुंआं री रक्सा सारू
अठै सूं उठै तांई सज्यौ-धज्यौ
हरेक खुड़कै माथै कान टिकायां, आंख गडायां
ट्रिंगर माथै हरदम आंगळी राख्यां
चौकस
ताम-झाम!
अर अेक गुप्त तंतुआं रौ जाळ
नसां ज्यूं पसर्‌यौ है हरेक घर में
हरेक मिनख री पड़छांवळी में बैठौ है
अेक गुप्तचर!

❑❑

सात

मिनख-मिनख भूखौ हौ अन्न कठै गयौ
मिनख-मिनख तिरसौ हौ जळ कठै गयौ
मिनख-मिनख नागौ हौ कपास कठै गयौ
मिनख-मिनख लूलौ हौ हाथ कठै गयौ
मिनख-मिनख धड़ हौ माथौ कठै गयौ
मिनख-मिनख बेघर हौ घर कठै गयौ
मिनख-मिनख निरधन हौ धन कठै गयौ

मिनख-मिनख हाळी हौ खेत कठै गयौ
मिनख-मिनख मजूर हौ मैणत कठै गयी
मिनख-मिनख चुप हौ सबद कठै गयौ
मिनख-मिनख बेहाल हौ सुख कठै गयौ

बच्चौ-बच्चौ बिलखतौ हौ दूध कठै गयौ
बच्चौ-बच्चौ उदास हौ गुब्बारौ कठै गयौ
बस्ती-बस्ती अंधारौ हौ उजास कठै गयौ
बाग-बाग सूनौ हौ फूल कठै गयौ
सिगड़ी-सिगड़ी ठंडी ही अंगार कठै गयौ
लुगाई-लुगाई नागी है वस्तर कठै गयौ

किताबां कठै गई कागद कठै गयौ
चितराम कठै गया संगीत कठै गयौ
खुसी कठै गई निरत कठै गयौ
कठै गयौ कठै गयौ
कठै गयौ कठै गयौ
सवाल दर सवाल जबाब कठै गयौ ?
❑❑

आठ

खितिज रै आकास पर उगै है अेक उग्रतारौ
ज्वाळा रौ सबद बोलतां खुलियौ पत्थर रौ होठ
पवनां जंगळ में मिरतु री घंटियां बजावै है
चिणगारियां उडै है
नागा रूंखां री खुरदरी, कत्थई हथेळियां सूं उपजती।
गूंजै है बरफ सूं ढकी पगध्वनियां
पहाड़ी रस्तां अर पगडांडियां माथै
सिलावां रै गरभ सूं जलम ले रैया है
नुंवा झरणा अर नदियां!

करोड़ां हाथ अर करोड़ां पग
ऊभा है
अेक बार फेर तणनै अर ऊठनै

मुगत
करोड़ां हाथां अर करोड़ां पगां री तरै!

मुगती रै जोधा रौ जहाज आवै है

लैरां नै चीरती
चीरती कुहांसै अर अंधारै नै
बध रैयी है उणरी भुजावां
सुडौळ, आकुळ, उल्लासी!
उणरी गति, उणरै वेग नै सुणौ
लैरां री उत्तेजना नै सुणौ
धमनियां में रगत रै प्रवाह नै सुणौ
रगत प्रवाह में इस्पात री गूंज सुणौ!
सुणौ वां घंटियां नै
जिकी सुनैरी जुंआं री मौत री घोसणा है!
●●

विस्फोटित व्है रैयौ है काळै परबत रौ सीस
अंधारै रौ दैत डरपनै दहाड़ै है
उणरा अजेय, क्रूर अर बळवान घोड़ा
पाताळी सांयत में मेख ठोकता
आपरी नाळ जड़ी टापां सूं रूंदता सरणाटौ
ऊंचा सिखरां कानी बधै है

लगातार बधै है, बधै है उण ऊंचाई कानी
जठै वांरी मजबूत जांघां
माछली-सी चंचळ मांसपेसियां अर उणमाद
वांरी आंख्यां में मिरतु-पटल लटकाय देवै

वै इण कुबेर तंत्र रा
सै सूं बळवान अर सजीला जिनावर है
अठै वै सै सूं बडी ऊंचाई माथै पूग रैया है

सै सूं बडी ऊंचाई
जिकी सै सूं बडी खाई व्है!

अबै वै अेक क्रूर उछाळ भरैला
उणमाद अर अभिमान सूं भरी
नदी फलांग उछाळ!
पण नदी लांघणै री कोसिस में
वै कदैई जींवता बच्या व्है अैड़ौ कठैई
इतिहास में नीं मिळै!
कमर तूटतां ई सगळौ वातावरण
वांरी दम तोड़ती चीखां सूं भरीज जावैला
अर उठै तूटी तलवारां बिचाळै
पड़ैला वांरी ल्हास!
कीं बगत पछै इज सुणीजैला
हत्यारां सैनिकां री गोळी री आखरी आवाज
जिकी वै आपरी इज कनपटी पर दाग्या करै!

बस कीं बगत पछै
उडता निजर आवैला
लोह रा चींथरा हवा में
वांरा लोह बंकरां रा अस्थी-पिंजर!

अर चौरायां माथै झूलता निजर आवैला सरीर
सुनैरी जुंआं रा!
लंबी गरदन अर लुंज-पुंज हाथ
वांरा रगत भर्‌यां हत्यारा हाथ
झूल जावैला असहाय!

इतिहास री वा इज जाणी-पिछाणी तस्वीर!
❑❑

नऊ

सिलावां माथै मुक्का बरसावै है
समंदर री भाठा तोड़, लंबी कठोर बावां
लैरां
चमकीला, कत्थई समंदरी घोड़ां माथै सवार
बोलै धावौ गुफावां में
पत्थर रा मजबूत दरवाजां माथै!

अेक पछै अेक खुलती जावै
गुफावां अर खंदकां!

गोळ-गोळ घूमतौ भंवर
समंदर री देवी रौ घर है
के घट्टी है
करोड़ां बरस जूनी लुगाई री
लूण पीसती थकी
लगातार-लगातार!

उठै अेक भळै लंबी सुरंग नै पार करतौ थकौ
आगै औरूं आगै बध जावै जहाज
उण मुगती रै जोधा रौ!
●●

उणरै फगत अेक पग में जूतौ रैयग्यौ है
तार-तार व्हेगी है उणरी कमीज
बावां अर कांधा
ठौड़-ठौड़ सूं छुलग्या है!
उणरा सरीर सूं रस्तां अर परसेवै री गंध आवै
जाणतां ई जलम अर हक रौ रहस्य
नदी-नाळां नै लांघतौ
भाखरां अर जंगळां नै पार करतौ
साथै व्हेगौ वौ
आपरै हक री लड़ाई में!

उणरौ ऊठ्योड़ौ लीलाड़ अर चैरौ
आतम-बिस्वास सूं खिल्योड़ौ है
तावड़ै रै ऊजळै पुसप ज्यूं

प्यार अर निस्चै सूं भरी आंख्यां सूं
फेंकतौ नीली रोसणियां वौ बध रैयो है।

बध रैयौ है
उणमाद सूं लबालब समंदर नै साथै लियां

आभै सूं आंख्यां मिलावतौ
संगीतमयी ओजस्वी आवाज में
जगावतौ, पुकारतौ लोगां नै
वौ लगौलग बध रैयौ है

हवा अर माटी रै कण-कण माथै लिखतौ
आजादी रौ गीत!

आवौ अर गावौ म्हारै साथै
म्हैं थां सगळां साथै गावण नै आयौ हूं
थांरौ म्हारौ आपां सगळां रौ गीत!

ऊठौ जागौ
सईकां सूं सोसित मनुज री संतानां
कुचल्योड़ी आंगळियां वाळा
भाखर काटता, कांकरी कूटता आदिवासियां
कपास घरां में खून थूकता जुलायां, पिंजारां
काळा हीरां री सुरंगां में दफन हुयोड़ी आतमावां
अबरक खान में लोही बाळता पुस्ट कांधां, मजबूत सरीरां
जल्लाद जमीदारां रा कोड़ां सूं पिस्योड़ा, तूटोड़ा किसानां
कारखानां में फेंफड़ा गमावता मजूरां
खेत मजूरां, लुहारां, खातियां, हमालां
गोंड, भील अर संथालां
डाकियां, करमचारियां, कामगारां
आवौ अर गावौ म्हारै साथै
आपरी गैंती, कुदाळ, बरछौ, हंसियौ अर हथोड़ौ उंचायां।

पत्थर माथै धार देय'र उठावौ आपरी कुल्हाड़ी
अर आजादी री आग सिळगावौ
लकड़हारां!
दुनिया रौ मैल धोवता धोबियां
मैलौ उंचावता अर कचरौ बुहारता मैतरां
हड्डियां रौ ढांचौ बण चुकी
दधीचि री संतानां!

जागौ!
अंधारी कोटड़ियां सूं मुगत करौ
आपरी आतमा अर आपरी आंख्यां!

थांरै रगत रौ खारास
थांरी रगां में समंदर री मौजूदगी है
बगत री अतळ गैरायां मांय
पत्थरां में दफन व्हेग्यौ हौ जिकौ गीत
जिकौ गमग्यौ हौ
बूढा रूंखां री ओळूं री सुरंग में
म्हैं उणरौ अेक-अेक सबद
अेक-अेक ओळी
सोधनै लायौ हूं
थांरै सारू
आवौ अर गावौ
अेक बार फेरूं स्वतंत्रता रौ गीत।
●●

स्वतंत्र व्हेणौ है, व्हेणौ है
आपां नै, आपां सगळां नै
चिड़कलियां ज्यूं स्वतंत्र व्हेणौ है
जीवणौ है, जीवणौ है
आपां नै, आपां सगळां नै
रूंखां ज्यूं जीवणौ है
गरब सूं सीस उंचायां
तावड़ा, पाणी, हवा अर माटी साथै
ल्हैलावता थकां, झूमता गावता थकां
म्हां दुनिया नै फूलां अर फळां सूं लाद देवांला!

सुगंधां सूं भर देवांला पवन रौ पेट
बादळां ज्यूं उमड़ांला
अर आपरै सनेव सूं भिजोय देवांला धरणी नै
रितुवां ज्यूं छावांला
अर रंग-बिरंगी कर देवांला
दसूं दिसावां नै!

सूरज ज्यूं निकळांला
चीरता सगळी रातां नै!

म्हां जुगनुआं रा बिरछ
म्हां धरती री कवितावां
म्हां करोड़ूं दाणां वाळी गेऊं रा बाळियां
भूख सबद मिटाय देवांला भासा सूं!
आसा म्हां कालै रै मिनख री
म्हां पइड़ा बगत री रफ्तार रा
कारखानां री आभै अड़ती चिमनियां
फूठरी-फूठरी चीजां सूं भर देवांला
हरेक घर रौ आंगणौ!
दरवाजै हाथी झूलैला
पड़दां में रुणझुणावैला चांदी री घंटियां
दूधांमुंडाळी आंगळियां रमैला आंगणै
सतरंगी कंचिया!

मैणत री पवित्र थकान अर रात रा गीत व्हैला
व्हैला म्हांणी दुनियां में व्हैला
विचारां रै जोत-कमलां सूं भरया सरोवर
संवेदना रा परिलोक
परीलोक रा बादळ-म्हैल
बादळ-म्हैल प्रेम गीतां सूं भरया!

कविता जिसी जीवंत अर संगीत जिसी आणंदमयी
ग्रंथां जिसी ग्यान सूं भरी-पूरी दुनिया
अेक दुनिया बणावांला म्हां
नारंगी जिसी गोळ अर सुनैरी
इण दुनिया नै
सजावांला म्हे!

●●

गावतौ, लगातार गावतौ
पवनां, रूंखां, चिड़ियां अर
लाख-लाख लोगां सूं बतियावतौ

बधतौ आवै है
बधतौ आवै है
वौ मुगती रौ जोधा।
❑❑

दस

वौ मुगती रौ जोधा मुगती रौ दरसण
नित नुंवौ चिरंजीवी व्हेतौ
मुगती रौ विचार!

अेक रोसणी रौ हाथ
काटतौ थकौ अंधारा नै
चमकतौ बार-बार!

आकास सूं नीं उतर्‌यौ, नीं निकळ्यौ
फाड़नै हवा रौ पेट
वौ कोनी सूरज री मनगढ़ंत संतान!

खेत-खेत जायनै पोटली भर धान में
फसल काटता मजूरां री टोळी में ही
उणरी मावड़ी
अेक सूनमून दोफार जिण
खेत में जणियौ हौ उणनै
चिमनियां सूं निकळतै
काळै धुंअै री धुंधळक में
पळियौ अर बधियौ हौ वौ!

बारंबार तोड़ीजती झुग्गियां सूं बेदखल
बेदखल कियौ बाढ़ उणनै बार-बार
अकाळ धकेलियौ गांवां सूं
नगरां तांई केई-केई बार!
कोपरिया तोड़तां, काटतां भाखर
पत्थरां रा दिमागां नै बांचतां
जाण्यौ उण स्रिस्टी रौ कायांतरण
रूपांतरण बांदरां सूं मिनख तांई रौ

वरण री आजादी रौ अरथ
पंछियां सूं पढियौ

हथोड़ां सूं वार करणौ
पइड़ां सूं रफ्तार
रूंखां सूं बगत
दीठ जीवण सूं लेयनै बधियौ

बगत नै सरुआत सूं भविस में बांचतौ थकौ
वौ अेक पगांजायौ है
सीरसासण लगावता चिंतनां नै
सीधा खड़ा करतौ थकौ।

वौ अेक गणितग्य अंक-अंक हल करतौ
गणित मैणत अर धन रौ
आत्मा में उतारतौ माटी रै कण-कण नै
अरथ नै पान-पान खोलतौ
हवा अर तावड़ै में
वौ अेक कद्दावर रूंख!

वौ अेक सबद
म्हाणै बगत रौ समाज रौ
आपरी संपूरण आवाज में ध्वनित व्हेतौ साचौ सबद!

नीं व्हैला, नीं व्हैला, कीं नीं व्हैला
नीं तूटैला भींतां भूरा भाठां रै कारागार री
लोह री नसां, जंजीरां रा जाळ
अजगर री देही रौ फंदौ
नीं तूटैला!
सुनैरी जुंआं रै संहार बिना
नीं व्हैला इण निरंतर गुलामी री मौत!
रूं-रूं में रम्योड़ी हिंसा
बूंटां नै रूंख नीं होवण देवै
भट्टियां में गळै है लोह

बळै है लोही
हाडका बळै है।

कटै है फसल रै साथौसाथ
हाथां-पगां री आंगळियां!
वां सरीरां री पीड़ नै
पीड़ री टीस नै
जाणै है वौ

उण मानचित्रां जिसी धारीदार
आपरा बाप रै मौरां माथै
सुनैरी जुंआं रौ दाग देख्यौ है

सुण्यौ है रात रा चमकनै जागती
मां गैरी नींद में
रोया करै मिन्नियां री गळाई!
किण अपसुगन री सूचना है आ?
किसौ भयानक सपनौ
जिकौ इण गत घोदै है, डरावै है
अर रुदन में बदळै रोजीना रात रा?
वौ जाणै है
जाणै कैवै बार-बार
अेकलै नै फगत गुलामी मिळै
मुगती सगळां रै साथै है।
❑❑

इग्यारै

ओस ज्यूं पड़ै हरेक रात री आतमा
अर तेजाब सूं झीर-झीर व्ही तावड़ै री आंगळियां
पतंगां रा जाळीदार पंख जिसी
उदई खायोड़ा कागदां जिसी
पीपळ री झरयोड़ी सूखी हथेळियां जिसी
मसाण री राख में चुगै है
तारीखां री हाडकियां!

रात-दिन तड़बड़ीजै है
सिक्कां अर सबदां रौ दळदळ

घट्टी पवन चक्की में बदळीजै
बळद घरघरावता थका ट्रैक्टर रा चक्कां में
घोड़ा जीपां में
लोह रा कागलां में
अर कोइड़ा बन्दूकां में
चालाक लोमड़ियां में बदळीज जावै सिंघ रा माथा!

संबंध बदळै है
बदळै है कीमत
घर री आंख्यां आदमी री जेबां टंटोळै
पड़दौ बदळै है
आंख बदळै है
रगत उतरी लाल आंख
लीली रेडियमी चालाकी में!
टिमटिमावती रोसणियां रौ जाळ चीरती
निकळै है आभौ फाड़
अेक धोळी इमारत
हाकां में डूबोड़ी!
फोन घणघणावै
खड़खड़ावै टेलिप्रिंटर
कूका करै चिरळावै है
हीरा री अंगूठियां पैरयोड़ी आंगळियां

खुल्लौ। बंद। चौकौ। नौकौ। उछळ्यौ। पड़्यौ। सोनौ।
मंदी। चांदी। तिलन। स्टाप। तेज। उठी। पड़ी। स्टाप।
अल्जीरिया। काटन। जूट। काटन। हलो। न्यूयार्क। काटन।
चार। तीन। डालर। गोरो। काळौ। मिंडी। रिपियौ। येन। केन।
प्रकारेण। सी.आई.अे.। सी.आई.अे.। अमरीका। गन। जूतौ।
कमीज। टाबर। कवितावां। चिली। मौत। मौत। टेलिस्कोप।
गन। प्रेसिडेंट। स्टाप। प्रेसिडेंट। स्टाप। हत्या।
सट्टौ। तस्कर। हीरौ। कोयलौ। चसनाला। हलो। हलो।
वाटरगेट। दुबई। लोह। प्रधानमंत्री। बांगला देश। सेंसर।

मुद्रास्फीती। स्टाप। बाढ। स्टाप। अकाल। स्टाप। चेचक।
स्टाप। मलेरिया। तेल।
तेल। तेल री धार। स्वेज। आपातकाल। हड़ताल। लेबनान।
कांड। हलो। पाकिस्तान। हलो। जुद्ध। जुद्ध। इजराइल। कुंभ
कास्मीर। न्यायालय। अखबार। विस्फोट। फिलीस्तीन।
हवाई जहाज। क्रिकेट। फिल्मां। ब्लू फिल्मां। स्टाप। कांड।
चिन्दा। टाटपट्टी।
स्टाप। भारत। स्टाप। कोरिया। स्टाप। संविधान। बैस। हलो।
हलो। पुलिस। मिलिट्री। भुखमरी। हलो। भुखमरी। भुखमरी।
स्टाप। नोबल प्राइज। हलो। भूख। भूख। स्टाप। भूख। स्टाप।
यू.अेन.ओ.। स्टाप। यू.अेन.ओ.। स्टाप। जुद्ध। जुद्ध। स्टाप। जुद्ध।
●●

रोहू ज्यूं उछळती-पड़ती अेक काळी लकीर
पगोथिया चढै काळौ लबादौ पैर्‌यां अेक पादरी
अेक काळौ सांप चढै ऊंचै जावतै ग्राफ माथै।

जेळर आंकड़ा पर टिकावै
आपरौ काळौ डंडौ
अर लंबी नीली वेन आपरै जाळीदार मुंडै सूं
उगळै अपराधियां री भीड़
रस्सी सूं बंधिया। बेड़ियां अर हथकड़ियां पैर्‌यां
नैना हाथ, सूखा चैरा
माटी में भरीजी, साड़ियां में लिपटी पोटलियां!

दरज करै अेक खाकी रजिस्टर
बसां में जेब काटतां। रोटी चुरावतां। ताळा तोड़तां
पकड़ीज्यौ, पकड़ीज्यौ, पकड़ीज्यौ रंग्यै हाथां
झूंपड़ी में धंधौ करतां। होटल रै कमरै सूं। बिना लाइसेंस
पकड़ीजी, पकड़ीजी, पकड़ीजी रंग्यै हाथां

वारदा वारदात
दंगौ फसाद
सीखचां रै लारै सूं ऊठै है हाकौ
रात-दिन दिन-रात
बधै है आमदनी राजस्व में तादाद

दारूखाना, बार, जुआघर, वेस्यालय पंजीक्रत
आंकड़ा भेळा करै समाज-सास्तर रौ छात्र
पंजीक्रत वेस्यावां
अेक महानगर में पचास हजार
बीमार महाजनी कारोबार!

भूख रौ अेक बडौ दरवाजौ खुलै
नुंवी लुगायां सूं भरीज जावै
मांस रौ गरम बजार!

कबर सूं हाडकियां चोरी व्है
काळ आपरै जूतै री नोक गडावै पेट में। आंत में
मिदनापुर बजार में
बोली लगावै लुगाई आपरा टाबरां री। टाबर
अेक मरचोड़ा कुत्ता री ल्हास माथै झपटै। तेल
सूं अपंग होवै है बस्तियां। अर जंगळी घास
संतानां रा बाळ मुंडवावै। गावै रसूलन बाई
बाजै है सितार। कतार दर कतार
कालेज पैदा करै बेरुजगार
ठेकेदार मजूर री जवान पत्नी नै अडाणै राखै!

गूंजै झींगरां री अेकण सागै भेळी आवाज
माखियां सगळा मूंडौ देखण रा काच माथै आपरा गंदा पगां रा
दाग छोड जावै। भिणभिणावै।
अेक काळै उजास में चालै
डरावणौ नाटक आठूं पौर
जलम लेवै है स्हैर
अेकण सागै ऊंची इमारतां अर झूंपड़ियां में
रातूंरात नदियां कादै में अर
खेत रेगिस्तान में बदळ जावै
कीं बंगलां रा हत्थां में ऊभा लीला दरखतां रै सिवाय
तावड़ै रै उकळलै कढाव में न्हाकीजै सगळी छींया
अचाणचक
मीलां तांई रूंखां सूं खाली करीजै
जमीं!

महामारियां आपरा भयानक जबाड़ा खोल्यां
पग धरै है
पढै है
गरुड़ पुराण!!
❑❑

बारै

जगरै सूं उचटै राती-राती तिणगां
सांझी सूं जागै जया जेता
जागै है आदम-कद ग्रीक मूरतां
अजंता री आंख्यां
गुफा रै अंधारै में
गेरू सूं लिखी चित्र-लिपियां सूं
जागै है अधनागौ गुफावासी करै सवाल
साच री जबान माथै सिलगै है सवाल
स्याही रा पग-मंडणां नै ताकती
रुक जावै निब री आंख अकस्मात
ऊठै सवाल सारू आतुर

नफरत अर नफरत रै अलावा
कांई कैयौ जा सकै वांरै सूं
जिका चिड़ियां नै मनबिलमावण अर तोतां नै
बेमतलब बातां करण सारू
आपरा पींजरां में बंद कर लिया है?

जिका चुरायनै लेयग्या है जिंदगानी री भासा सूं
प्रेम, चिड़िया अर चांदणी जिसा सबद?
चमकीला पानां री नागी कटार सूं
जिका साची पोथियां नै मार नाखी है

वै दिल बैलावण रौ काम लेवै कविता सूं
अर कैनवास माथै उभरती रंग-पीड़ावां सूं
लेवै है नैण सुख
वै संगीत नै संसार सूं काटनै
पंखौ झळता गुलाम ज्यूं

आपरै सिराणै बैठायां राखै है हरेक बगत!
वै म्हांनै म्हांणा गीत नीं गावण देवै
''वै म्हांनै आपरा गीत नीं गावण देवै रोबसन
वै चावै कै म्हां आपरा गीत नीं गा सकां
डरै है रोबसन
वै पौ फाटण सूं डरै है
म्हांणा गीतां सूं डरै है रोबसन''

जेळ री अंधारी तंग कोटड़ी सूं लिखै है नाजिम हिकमत
चिरळावै है गळियां अर सड़कां रौ गायक
'वै म्हांनै आपरा गीत नीं गावण देवै'
उमर री इक्कीसवीं मंजिल सूं पड़ जावै सुकांत
अंधारै तिलिस्म सूं चिरळावै ओरांग उटांग
चटकनै तूटै है दिमाग री नसां
अंधारै भंवर में डूबै
मास्टर मदन री आवाज

वै म्हांनै आपरा गीत नीं गावण देवै
वै म्हांनै आपरा गीत नीं गावण देवै

खोसनै लेय जावै वै
म्हांणी किताबां, म्हांणी कवितावां, म्हांणा गीत
म्हांणा गायक
गायक जनता रै गीतां रा
गायक बादळ राग रा, सगती पूजा रा
गायक धरती री कवितावां रा, नुंवी जातरावां रा
गायक चाय बागानां रा, परबतां रा, मीत रै नांव पाती रा
गायक रगत डूबा स्वर रा, छिप्योड़ा सुनैरी आखरां रा
बांकै मुंडै वाळै चांद रा।
खोसनै लेय जावै वै
वै खोसनै लेय जावै म्हांणा फूल
अर सड़कां माथै बैवावै टाबरां रौ रगत.....
●●

बतावौ-बतावौ साबरमती रै संत री सूक्तियां
वैदिक रिचावां, लाल गुलाबां

बतावौ–बतावौ बुद्ध रा अस्थी कळसां
सांयती रा कबूतरां
धोळा पिरामिडां

प्यानो री धुनां में लटकती सूळियां
बतावौ–बतावौ
रूं–रूं में बस्योड़ी इण हिंसा रौ इलाज कांई है ?
आखी दुनिया री रगां में ठंडै ज्हैर ज्यूं
उतारीज रैया इण ज्हैर रौ इलाज कांई है

कांई इलाज है मिनख नै मिनख सूं
अेक दरजौ कम करण वाळी
इण साजिस रौ ?

इण अरथ–सास्तर रौ
जिकौ निकम्मां री अंटी में पइसौ
अर मैणतियै री जेब में भूख न्हाकै है ?
जिकौ चालाकी री वत्ती
अर पसीनै री कीमत कम आंकै है ?
जिकौ नपीणै ज्यूं लपकनै ऊभौ व्है जावै
बजार सूं निसरतै मिनख रै पाखती
अर जेब रौ भार तोलतौ थकौ बतावै
आपरी औकात री ऊंचाई कांई है
हैसियत सूं तै करै
झूठ कांई है, साच कांई है ?

जंग लागोड़ै अंधारै नै खोलण वाळी चाबियां कठै हौ ?
गुलाब रा जंगळां कांनी जावण वाळी पगडांडियां कठै हौ ?
अगनी रा पिता पत्थरां कठै हौ ?
कठै हौ औसधियां, जड़ी–बूंटियां
नासूर है चीरौ लगावणिया चक्कुवां कठै हौ ?
●●

सवाल सिलग रैयौ है
सवाल सिलग रैयौ है

पलास रै फूल में, आखर रै कंठ में, धूड़ में
कुम्हार रा आवा में, करसै रा जगरा में
स्हैर में गांव में
हरेक जबान सूं ऊठै है सवाल
हरेक आंगळी हरेक आंख मांय
सिलगै है सवाल.....
पथराई आग री मसाल उंचायां
चिरळावै स्वतंत्रता री धोळी मूरत

परबत री चोटी माथै
जंजीरां सूं जकड़ीज्योड़ौ प्रमथ्यूस
चिरळावै
समंदर री बेटी म्हनै अेक बेटौ दै
जिकौ काट सकै म्हारी बेड़ियां
अर आग नै लेजाय सकै
मिनख तांई

हरेक चीसळी अर सवाल रै जबाब में
लेयनै उठै है
आग अर उजास रौ घोसणा-पत्र

वौ मुगती रौ जोधा
वौ मुगती रौ विचार
कैवै है बार-बार

तोड़ देवौ
तोड़ देवौ गुलामी री जंजीरां
तोड़ देवौ दरवाजौ अंधारै री कारा रौ
मोड़ देवौ रुख बगत री धारा रौ
रोसणी में बदळतौ पाणी
अर फौलाद री नसां माथै ऊठती दुनिया
बगत है सरवहारा रौ।

❑❑

(8 फरवरी 76)

● *समाचार/रपट*

गौरीशंकर निमिवाल

प्रदेस स्तरीय राजस्थानी छात्र युवा पंचायत अर महारैली संपन्न

मायड़ भासा राजस्थानी छात्र मोरचा, राजस्थान रै आह्वान माथै प्रदेस स्तरीय छात्र युवा पंचायत अर रैली 7 सितंबर, 2013 नै जोधपुर में संपन्न व्ही। राजस्थानी भासा री संवैधानिक मानता, स्कूलां मांय खाली पड़्या राजस्थानी स्कूल व्याख्याता रा पद भरणै, राजस्थानी भासा विकास बोर्ड रै गठण अर राजस्थानी भासा विश्वविद्यालय रै गठण, स्लेट मांय राजस्थानी विसय जोड़णै सेती 14 सूत्रीय मांगपत्र नै लैयनै आखै प्रदेस सूं छात्र मोरचै रा कार्यकर्ता, भासा हेताळू, युवा बुजुर्ग इण रैली मांय सामल व्हिया।

सुबै-सुबै ईज रैली सारू छात्र मोरचै रा कार्यकर्ता सूरतगढ, गंगानगर, टिब्बी, नोहर, हनुमानगढ़, बिसाऊ, नागौर, मेड़ता, बालोतरा, बाड़मेर, जालौर, मथानिया, भोपालगढ़, जयपुर, बीकानेर, मंडोर, बालसमंद सूं आपरा निजू वाहनां सूं जोधपुर रै राजीव गाँधी चौक, नई सड़क भेळा होवणा सरू व्हेगा। रैली नै लेयनै युवावां रौ जोस देखणजोग हौ। मंडोर क्षेत्र अर मथानिया रा कार्यकर्ता नई सड़क तांई 150 सूं भी बेसी वाहन रैली लेय'र पूग्या।

छात्र मोरचै रा जोधपुर जिला महामंत्री जितेन्द्र सिंह साठिका रैली मांय आयोड़ा छात्र-युवा, भासा हेताळुआं, सामाजिक, राजनीतिक अर व्यापारिक संगठणां रै पदाधिकारियां रौ मोरचै री जोधपुर इकाई कांनी सूं सुवागत आपरै सुवागत भासण सूं करयौ। वै बतायौ के रैली री त्यारी सारू जोधपुर रै केई मोहल्लां अर स्कूलां मांय 40 सूं बेसी सभावां, जोधपुर इकाई करी है अर लारला पंद्रह दिनां सूं प्रदेस रा केई जिलां मांय पोस्टर अर स्टीकर रै मारफत जन-जागरण अभियान चलाईज्यौ है। रैली रौ उद्घाटण करता थकां अखिल भारतीय राजस्थानी भासा मान्यता संघर्ष समिति रा प्रदेश महामंत्री राजेन्द्र बारहठ कैयौ के औ खाली राजस्थानी भासा री मान्यता रौ सवाल नीं है, औ राजस्थान रै युवा रै पेट सूं जुड़्योड़ौ मुद्दौ है अर जै सरकार अजै नीं चेती तौ राजस्थान रौ युवा आगला विधानसभा अर लोकसभा चुणाव मांय सरकार सूं हिसाब चूकतौ करैला।

उद्घाटण भासण मांय छात्र मोरचै रा प्रदेस अध्यक्ष डॉ. अशोक गहलोत कैयौ के आपां नै संगठित होयनै चुणावां मांय वोट री ताकत दिखाणी है। 'भासा नीं तौ वोट नीं' रौ नारौ आखै राजस्थान मांय चावौ करणौ है। उद्घाटण सभा मांय जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय रा पूर्व अध्यक्ष डॉ. गजेन्द्रसिंह राठौड़ कैयौ के आ आपां री आन-बान-शान अर अस्मिता रौ सवाल

है। वै मारवाड़ जागरण मंच रै मारफत आंदोलन नै तेज करणै रौ भरोसौ दिरायौ। जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय रा वर्तमान छात्रसंघ अध्यक्ष महेन्द्र जाखड़ कैयौ के सगळौ छात्रसंघ अर विश्वविद्यालय रौ हर विद्यार्थी राजस्थानी री मान्यता सारू अेकजुट है अर मोरचै रै हर कार्यक्रम मांय सक्रिय भूमिका निभावतौ रैवैला। संघर्ष समिति रा जिलाध्यक्ष रामसिंह राठौड़ युवा वरग सूं आंदोलन नै सड़क तांई लेजाणै री अपील सागै झंडी दिखायनै रैली रवाना करी। नई सड़क सूं आ रैली कलेक्ट्रेट तांई पैदल रैली रै रूप में गई। रैली रै मांय हाथ मांय पीळी झंडियां, तख्तियां, बैनर अर माथै पीळी पट्टी बांध्योड़ा छात्र कार्यकर्ता पूरै जोस सूं सामल व्हिया। रैली मांय सै सूं आगै छात्रावां अर महिलावां रौ जत्थौ हौ। रैली जद सड़कां माथै पूगी तौ डेढ़ किलोमीटर लांबी इण रैली नै देखण सारू सगळौ ट्रैफिक रुकग्यौ। आम लोग जगै-जगै रैली मांय जुड़ग्या। जोधाणौ 'पैली भासा-पछै वोट', 'जै राजस्थानी-जै राजस्थान' रै नारै सूं गूंजग्यौ। रैली कलेक्ट्रेट पूग'र सभा मांय बदळगी जिणनै संघर्ष समिति रा प्रदेस मंत्री मनोज स्वामी (सूरतगढ़), प्रदेस प्रचार मंत्री विनोद स्वामी (परलीका), मोट्यार परिषद रा सुनील राजपुरोहित, छात्र मोरचै रा संरक्षक डॉ. सुखदेव राव, चैनपुरा महाविद्यालय अध्यक्ष उमेश देवड़ा, अेस.अेफ.आई. री नेहा गौराणा, किशन खुडिवाल, महिपाल चारण, वरिष्ठ रंगकर्मी दलपत परिहार, पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष जयनारायण पूनिया, पूर्व संयुक्त महासचिव इन्द्राकुमारी, भावना सोलंकी आद संबोधित करयौ।

इणी बिचाळै मोरचै रा प्रदेस संयोजक गौरीशंकर निमिवाल री आगीवाणी मांय 15 सदस्यां रौ प्रतिनिधि मंडल कलक्टर रै मारफत मुख्यमंत्री अर केंद्रीय गृह राज्यमंत्री रै नाम ज्ञापन सूंप्यौ। समापन मांय मोरचै रा प्रदेस संजोयक डॉ. उम्मेदसिंह सेतरावा सगळा लोगां रौ आभार जतायौ। रैली रो संयोजन अर संचालन मोरचै रा प्रदेस महामंत्री गौतम अरोड़ा करयौ।

रैली सूं पैलां प्रदेस भर मांय सभावां व्ही। पोस्टर अभियान चलाईज्यौ अर जोधपुर मांय मोरचै रौ राज्य सम्मेलन आयोजित करीज्यौ। इण दबाव रौ नतीजौ भी सांम्ही आयौ जद आरपीअेससी रैली पछै स्लेट मांय राजस्थानी जोड़णै अर राज्य सरकार व्याख्यातावां रा 22 पदां सारू विज्ञप्ति जारी करी। इण भांत युवा-सगती री जीत व्ही। मोरचै रा प्रदेस अध्यक्ष डॉ. अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री राजस्थान श्री अशोक गहलोत, डॉ. हबीबखां गौराण (चेयरमैन आरपीअेससी) समेत आंदोलन नै सफल बणावण सारू मुकेश गोदारा (जयपुर), रामरतन लटियाल, जितेन्द्र मेघवाल (मेड़ता सिटी), सवाईसिंह चारण (बाड़मेर), राणीदान रावल (बालोतरा), सावित्री देवी स्वामी, तोलाराम स्वामी (सूरतगढ़), चंपालाल पटेल (जैतारण), दिनेश सैनी, रामपाल साहरण (भोपालगढ़), भैराराम भाद्राजून (जालौर), धर्माराम प्रजापत (नोखा), सुनील राजपुरोहित (ऋषभदेव), रणजीत डांगी, कमल डागा (मथानिया), सर्वेश चारण, इंद्रदान चारण, कप्तान बोरावड़, डॉ. भवानीसिंह पातावत, डॉ. रणजीत, प्रशांतसिंह राठौड़, जसवंतसिंह इन्दा, दलपत परिहार, संतोष राव, विजयसिंह पंवार, रामनिवास खेभादा, विनोद गहलोत, सुरेश प्रजापत, पवन सोलंकी, राजकुमार जोशी, नंदकिशोर गहलोत, जितेन्द्रसिंह कड़वासरा, खेमराज टाक, पप्पू सैन, सेवाराम देवड़ा, कविता चौहान, कुसुम गहलोत, हेमा अरोड़ा समेत सगळा मायड़ भासा हेताळुवां रौ आभार व्यक्त करयौ।

चौपासनी में मनाईजी डॉ. नारायणसिंह भाटी री जयंती

राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर अर राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासणी री भेळप में संस्थान रा संस्थापक निदेशक अर राजस्थानी रा ख्यातनांव कवि डॉ. नारायणसिंह भाटी रो 84वों जयंती जळसो 7 अगस्त नैं चौपासणी में मनाईज्यौ। जळसै रा खास वक्ता डॉ. आईदान सिंह भाटी कैयौ के डॉ. नारायणसिंह भाटी री कविता रोमांस सूं रगोबग है क्यूंकै डॉ. भाटी खुद अंग्रेजी रै रोमांटिसिज्म सूं प्रभावित हा। रोमांस जीवण री खास इधकाई है। उणनैं डॉ. भाटी आपरी कविता में परोटियौ। जळसै रा सिरै मिजमान जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर रा कुलपति प्रो. भंवरसिंह राजपुरोहित अर सिरै पांवणा पृथ्वीराज रतनू (बीकानेर) हा। चौपासणी शिक्षा समिति रा मानद सचिव प्रहलादसिंह राठौड़ अर डॉ. भवानीसिंह पातावत राजस्थानी शोध संस्थान री गतिविधियां री जाणकारी दीनी। इण मौकै लक्ष्मणदान कविया अर डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित काव्य पाठ प्रस्तुत कर डॉ. भाटी नैं काव्यांजळी अरपित करी। जळसै रौ बडेरचारौ चौपासणी शिक्षा समिति रा अध्यक्ष ठा. मानवेन्द्रसिंह रोहिट करयौ। प्राचार्य आर.डी. सिंह, पार्षद रामसिंह जोधा, दुर्गादाससिंह राजवी, डॉ. अर्जुनसिंह राठौड़, फतेहसिंह मालूंगा, गिरधर गोपाल सिंह भाटी, चन्द्रसिंह पातावत, लोकेन्द्रसिंह, भूपेन्द्रसिंह, परमवीरसिंह, अजयपालसिंह बरजांसर, डॉ. जगदीश जुगतावत ई आपरा विचार राख्या। संचालन 'अपरंच' रा संपादक गौतम अरोड़ा करयौ।

पद्मश्री कन्हैयालाल सेठिया री 95वीं जयंती मनाईजी

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर रै राजस्थानी विभाग कांनी सूं पद्मश्री कन्हैयालाल सेठिया री 95वीं जयंती समारोह साथै मनाईजी। समारोह री सरुआत शोधार्थी पुष्पा भाटी, लक्ष्मी भाटी री सरस्वती वंदना सूं व्ही। कार्यक्रम में पधारयोड़ा अतिथियां रौ सुवागत कार्यक्रम संयोजक डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित, डॉ. धनंजया अमरावत अर डॉ. मीनाक्षी बोराणा स्मृतिचिह्न देयनै करयौ। शोधार्थी हाकम अली कन्हैयालालजी रै व्यक्तित्व अर कर्तृत्व माथै पत्रवाचन करयौ। कार्यक्रम रा खास पांवणा प्रो. नरेन्द्र अवस्थी डीन, कला संकाय, आपरै उद्बोधन में भागवत पुराण रौ उदाहरण देवता थकां कवि कन्हैयालाल सेठिया रै रचनाधरम नै रेखांकित करयौ। सिरै पांवणा विश्वविद्यालय रा कुलपति भंवरसिंह राजपुरोहित कैयौ के कविता रै माध्यम सूं मिनख मांय मिनखपणौ बच सकै अर सेठियाजी मिनखपणो बचावण सारू ई कविता रचता रैया हा। समारोह रो बडेरचारौ करता थकां विभागाध्यक्ष डॉ. अर्जुनदेव चारण कैयौ के कवि कन्हैयालाल सेठिया री कवित्व दीठ राजस्थानी साहित्य मांय नुंवा प्रतिमान थापित करै। भासा ही मिनख री पिछांण है। शिक्षा रो उद्देश्य विवेक जाग्रत करणौ है। वां युवा वरग रौ आह्वान करयौ के राजस्थानी भासा री संवैधानिक मान्यता रौ संकल्प पूरौ व्है आ इज कन्हैयालालजी सेठिया नै साची श्रद्धांजलि हुवैला। इण मौकै विश्वविद्यालय रा न्यारा-न्यारा विभागां रा शिक्षक, पढेसरी, सोधार्थी मौजूद हा। समारोह रौ संचालन युवा कथाकार, संपादक, सोधार्थी दुलाराम साहरण करयौ। डॉ. मीनाक्षी बोराणा आगंतुकां रै प्रति आभार जतायौ।

●आपरा कागदां सूं

श्री बैजनाथ पंवार चूरू

अपरंच रौ अप्रेल-जून , 13 रौ अंक मिल्यौ। घणै कोड अर चाव सूं बांच्यौ। 'पंचामरत' सारू आपनै लखदाद अर पांचूं साहित्यकारां नै म्हारी सरधांजळी।

राजस्थानी आंदोलन री खबर मांय छात्र मोरचै कांनी सूं आयोजित ग्यान-गोठ मांय परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी रा उद्‌गार घणा दाय आया। आपरै मारफत मोरचै नै लखदाद अर आचार्यश्री नै निवण। राजस्थानी नै संवैधानिक मान्यता नीं मिलण सूं लगैटगै दस करोड़ राजस्थानियां री भासा गूंगी है, औ आपणौ घणौ लूंठौ अपमान है। आपणा केई साहित्यकार मान्यता री मन मांय लियां इज सुरगवासी व्हैगा।

म्हैं नब्बै बरसां मांय हूं, लकड़ी मुसाणां मांय पड़ी है, ठाह नीं कद 'राम नाम सत' हुय जावै। राजस्थानी री मान्यता री जे खबर सुण ल्यूं कै बांच ल्यूं तौ सांसां घणी सोरी नीसरै। जै राजस्थानी, आपनै फेरूं लखदाद।

श्री राजाराम भादू जयपुर

समानांतर द्वारा जयपुर में आयोजित लघु पत्रिका सम्मेलन (25 मई, 2013) के लिए भेजी गई 'अपरंच' की प्रतियों में से एक प्रति पढ़ने के लिए रख ली थी। वो अब पढ पाया हूं। मुझे पत्रिका का यह रुख अच्छा लगा कि आप राजस्थानी सृजन को आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में देख रहे हैं। यह एक जरूरी कार्यभार है। जैसा कि इस अंक के लेखों से पता लगता है कि आधुनिकता बोध से लेखन, सृजन की धारा एक बार शुरू होकर अवरुद्ध हो गई है। यह भी सही है कि इस अवरोध को तोड़ने का कोई गंभीर उपक्रम इधर नहीं किया गया। वैसे तो राजस्थान का हिंदी साहित्य भी ठीक से आधुनिकबोध में दीक्षित नहीं हुआ, राजस्थानी तो इसमें काफी पीछे है। यह एक विडंबना ही है कि भानु भारती एवं अर्जुनदेव चारण के नाटक जितने आधुनिक हैं वैसी साहित्य की अनन्य विधाएं नहीं है।

आधुनिकता कोई फैशन नहीं है, यह समय के चलते बदलाव है जिसने हमारे सोचने के तरीके और जीवन-शैली को बदला है; एक उदाहरण के जरिये बात करें तो चन्द्रप्रकाश देवल ने युद्ध और हिंसा को उत्प्रेरित करने वाली कविताओं के विरुद्ध शांति और अहिंसा को प्रेरित करने वाली कविताओं को अपने लेख में रेखांकित किया है। यह रचनाकार की अंतर्दृष्टि में परिवर्तन का द्योतक है। 'अपरंच' के पास ऐसी संपादकीय अंतर्दृष्टि है, आप यह ऐतिहासिक कार्य कर रहे हैं, बधाई।

श्री बी. एल. माली 'अशांत' जयपुर

प्रिय बंधु, अपरंच मिळ्यौ, संकलन आछौ। राजस्थानी री नुंवी कविता री सुरुआती दीठ शीर्षक नै बदळनै री जरूरत संपादन कर्म नै ही। औ आखौ आलेख राजस्थानी री आधुनिक कविता रै परंपरागत कविता रूप माथै है, नुंवी कविता माथै नी। 'आधुनिक कविता' अर 'नुंवी कविता' अलग-अलग शीर्षक है। 'नुंवी कविता' शीर्षक परंपरागत कविता माथै चेप्यौ नीं जा सकै। आधुनिक कविता में नुंवी कविता अर परंपरागत कविता दोनूं है। अै साहित्य रै इतिहास रा पख है। शीर्षक 'राजस्थानी री नुंवी कविता री सुरुआती दीठ' भरम भरयौ है, औ आपरै अर 'पीथळ' रै भीतर रैयो हुवैला। पण आपरौ कथन 'पैन स्टैंडर्ड' माथै, पैन स्टैंडर्ड नैं इंगित करवावण वाळै सबदां रै प्रयोग साथै होवणौ जरूरी है।

साहित्य रौ इतिहास मांय राब-राबड़ी भेळी नीं है, बात है। जिका नै पढ्यां बात बणै। कोरौ लेखन तौ कोरौ व्है। संपादन मांय आखी बात पर निजरां जरूरी है। इण वास्तै कहीजै- संपादन टाबरां रौ खेल नीं है। सबदां सूं सृजनात्मक खेल बात बीजी है।

डॉ. विनोद सोमानी 'हंस' अजमेर

अपरंच रौ जून, 13 रौ अंक मिळ्यौ। म्हैं ईं अंक नै अेक-दो बैठकां में ही पढग्यौ। संपादकीय घणौ आछौ लागौ। पंचामरत सारू घणी बधाई। औ प्रयास सोनै में सुहागौ है। नुंवा-जूनां नै अेक मंच माथै लावणौ अर रचनावां रै मारफत वांरौ परिचै करवावणौ घणौ लूंठौ काम आप कर रैया हौ। अेकल काव्यपाठ में चेतन स्वामी री रचनावां घणी धारदार। चैनसिंह परिहार री गजलां अर काव्य-गोष्ठी जोरदार। डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत, मनोज स्वामी री कहाणियां, पूजाश्री अर शिवचरण सेन 'शिवा' री रचनावां उल्लेखजोग।

अंक रै लारै आपरौ उछाव अर जूझारपणौ देख नै मन घणौ राजी है। आपनै अर सैयोगी बंधुवां नै बधाई।

श्री हरदान हर्ष जयपुर

'अपरंच' अेक साहित्यिक पत्रिका रौ सांतरौ रूप लेय रैयी है। विगत रौ पानौ इणरी साख भरै। संस्मरण, डायरी, आलोचना, आत्मकथा, जात्रा-वृत्तांत, साक्षात्कार अर समीक्षा आद नै भी इब-तिब लियां इणरौ रूप और बधसी। सुभकामनावां।

श्री मुकुट मणिराज कोटा

अपरंच राजस्थानी री अेक स्तरीय अर संग्रहणीय तिमाही है। आपका संकल्प वास्तै म्हारा जिस्या छोटा-सा रचनाकार खनै सबद कम पड़ता लाग र्‌या छै। आपका इण मेहताऊ काम नै आगै लेजाबा को बीड़ो उठायो भाई गौतमजी, बांकी हिम्मत नै भी लखदाद। आज इण भौतिकवादी जुग में छोटी साहित्यिक पत्रिका खाडबो डूंगर सूं बाथ्यां पड़वा जिस्यौ छै। आपनै बधाई।

श्री राजेश अरोड़ा श्रीगजसिंहपुर

अपरंच रौ अप्रेल-जून, 13 अंक मिळ्यौ। पंचामरत, राजस्थानी री नुंवी कविता री सरुआती दीठ (लेख), अेकल काव्यपाठ (चेतन स्वामी), कहाणी 'धरम री जड़', गजलां, काव्य-गोष्ठी, नारी रै संदर्भ में- 'काल, आज अर आपां', लघुकथा 'अप्रेल अर भूत-प्रेत', कवितावां अर मनोज स्वामी री कहाणी 'कागोळ' पढ'र आतमा तृप्त व्हैगी। चयनित सगळी सामग्री घणी सांतरी-सागीड़ी, सांगोपांग अर सरावणजोग है। लेखक, कवियां अर संपादक नै लखदाद।

ओमप्रकाश गर्ग 'मधुप' बाड़मेर

नवै रूप-सिणगार में बदळियौ-बदळियौ अपरंच मिळियौ, घणौ दाय आयौ। संपादकीय में आपरी आ बात खरी-खरी लागी के 'इण लेखक अर भासा आंदोलन नै बचावण अर बधावण री जिम्मेवारी राजस्थानी पत्र-पत्रिकावां री है।' आप इणमें पैल करी है, आ सरावणजोग बात है। लिखारां नै भी इण हकीकत सूं रूबरू होयनै आज री नुंवी पीढी सारू लेखन करणौ पड़सी। ताकि पढणिया इण भासा सूं जुड़ै, आपां रौ मिशन कामयाब व्है, इण आस सागै राम-राम।

डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत जोधपुर

'अपरंच' रौ अप्रेल-जून '13 रौ अंक मिळियौ, पूरै मनोयोग सूं पढियौ। संपादक जी री बात घणी मैताऊ अर मननजोग है। 'पंचामरत' मांय चावा-ठावा, टणका, मायड़ भासा रा साहित्यकारां रै जीवण-परिचै सागै वांरी कवितावां देय'र घणौ सांतरौ काम करयौ है। डॉ. नारायण सिंह 'पीथळ' रौ शोधपूरण आलेख 'राजस्थानी री नुंवी कविता री सरुआती दीठ' भी घणौ दाय आयौ। लेखक नै इत्तै सांगोपांग, सांतरौ आलेख लिखणै री आफळ सारू घणा-घणा रंग।

अंक री सगळी रचनावां- कविता, कहाणी, आलेख, लघुकथा, सै कीं सरावणजोग है। सांतरी, संपूरण अर टैमसर पत्रिका काढण सारू आपनै अर आपरी पूरी टीम नै बधाई।

'या बणजारी जूण' रौ लोकार्पण

राजस्थानी रा ऊरमावान लेखक जितेन्द्र निर्मोही रै राजस्थानी संस्मरण-संग्रै 'या बणजारी जूण' रौ लोकार्पण 18 नवंबर 2013 नै भारतीय वन सेवा रा अधिकारी राकेश शर्मा कोटा में करयौ। इण मौकै वां कैयौ कै आं संस्मरणां में गांधीजी रै 'सत्य के प्रयोग' जैड़ा खुला विचार है। खास पांवणा अरविंद सोरल कैयौ के जितेन्द्र निर्मोही रा संस्मरण मैक्सिम गोर्की रा संस्मरणां री याद दिरावै। अै आपरै छोटै सूं छोटै पात्र नै बडौ अर चरचित बणा देवै। संस्मरणकार री दीठ ऊंडी है। बडेरचारौ करता थकां कमला कमलेश कैयौ के निर्मोही री रचनावां मूंडै सूं बोल'र कैय देवै कै वै कित्ता बडा लिखारा है। समारोह में राधेश्याम मेहर, प्रो. डॉ. प्रेम जैन, विजय जोशी, लोकार्पित कृति रा लेखक जितेन्द्र निर्मोही, श्यामा शर्मा ई आपरा विचार राख्या। संचालन आनंद हजारी करयौ।